नि:शुल्क वितरण हेतु

वीणा

कक्षा 4 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

सत्र 2026-27

0431

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय सम्पत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ, चित्रांकन एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, राजेंद्र सिंह ठाकुर, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन, दक्षता विकास एवं 21वीं सदी के उन्नत कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक के रोचक विषयवस्तु से राज्य के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति एवं संदर्भों को समझने के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, वैश्विक नागरिक निर्माण एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित किए जाने हेतु स्वीकृति दी है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. के विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिए गए समुचित मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं।

हम 'छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति' को पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में उनके सक्रिय योगदान के लिए तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से जुड़े समस्त विद्वतजन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सर्वदा भविष्य के लिए बनी रहती हैं इसलिए पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं उपयोगिता के संबंध में राज्य के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं अन्य जनों से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुझाव राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ के लिए स्वागत योग्य होगा। हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य को शिक्षा के क्षेत्र में अग्र पंक्ति में स्थापित करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का प्रारंभिक स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए और उन्हें हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भूत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने तथा आधारभूत साक्षरता और गणितीय कौशल अर्जित करने का आधार प्रदान करता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण मध्य स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

प्रारंभिक स्तर, आधारभूत और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है। यह विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, अनिवार्य रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ जारी रहेंगी लेकिन इनके साथ-साथ इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से भी समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए उनमें सभी विषयों का आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा एवं पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 4 के लिए वर्तमान पाठ्यपुस्तक *वीणा* इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विकसित की गई है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अक्षरशः अनुपालन करते हुए, यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है जो इस स्तर की शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समेकन किया गया है। साथ ही विद्यालय-आधारित समग्र मूल्यांकन जैसे विषयों से संयोजित होने वाले बिंदुओं को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इन सबके साथ भरपूर रोचक विचारों और गतिविधियों से पूर्ण यह पुस्तक निश्चित रूप से बच्चों के लिए केवल रोचक ही नहीं होगी, अपितु उनकी ज्ञानवृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगी। बच्चे इसमें सम्मिलित सभी विचारों को आत्मसात करेंगे तथा इसमें सुझाई गई गतिविधियों को अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ मिलकर करेंगे। सहपाठियों के समूह में

सीखना न केवल रोचक होता है बल्कि यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे संबंधित अन्य गतिविधियाँ सीखने की प्रक्रिया को आनंदमयी और लाभप्रद बनाती हैं। इसलिए इस पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों से सीखकर, विद्यार्थी और शिक्षक दोनों, इस स्तर पर अपना अनुभव समृद्ध कर और भी बहुत-सी आनंददायक गतिविधियों को कर पाएँगे।

यहाँ यह महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पाठ्यपुस्तक का शिक्षणशास्त्रीय पक्ष समझ, मौलिकता, तर्कशक्ति और निर्णय लेने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस स्तर पर बच्चे सहज जिज्ञासु होते हैं और उनके मन में बहुत-से प्रश्न होते हैं। इसलिए सीखने के मूल सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों की रूपरेखा बनाते समय बच्चों की उत्सुकता को संबोधित करने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। यद्यपि आधारभूत स्तर से खेल आधारित सीखने की विधियाँ जारी रहेंगी, तथापि इस स्तर पर शिक्षण-अधिगम में सम्मिलित खिलौनों और खेलों की प्रकृति थोड़ी भिन्न होगी। अब यह खेल केवल आकर्षक होने के बजाय बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से अधिक जोड़ने में सहायक होंगे।

इसी प्रकार, इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, तथापि यह अपेक्षा भी है कि बच्चे इस विषय पर बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और उनसे सीखेंगे। अत: विद्यालयों में पुस्तकालयों को इस हेतु अद्यतन किए जाने की आवश्यकता है। साथ ही, यह भी अपेक्षित है कि माता-पिता तथा शिक्षक बच्चों की सीखने में और अधिक सहायता करेंगे।

सीखने हेतु प्रभावी वातावरण ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि बच्चे ध्यान, उत्साह एवं जुड़ाव के साथ सीखने के लिए प्रेरित हों। उनकी जिज्ञासा तथा सृजनशीलता को विकसित करने के लिए उन्हें निरंतर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इस विश्वास के साथ कि यह पुस्तक इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध होगी, मैं यह पुस्तक प्रारंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी सकारात्मक टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जो भावी संशोधनों में सहायक होंगी।

दिनेश प्रसाद सकलानी

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

मार्च 2025

पाठ्यपुस्तक के विषय में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 4 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *वीणा* आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* एवं *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है बल्कि बच्चों की जीवन-शैली सहित उनमें व्यवहारगत बदलाव का परिलक्षित होना भी है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। बच्चे भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें अपितु इसके सौंदर्यशास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है—

1. पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, नाटक, पहेली, चुटकुलों आदि से बच्चों का रुचिपूर्ण तरीके से परिचय करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे बच्चों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।
2. पाठों का क्रम सरल से जटिल एवं संश्लिष्ट की ओर बढ़ते हुए क्रम में व्यवस्थित किया गया है। साथ ही बदलती हुई ऋतुओं एवं पर्व-त्योहार के महीनों को भी ध्यान में रखते हुए पाठों को संयोजित किया गया है।

3. पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
4. यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।
5. विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे — समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं —

पाठ्यचर्या लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-2: परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे – गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-3: अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-4: विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द-भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-5: पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं। पुस्तकालय से पुस्तकें पढ़ने में रुचि प्रदर्शित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक, निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

पाठ्यक्रम में जिन विषयवस्तुओं का उल्लेख किया गया है, उन्हें पाठ्यपुस्तक के पाठों, चित्रों एवं अभ्यास-कार्यों में समंजित/एकीकृत करने का प्रयास किया गया है।

सांस्कृतिक वैविध्य और वैज्ञानिक प्रगति

पुस्तक का आरंभ 'ऐसा वर दो' प्रार्थना से किया गया है। इस संसार में जो वस्तुएँ हमें सहज ही प्राप्त हैं, प्रार्थना उनके प्रति विद्यार्थियों में कृतज्ञता का भाव पैदा करती है। यह भाव भारतीय परंपरा और संस्कृति के अनुकूल है तथा प्रासंगिक भी। इसके बाद 'चिड़िया का गीत' (कविता) और 'बगीचे का घोंघा' (कहानी) पाठों को लिया गया है। 'चिड़िया का गीत' कविता अपनी मधुरता और सरल भाषा द्वारा घर और बाहर के सांसारिक चित्रण को अंकित करती है तो वहीं 'बगीचे का घोंघा' कहानी संसार को कौतूहल की दृष्टि से देखने की उत्प्रेरणा देती है। 'नीम' कविता भारतीय परंपरा और संस्कृति में वृक्षों के महत्व के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति मित्रता के भाव को भी उद्घाटित करती है। इस कविता के अभ्यासों में नीम के साथ-साथ अन्य वृक्षों के महत्व के बारे में भी जानकारी दी गई है। 'भाँति-भाँति की पत्तियाँ' एक संक्षिप्त पाठ है जो विश्व की अनोखी पत्तियों से विद्यार्थियों का परिचय करवाएगा।

'हमारा आहार', 'गोलगप्पा', 'मिठाइयों का सम्मेलन' पाठ भारतीय खान-पान संबंधी व्यवहारों, विशेष व्यंजनों और पोषण से संबंधित हैं। बाजार में मिनटों में बनकर तैयार हो जाने वाले खाद्य-पदार्थों की भीड़ में स्वास्थ्य पीछे छूट जाता है। इसलिए स्वास्थ्य और स्वस्थ भोजन के बीच का संबंध महत्वपूर्ण है। 'हमारा आहार' कविता सरलता से इस विषय को प्रस्तुत करती है।

भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता और वैज्ञानिक प्रगति भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। पुस्तक में इस विशेषता को उद्घाटित करने के लिए विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। 'ओणम के रंग' (निबंध), 'जयपुर से पत्र' (पत्र), 'चेरापूँजी के मेहमान' (लघुकथा) और 'हमारा आदित्य' (विज्ञानकथा) जैसे पाठ विद्यार्थियों में भारतीय भौगोलिक परिवेश और अधुनातन वैज्ञानिक प्रगति को जानने व भारतीयता को आत्मसात करने में सहायक होंगे। सूर्य-नमस्कार से अपनी दिनचर्या प्रारंभ करने वाला देश अब उससे मिलने के लिए अंतरिक्ष में जा पहुँचा है। इस अद्भुत परिघटना से बच्चों को साक्षात्कार करने का अवसर 'हमारा आदित्य' पाठ से मिलेगा।

विद्यार्थी जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य नैसर्गिकता के साथ उपस्थित होता है। इसे समझते हुए 'आसमान गिरा' (कहानी), 'सुन, इमली के दाने सुन!', 'हवा और धूल' एवं 'कैमरा' जैसी कविताएँ बच्चों में जिज्ञासा बढ़ाने और उन्हें हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनेंगी। इसके अतिरिक्त 'नकली हीरे' (चित्रकथा) पाठ विद्यार्थियों में विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों को उत्प्रेरित करेगा।

पुस्तक में भारतीय ज्ञान परंपरा में विकसित कथा शैली के अनुपम उदाहरण उपस्थित हैं। 'कविता का कमाल' (लोककथा) और 'शतरंज में मात' (नाटक) पाठ इस ज्ञान परंपरा और कथा शैली से परिचय तो करवाएँगे ही, साथ ही विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अंतर को भी स्पष्ट करते हुए भाषा-प्रयोगों के विविध रूपों को बच्चों के समक्ष रखेंगे।

सारांशत: कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों को विविध परिस्थितियों में मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति, समझ के साथ पढ़ना-सुनना, तार्किकता, रचनात्मकता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, मानवीयता आदि कौशलों से समृद्ध करेगी। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में हमारी समृद्ध ज्ञान-परंपरा से लेकर अधुनातन वैज्ञानिक प्रगति तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लिखना

मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है। पाठ्यपुस्तक में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से अभ्यास कार्य निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिनमें हर बच्चा भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए 'चिड़िया का गीत' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है, "जब कोई अतिथि आपके घर आता है या आप किसी संबंधी के यहाँ जाते हैं तो आपको कैसा लगता है?" एक अन्य उदाहरण 'बगीचे का घोंघा' कहानी से है, "आप घूमने के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं और किसके साथ जाते हैं?" ऐसे प्रश्न सभी विद्यार्थियों को अपने-अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं। मातृभाषा एवं बहुभाषिकता की भावना को पोषित करने की दृष्टि से भी ये प्रश्न उपयुक्त हैं।

पाठों के अभ्यास में विद्यार्थियों के लिए छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये सरल हों। उदाहरण के लिए 'मिठाइयों का सम्मेलन' पाठ में यह प्रश्न दिया गया है, "स्वस्थ रहने के लिए आप क्या-क्या करते हैं? इससे संबंधित पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।" मौखिक से लिखित भाषा की ओर बच्चों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है। कक्षा 4 में लिखने और पढ़ने संबंधी गतिविधियों को विकसित करने पर विशेष बल प्रदान किया गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। विद्यार्थी अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ-न-कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनसे विद्यार्थी कल्पना की दुनिया में प्रविष्ट हों, साथ ही सही अथवा गलत उत्तर के दबाव से मुक्त

हों। उदाहरण के लिए 'कविता का कमाल' पाठ के अभ्यास में एक प्रश्न है कि "विजेता बनने के बाद मदन को मीडिया के प्रश्नों के उत्तर देने पड़े। अपने को मदन मानते हुए इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।" ऐसा ही प्रश्न 'हमारा आदित्य' पाठ में भी दिया गया है, "यहाँ पर आदित्य-एल 1 और सूर्य के बीच बातचीत हो रही है। आप इस बातचीत को आगे बढ़ाइए।"

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्ति में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए संबंधित गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए 'जयपुर से पत्र' पाठ के अभ्यास के एक प्रश्न में पूछा गया है कि "जंतर-मंतर क्या है? भारत में यह जयपुर के अतिरिक्त और कहाँ-कहाँ स्थित है?" इस प्रकार के प्रश्न बच्चों में खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाएँगे।

रचनात्मकता मन की बात करने और सृजन करने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में रचना और बच्चे के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु कई ऐसी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए पाठ्यपुस्तक में 'कागज की छतरी' और 'कागज की पुतलियाँ' बनाने जैसी रोचक गतिविधियाँ दी गई हैं। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मकता को उभारने का कार्य करेंगी। विद्यार्थियों का पुस्तक से जुड़ाव स्थापित करने में भी ये गतिविधियाँ सहायक सिद्ध होंगी।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि बच्चे इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली गतिविधियाँ दी गई हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक एवं संतुलित भागीदारी से समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में जेंडर संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। उदाहरण के लिए पुस्तक में 'मति की उड़ान' पाठ के अंतर्गत पहली भारतीय महिला पायलट की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन किया गया है।

बहुभाषिकता और अनुभवजन्य शिक्षण-अधिगम

बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है, खासकर छोटे बच्चों के लिए, जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिनमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है— कक्षा-शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा बहुभाषिक

शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए बच्चों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-कार्यों में बहुत सारी गतिविधियाँ, परिस्थितियाँ, परियोजना कार्य, शब्द एवं भाषा-खेल दिए गए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों के अनुभव-संसार को इन अभ्यास-कार्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जाएँ। शिक्षक विद्यार्थियों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराएँ कि वे खेल-खेल में इन गतिविधियों को स्वयं करते हुए भाषा-कौशलों का विकास करें। साथ ही पाठों को पढ़ते-पढ़ाते हुए अपेक्षित दक्षताओं, भाषा-कौशलों एवं सीखने के प्रतिफलों को अवश्य ध्यान में रखें।

पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्यसामग्रियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने-अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि उन्हें किस प्रकार की पाठ्यसामग्री और गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जाएँ। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

नीलकंठ कुमार
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
भाषा शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी. गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

चमन लाल गुप्त, *प्रोफ़ेसर* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश **(अध्यक्ष)**

अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटोर अध्यापक* (हिंदी), आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

कविता बिष्ट, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प. परिसर, नई दिल्ली

निशा जैन, *प्रवक्ता* (हिंदी), राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शकरपुर, दिल्ली

वंदना शर्मा, *सहायक प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* (हिंदी), आरोही आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग, कैथल, हरियाणा

शारदा कुमारी, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नई दिल्ली

सय्यद मतीन अहमद, *प्रोफ़ेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, तेलंगाना

साकेत बहुगुणा, *सहायक प्रोफ़ेसर*, केंद्रीय हिंदी संस्थान – दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

नीलकंठ कुमार, *सहायक प्रोफ़ेसर* (हिंदी), भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य समन्वयक)**

समीक्षक

मीरा भार्गव, *प्रोफ़ेसर एमेरिटस*, हॉफ्स्ट्रा विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

संयोजक: कौस्तभ चटर्जी, डॉ.डी.के.बोदले

संपादन सहयोग: दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक: नरेन्द्र कुमार जांगड़े

सहयोग: द्रोण साहू, पुष्पा शुक्ला, कन्हैया लाल साहू, कविता कोरी, भोला राम सिन्हा, डॉ. दिनदयाल यादव, खेमिन साहू

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)

(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)

द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति (एन.ओ.सी.) के अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति इस पाठ्यपुस्तक में एन.सी.एफ.–एस.ई. के परिप्रेक्ष्यों के समावेशन हेतु मार्गदर्शन एवं योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति उनके निरंतर मार्गदर्शन और पाठ्यपुस्तक की गहन समीक्षा के लिए आभारी है। परिषद्, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) के हिंदी उपसमूह तथा अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों का भी उनके अंतरानुशासनात्मक मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, अमरेंद्र प्रसाद बेहेरा, *प्रोफेसर* एवं *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; सुनीता फारक्या, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; इंद्राणी भादुड़ी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; मिली रॉय, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; ज्योत्स्ना तिवारी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही उनके पूरे समूह का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के निर्बाध एकीकरण और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों से उनके संबंध को सुनिश्चित करने के सूक्ष्म प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। परिषद्, रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए त्रिलोक सिंह ठकुरेला (ऐसा वर दो); निरंकार देव 'सेवक'(चिड़िया का गीत); मनोज पब्लिकेशंस (पहेलियाँ); एकलव्य प्रकाशन (बगीचे का घोंघा, पुस्तक – *छींका-छींक*); हरीश निगम (नीम); हरिनी नगेंद्र एवं सीमा मुंडोली, (भाँति-भाँति की पत्तियाँ, प्रथम प्रकाशन); लायक राम मानव (गोलगप्पा); मनीष बाजपेयी (मिठाइयों का सम्मेलन, *हिंदी बाल भारती*, चौथी, महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद्); नरेंद्र सिंह 'नीहार' (जलेबी); राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार (हमारा आहार, पुस्तक – *कोंपल*, भाग-2, कक्षा 4, हिंदी); के.के.सी. नायर (ओणम के रंग, पुस्तक – *उड़ान*, कक्षा 5, हिंदी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली);

मिताली अहीर (चेरापूँजी के मेहमान, इकतारा ट्रस्ट की पत्रिका *साइकिल – बच्चों की दुमहिया*, अगस्त-सितंबर 2019); रमेश तैलंग (सुन, इमली के दाने सुन!, पुस्तक – *लड्डू मोतीचूर के*); प्रकाश मनु (कैमरा, पुस्तक – *मेरी प्रिय बाल कविताएँ*); नीरा बेनेगल (नकली हीरे – चित्रकथा, *टिंकल* पत्रिका, अंक 95, 20 अप्रैल 1986, आई.बी.एच. पब्लिशर्स प्रा.लि.); रामबाबू माथुर (स्वच्छता कार्टून); राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़ (कविता का कमाल, कक्षा 3 की *समेकित पाठ्यपुस्तक इंग्लिश भारती*, भाग 1); श्याम सुशील (हवा और धूल); रत्न सागर प्रा.लि., दिल्ली (शतरंज में मात, पुस्तक – *फुलवारी हिंदी रीडर* 5); मञ्जुल भार्गव, नीलकंठ कुमार, ज्योति एवं रश्मि (हमारा आदित्य); द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (हम सब सुमन एक उपवन के) के प्रति आभारी है।

परिषद्, सुनीति सनवाल, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग तथा विविध कार्यशालाओं हेतु प्रशासनिक सहयोग के लिए सुशीला जरोदिया, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक* के प्रति आभारी है। साथ ही परिषद्, पी.सी. अग्रवाल, *प्रधानाचार्य*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के प्रति उनके सार्थक सहयोग तथा पंकज मिश्रा, *हिंदी शिक्षक*, बहुउद्‌देशीय प्रायोगिक विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा प्रदत्त स्थानीय अकादमिक एवं प्रशासनिक सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती है। पाठों के चयन एवं अकादमिक सहयोग हेतु परिषद् यास्मीन अशरफ़, *सहायक प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर; अंजना, *अनुवादक*, हिंदी प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प. और पूजा, *प्राथमिक अध्यापिका* के प्रति भी आभार व्यक्त करती है। मलयालम लोकगीत उपलब्ध कराने हेतु परिषद् शिवप्रसाद एम.आर. मलंपुषा (केरल) के प्रति अत्यंत आभारी है।

परिषद्, सुधा मिश्रा, *परामर्शदाता* एवं *साक्षरता विशेषज्ञ*, पी.एम.यू, राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, टीना कुमारी, *सहायक प्रोफेसर*, दिल्ली विश्वविद्यालय (मुक्त शिक्षा), मोनू सिंह गुर्जर, *सहायक प्रोफेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, ज्योति, *वरिष्ठ शोध सहायक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रश्मि रानी, *कनिष्ठ शोध सहायक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं संदीप कुमार, *प्रूफ रीडर* (हिंदी, संविदा) का इस पाठ्यपुस्तक में विशेष अकादमिक योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, विशेष रूप से अचिन जैन (ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि., नई दिल्ली) का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पाठ्यपुस्तक इस रूप में आ सकी है।

परिषद्, इस पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); अंजू शर्मा, *संपादन सहायक*; विभूति नारायण ओझा, *प्रूफ रीडर* (संविदा); तथा पवन कुमार बरियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, मनोज कुमार, शिवशंकर दुबे, संजू शर्मा, नरेश कुमार एवं बिट्टू कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

संभव है कि आभार व्यक्त करने में किसी व्यक्ति अथवा प्रकाशन का नाम सम्मिलित न हो पाया हो। भविष्य में सुधार के लिए हमें उनकी ओर से प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

कहाँ क्या है?

प्राक्कथन *iii*

आमुख *iv*

पाठ्यपुस्तक के विषय में *vi*

हिमालय 1

ऐसा वर दो 2

1\. चिड़िया का गीत 3

मति की उड़ान 17

2\. बगीचे का घोंघा 18

3\. नीम 28

भाँति-भाँति की पत्तियाँ 39

4. हमारा आहार 41

5. आसमान गिरा 52

चेरापूँजी के मेहमान 61

6. जयपुर से पत्र 63

गोलगप्पा 77

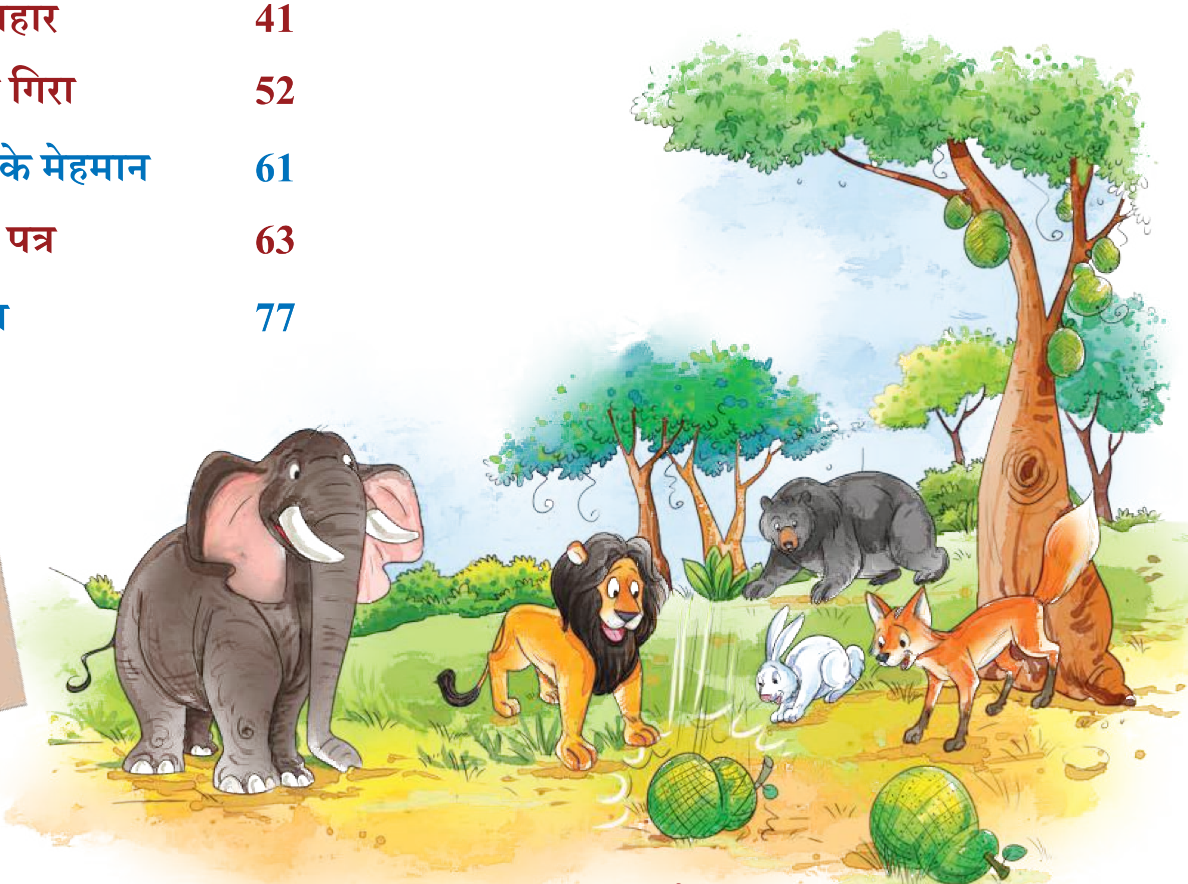

7. नकली हीरे 78

दोस्त हमारे 90

8. विश्व का अनूठा पर्व - बस्तर का दशहरा 91

ओणम के रंग 106

9. मिठाइयों का सम्मेलन 107

जलेबी 117

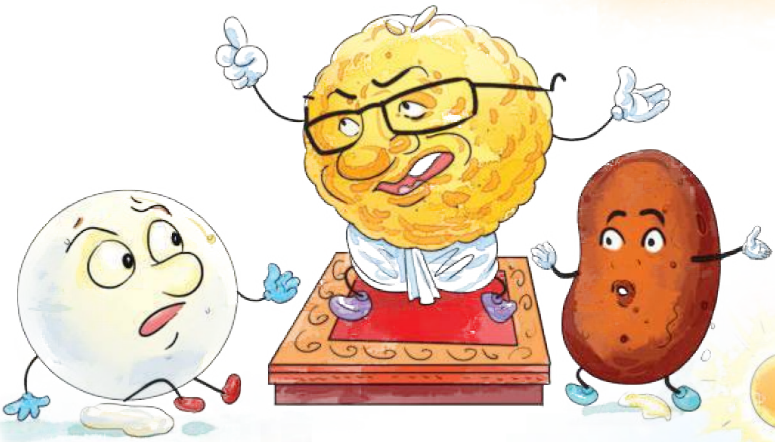

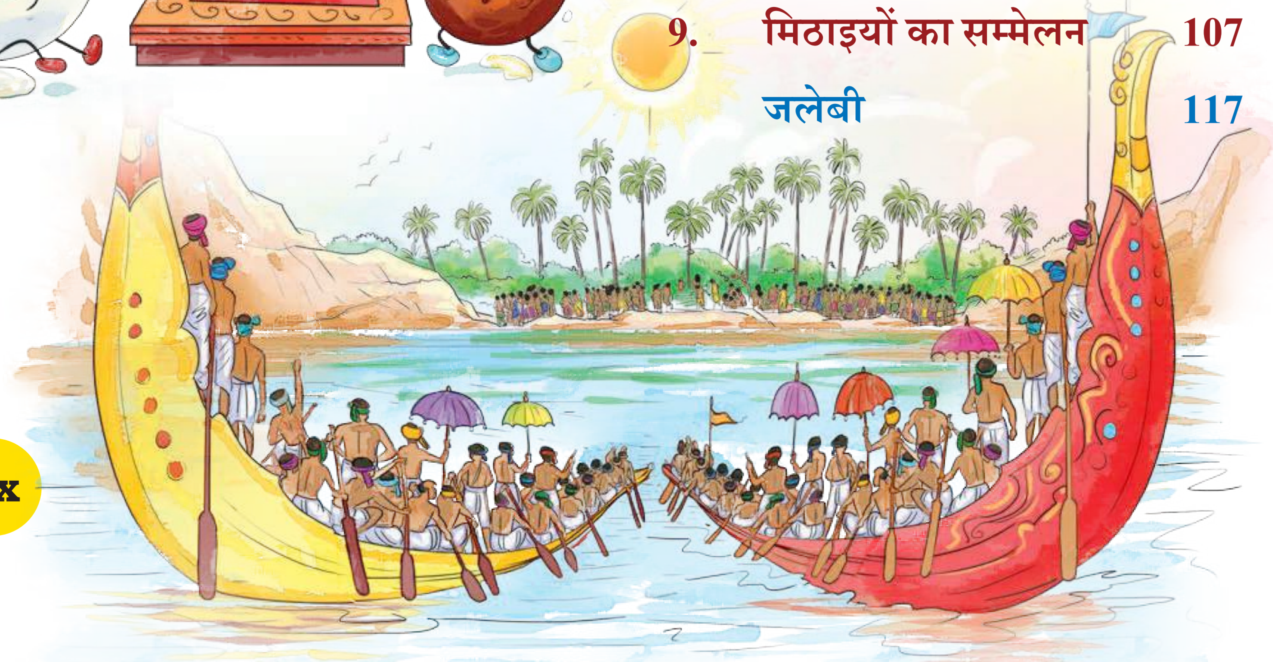

	सुन, इमली के दाने सुन!	118
	ठहाके	119
10.	कविता का कमाल	120

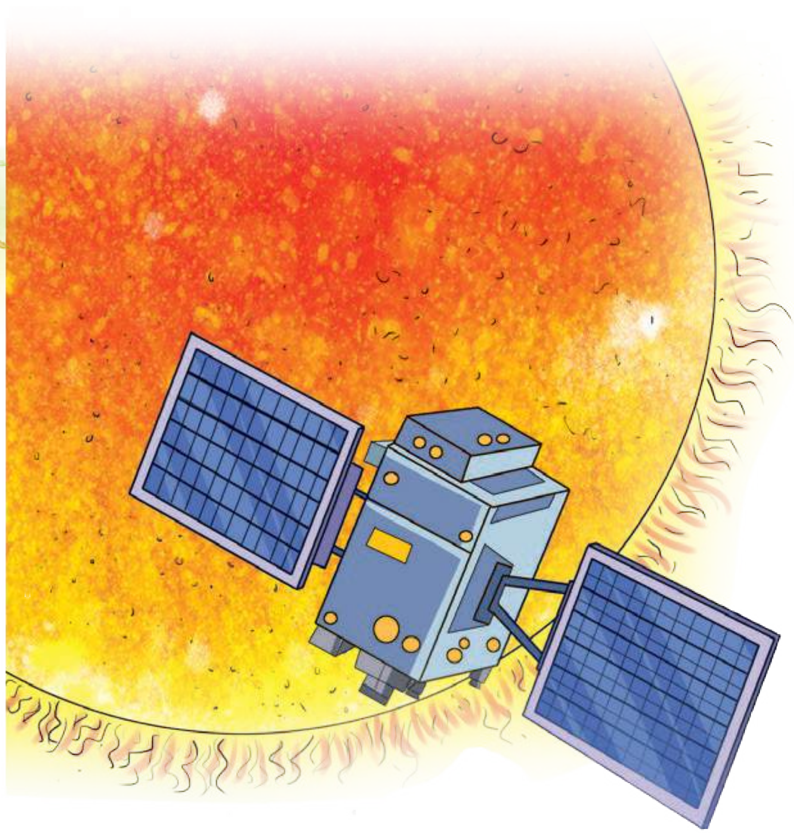

11.	शतरंज में मात	132
12.	हमारा आदित्य	147
	हम सब सुमन एक उपवन के	165
	सड़क सुरक्षा	166
	संस्कृत	167

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

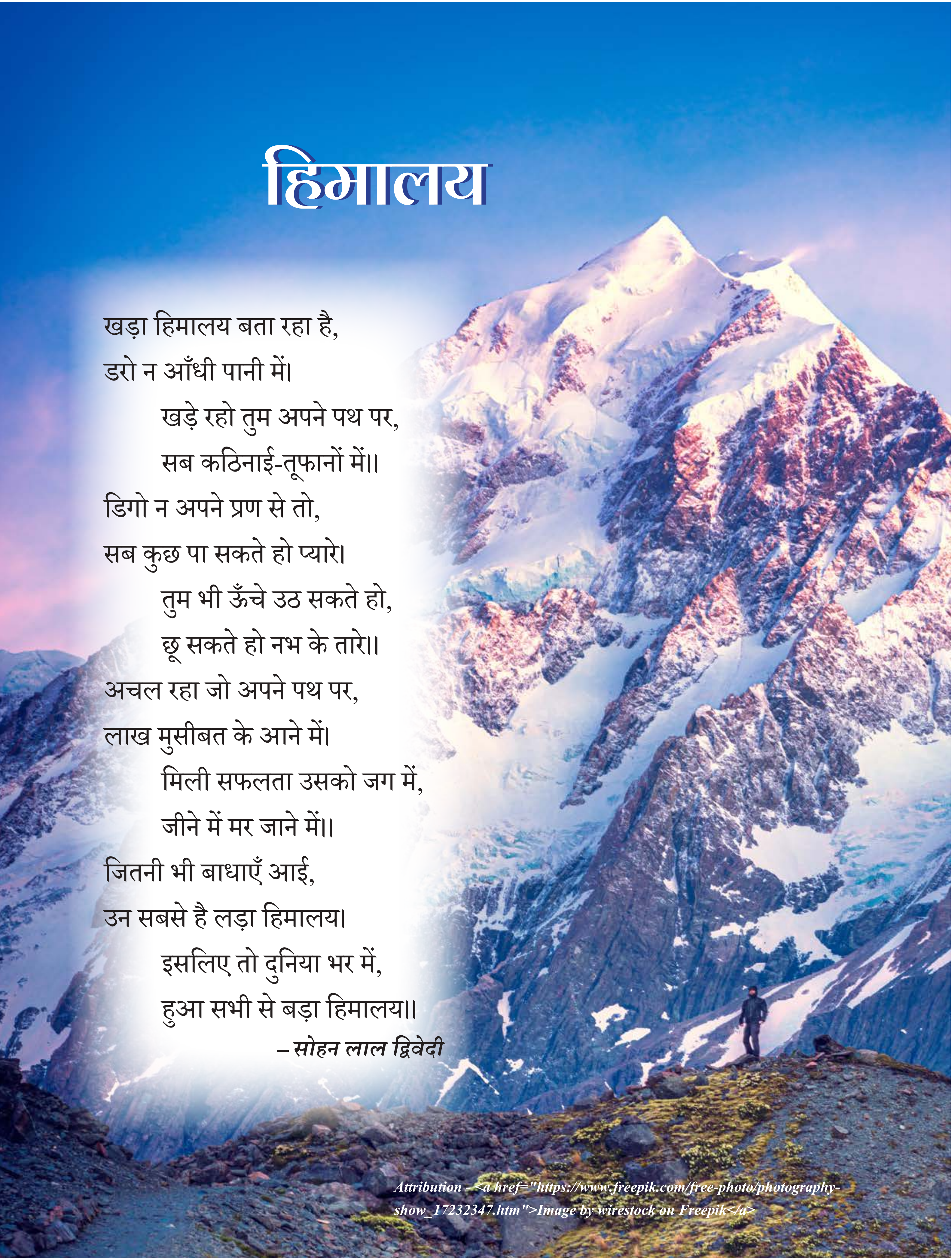

हिमालय

खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी पानी में।
खड़े रहो तुम अपने पथ पर,
सब कठिनाई-तूफानों में।।
डिगो न अपने प्रण से तो,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे।।
अचल रहा जो अपने पथ पर,
लाख मुसीबत के आने में।
मिली सफलता उसको जग में,
जीने में मर जाने में।।
जितनी भी बाधाएँ आई,
उन सबसे है लड़ा हिमालय।
इसलिए तो दुनिया भर में,
हुआ सभी से बड़ा हिमालय।।

– सोहन लाल द्विवेदी

Attribution - Image by wirestock on Freepik

ऐसा वर दो

भगवन हमको ऐसा वर दो,
जग के सारे सद्गुण भर दो।

हम फूलों जैसे मुस्काएँ,
सब पर प्रेम-सुगंध लुटाएँ,
हम परहित कर खुशी मनाएँ,
ऐसे भाव हृदय में भर दो,
भगवन हमको ऐसा वर दो।

दीपक बनें, लड़ें हम तम से,
ज्योतिर्मय हो यह जग हमसे,
कभी न हम घबराएँ गम से,
तन, मन सबल हमारे कर दो,
भगवन हमको ऐसा वर दो।

सत्य-मार्ग पर बढ़ते जाएँ,
सबको ही सन्मार्ग दिखाएँ,
सब मिलकर जीवन फल पाएँ,
ऐसे ज्ञान, बुद्धि से भर दो,
भगवन हमको ऐसा वर दो।

– त्रिलोक सिंह ठकुरेला

0431CH01

1 चिड़िया का गीत

सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।

फिर मेरा घर बना घोंसला
सूखे तिनकों से तैयार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।

फिर मैं निकल गई शाखों पर
हरी-भरी थीं जो सुकुमार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।

आखिर जब मैं आसमान में
उड़ी दूर तक पंख पसार
तभी समझ में मेरी आया
बहुत बड़ा है यह संसार।

– निरंकार देव 'सेवक'

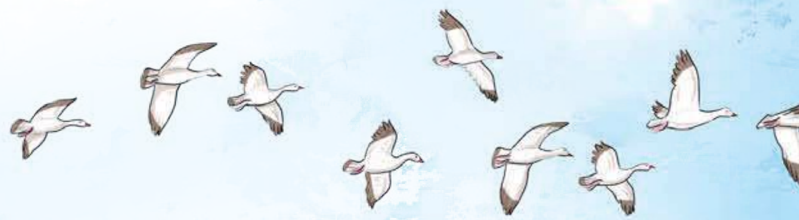

बातचीत के लिए

1. पशु-पक्षियों के लिए घर आवश्यक है या नहीं? कारण भी बताइए।
2. आपके परिवार के सदस्य घर से बाहर क्यों जाते हैं?
3. जब परिवार के सदस्य बाहर जाते हैं या बाहर से आते हैं तो आपको कैसा लगता है और क्यों?
4. जब कोई अतिथि आपके घर आता है या आप किसी संबंधी के यहाँ जाते हैं तो आपको कैसा लगता है?
5. क्या आपको लगता है कि पक्षियों की तरह हम भी धीरे-धीरे बड़े होते हैं और फिर उनकी तरह ही संसार देखते हैं? अपने अनुभव साझा कीजिए।

कविता की बात

1. नीचे दिए गए प्रश्नों में चार विकल्प दिए गए हैं। प्रश्नों के उत्तर में एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं—

क. घोंसले से संबंधित उपयुक्त वाक्य को चिह्नित कीजिए—

- घोंसला पक्षियों का घर होता है। ☐
- घोंसला सूखे तिनकों से बनाया जाता है। ☐
- पक्षियों का घोंसला केवल पेड़ों पर होता है। ☐
- कुछ पक्षियों का घोंसला हमारे घरों में भी होता है। ☐

ख. कविता में 'अंडे जैसा था आकार' का प्रयोग निम्नलिखित में से किसके लिए किया गया है—

- संसार ☐
- आकाश ☐
- घर ☐
- घोंसला ☐

ग. 'तब मैं यही समझती थी
बस <u>इतना-सा</u> ही है संसार'
इन पंक्तियों में **'इतना-सा'** का अर्थ है—

- बहुत छोटा ☐
- बहुत बड़ा ☐
- बहुत लंबा ☐
- रंग-बिरंगा ☐

2. **नीचे दी गई कविता की पंक्तियों का मिलान उनके नीचे दी गई उपयुक्त पंक्तियों से कीजिए—**

फिर मेरा घर
बना घोंसला
सूखे तिनकों
से तैयार

आखिर जब मैं
आसमान में
उड़ी दूर तक
पंख पसार

फिर मैं निकल
गई शाखों पर
हरी-भरी थीं
जो सुकुमार

सबसे पहले मेरे
घर का
अंडे जैसा
था आकार

तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।

तभी समझ में मेरी आया
बहुत बड़ा है यह संसार।

सोचिए और लिखिए

1. चिड़िया को यह संसार कब-कब छोटा लगा?
2. खुले आकाश में उड़ते समय चिड़िया ने क्या-क्या देखा होगा जिससे उसे लगा कि संसार बहुत बड़ा है?
3. प्रायः सुबह-शाम पक्षियों की चहचहाहट (कलरव) सुनाई देती है। ऐसा क्यों होता है?

समझ और अनुभव

1. **जब कोई शिशु चिड़िया घोंसले से बाहर आती है तो उसे लगता है कि संसार बहुत बड़ा है। क्या आपको भी घर से बाहर निकलते समय ऐसा ही अनुभव होता है और क्यों?**

2. **एक शिशु पक्षी की तरह आप भी धीरे-धीरे बड़े हो रहे हैं। अब तक आपमें भी कई परिवर्तन आए हैं। नीचे दिए गए शीर्षकों के अनुसार अपने अंदर आए परिवर्तनों को लिखिए —**

   - शारीरिक परिवर्तन
   - रुचियों में परिवर्तन
   - समझ में परिवर्तन
   - खान-पान में परिवर्तन
   - चित्रकारी
   - खेल
   - गीत-संगीत
   - पढ़ना-लिखना
   - नृत्य और अभिनय

   इनके अतिरिक्त यदि आपको किसी अन्य परिवर्तन की अनुभूति होती है तो उसे भी कक्षा में साझा कीजिए।

3. **पहले चिड़िया को लगता था कि यह संसार बहुत छोटा है परंतु सच्चाई कुछ और ही थी। उस समय आपको कैसा लगा जब आपने इनमें से किसी एक को पहली बार देखा —**

   - रेलगाड़ी
   - मेट्रो ट्रेन
   - मॉल
   - समुद्र
   - पहाड़
   - वायुयान
   - जलयान
   - जंगल
   - चार या छह वीथियों वाली सड़कें
   - खेत
   - रेगिस्तान या मरुस्थल
   - नदी

इनके अतिरिक्त, आपके कुछ और अनुभव हो सकते हैं, उन्हें भी कक्षा में अवश्य साझा कीजिए।

चित्रों की भाषा

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। चित्र से मेल खाती कविता की कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के रूप में दी गई हैं। अब कविता की उपयुक्त पंक्तियों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

आखिर जब मैं आसमान में
उड़ी दूर तक पंख पसार
तभी समझ में मेरी आया
बहुत बड़ा है यह संसार।

....
....
....
....

अनुमान और कल्पना

1. कविता की पंक्ति है— "आखिर जब मैं आसमान में, उड़ी दूर तक पंख पसार।" चिड़िया ने अंतत: इतनी दूर तक उड़ान क्यों भरी होगी?
2. पक्षी खुले आकाश में बहुत दूर तक उड़ते हैं। लंबी दूरी, हजारों पेड़ों और सैकड़ों घोंसलों के बीच पक्षी अपना घोंसला कैसे ढूँढ़ते होंगे?
3. पक्षियों ने आकाश में उड़कर जाना कि संसार बहुत बड़ा है। हमारे पूर्वजों को यह बात कैसे पता चली होगी?
4. जब आप कहीं बाहर जाते हैं तो घर के बड़े-बूढ़े आपको कुछ निर्देश देकर भेजते हैं। क्या पक्षियों के माता-पिता भी उन्हें उड़ने के पूर्व कुछ निर्देश देते होंगे? यदि हाँ, तो वे निर्देश क्या-क्या हो सकते हैं?

कल्पना की उड़ान

हर कोई पक्षी बनकर आकाश में उड़ना चाहता है। कल्पना कीजिए कि आप सभी खुले आकाश में पंख फैलाकर उड़ रहे हैं। कोई पहाड़ों के ऊपर उड़ रहा है, कोई समुद्र के ऊपर, कोई क्रिकेट मैच देखते हुए उड़ रहा है तो कोई विवाह के भोज का आनंद लेते हुए उड़ रहा है। आपको कल्पना करके कक्षा को बताना है कि आप ऊपर से नीचे क्या-क्या देख रहे हैं। आप अपनी प्रस्तुति को उसी तरह सुना सकते हैं जैसे खेलों में आँखों देखा हाल सुनाया जाता है, यथा – मैं पहाड़ों के ऊपर से उड़ रहा/ रही हूँ। मुझे चारों ओर ऊँचे पेड़, झरने और सरोवर दिखाई दे रहे हैं। ठंडी हवा अच्छी लग रही है। अरे वाह! अब तो बर्फ भी दिखने लगी है। यह एक सफेद चादर की तरह लग रही है। मैं इसका भरपूर आनंद ले रहा/ रही हूँ आदि।

उड़ान की परिस्थितियाँ, जैसे – पहाड़, समुद्र और उसका किनारा, जंगल, रेगिस्तान, मैदान, गाँव, नगर, बरात, विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ, विद्यालय, मेला, बाज़ार, चिकित्सालय, चिड़ियाघर, स्थानीय त्योहार आदि हो सकती हैं। शिक्षक बच्चों को उनके पिछले अनुभव और स्थानीयता को ध्यान में रखते हुए अन्य परिस्थितियाँ भी दे सकते हैं।

आकार-प्रकार

कविता में ‘अंडे जैसा था आकार’ का उल्लेख है। नीचे कुछ और चित्र दिए गए हैं जो अलग-अलग आकृतियों के हैं। चित्रों के नीचे उनके नाम लिखिए। इस कार्य में आप अपने शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।

....

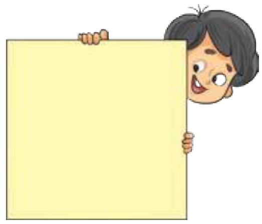
....

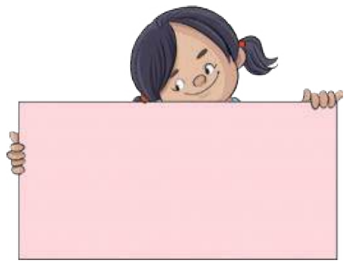
....

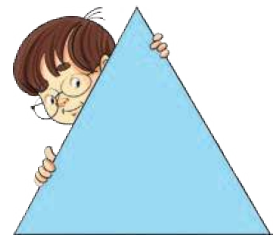
....

भाषा की बात

1. “फिर मैं निकल गई शाखों पर, हरी-भरी थीं जो सुकुमार”, कविता की इस पंक्ति में ‘सुकुमार’ शब्द आया है। यह ‘सु’ और ‘कुमार’ के मेल से बना है जिसका अर्थ है— कोमल या कोमल अंगों वाला। आप भी इसी प्रकार कुछ नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ खोजिए।

सु	कुमार	सुकुमार	कोमल अंगों वाला
सु	योग्य	....	....
सु	यश	....	....
सु	....	सुकर्म	अच्छे कर्म
सु	वास	....	....
सु	....	सुदर्शन	....

2. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ रिक्त स्थान हैं और कुछ शब्द रेखांकित किए गए हैं। उन शब्दों से वाक्यों को पूरा कीजिए जो रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ रखते हैं—

(क) सूखा और .... कचरा अलग-अलग डिब्बों में डालें।

(ख) रायपुर मेरे घर से .... है लेकिन जशपुर पास में है।

(ग) अमित कब .... और कब गया, पता ही नहीं चला।

(घ) कोई भी काम न तो बड़ा होता है और न ही ....।

3. आइए, अब एक रोचक संवाद पढ़ते हैं—

इतना-सा, उतना-सा, जितना-सा और कितना-सा का वाक्यों में प्रयोग कीजिए और उनके अर्थ भी समझाइए। फिर आपको रमा जितने रुपये मिल जाएँगे।

अब नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाकर सरला की सहायता कीजिए—

इतना-सा ....

उतना-सा ....

जितना-सा ....

कितना-सा ....

पाठ से आगे

पक्षी भोजन की खोज में घोंसले से बाहर उड़ते हैं। यह जानना रोचक होगा कि कौन-सा पक्षी क्या खाता है। नीचे कुछ पक्षियों के नाम दिए गए हैं। पता कीजिए कि वे क्या खाते हैं—

पक्षियों के नाम	पक्षियों का भोजन
बाज	....
हंस	....
तोता	....
बगुला	....
कबूतर	....
उल्लू	....

कलाकारी

चित्र बनाना, गाना और नृत्य करना सभी को पसंद होता है। घोंसले से झाँकता हुआ शिशु पक्षी, हरे-भरे पेड़ की शाखाओं पर बैठा पक्षी, नीले आकाश में पंख फैलाकर उड़ता पक्षी आदि बहुत प्यारे लगते हैं। अब आप भी नीले आकाश में उड़ते हुए पक्षियों का चित्र बनाइए। जब चित्र तैयार हो जाए तो आप चित्र को पकड़कर एकल या सामूहिक नृत्य कर सकते हैं या अपने मनभावन गीत पर भाव नृत्य कर सकते हैं। आप सभी इन चित्रों को कक्षा या गलियारे में प्रदर्शित कर सकते हैं।

अभिभावकों/शिक्षकों/मित्रों की सहायता से नीचे दिए गए गीत को खोजिए और समूह में गाइए।

सूरज एक, चंदा एक, तारे अनेक,
एक तितली, अनेक तितलियाँ,
एक गिलहरी, अनेक गिलहरियाँ,
एक चिड़िया, अनेक चिड़ियाँ...

आनंदमयी गतिविधि

1. नीचे दिए गए अक्षर जाल में पक्षियों के नाम खोजिए और उनके बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

नी	ल	कं	ठ	ती
मै	ब	त	ख	त
ना	क	बू	त	र
ची	ल	गौ	रै	या
बु	ल	बु	ल	बा
सा	र	स	बा	ज

नीलकंठ	....	....
....	....	....
....	....	....

2. जब शिशु पक्षी चहचहाते हैं तो एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है। आइए, हम भी शिशु पक्षियों की तरह चहचहाएँ।

सभी बच्चे अपनी एक हथेली अपने होठों पर रखें। सभी मिलकर चीं-चीं की ध्वनि निकालें। आपको लगेगा कि आप ही पेड़ की शाखाओं से शिशु पक्षी बनकर यह ध्वनि निकाल रहे हैं। बस पक्षियों की चहचहाहट सुनिए और आनंद लीजिए।

पक्षियों की ध्वनियों को निकालना और सुनना सभी को रुचिकर लगता है। आइए, अब हम बारी-बारी से किसी भी पक्षी की ध्वनि निकालें और तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत करें।

3. नीचे पशु-पक्षियों से संबंधित कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। पहेलियों का उपयुक्त चित्रों से मिलान कीजिए—

भाता है इसको अँधियारा,
जिससे डरता है जग सारा।
दिन में सोता बड़ा हठीला,
होता इसका पंख नुकीला।

चोंच लाल, हरियल है काया,
इस पक्षी ने सदा लुभाया।
कुतर-कुतर कर चींजे खाता,
झट रट लेता, मन बहलाता।

आम बौर इसको है भाता,
मीठे सुर में गीत सुनाता ।
काला कौआ इसे न जानो,
नाम बताओ, अब पहचानो।

राज अँधेरे में करता है,
दिन में सूरज से डरता है।
बड़ी-बड़ी है आँखों वाला,
पक्षी ऐसा अजब-निराला।

बोलिए फटाफट

नीचे कुछ रोचक और चुनौतीपूर्ण पहेलियाँ दी गई हैं, शीघ्रता से उनका उत्तर दीजिए—

परिवार हरा, हम भी हरे,
एक थैली में तीन-चार भरे।

....

एक लाठी की अजब कहानी
उसके भीतर मीठा पानी।

....

एक पक्षी ऐसा,
जिसकी दुम पर पैसा।

....

लाल डिबिया, पीले खाने,
भीतर रखे मोती के दाने।

....

जाती हूँ मैं हर जगह,
पर हिलती नहीं किसी भी तरह।

....

पहेलियों के उत्तर—1. मटर 2. गन्ना 3. मोर 4. अनार 5. सड़क

मति की उड़ान

आइए मिलते हैं भारत की पहली महिला पायलट सरला ठकराल से। इन्हें प्यार से 'मति' कहा जाता था। इनका जन्म सन् 1914 में दिल्ली में हुआ था। सरला ठकराल मात्र 21 वर्ष की आयु में पायलट का लाइसेंस पाने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उन्होंने सन् 1936 में पहली बार लाहौर में जिप्सी मॉथ नाम का दो सीट वाला विमान अकेले उड़ाया था। वे साड़ी पहनकर विमान उड़ाने वाली पहली महिला थीं। उन्होंने वायुयान का लाइसेंस प्राप्त करने के लिए 1,000 घंटे की उड़ान का कठिन अभ्यास किया था।

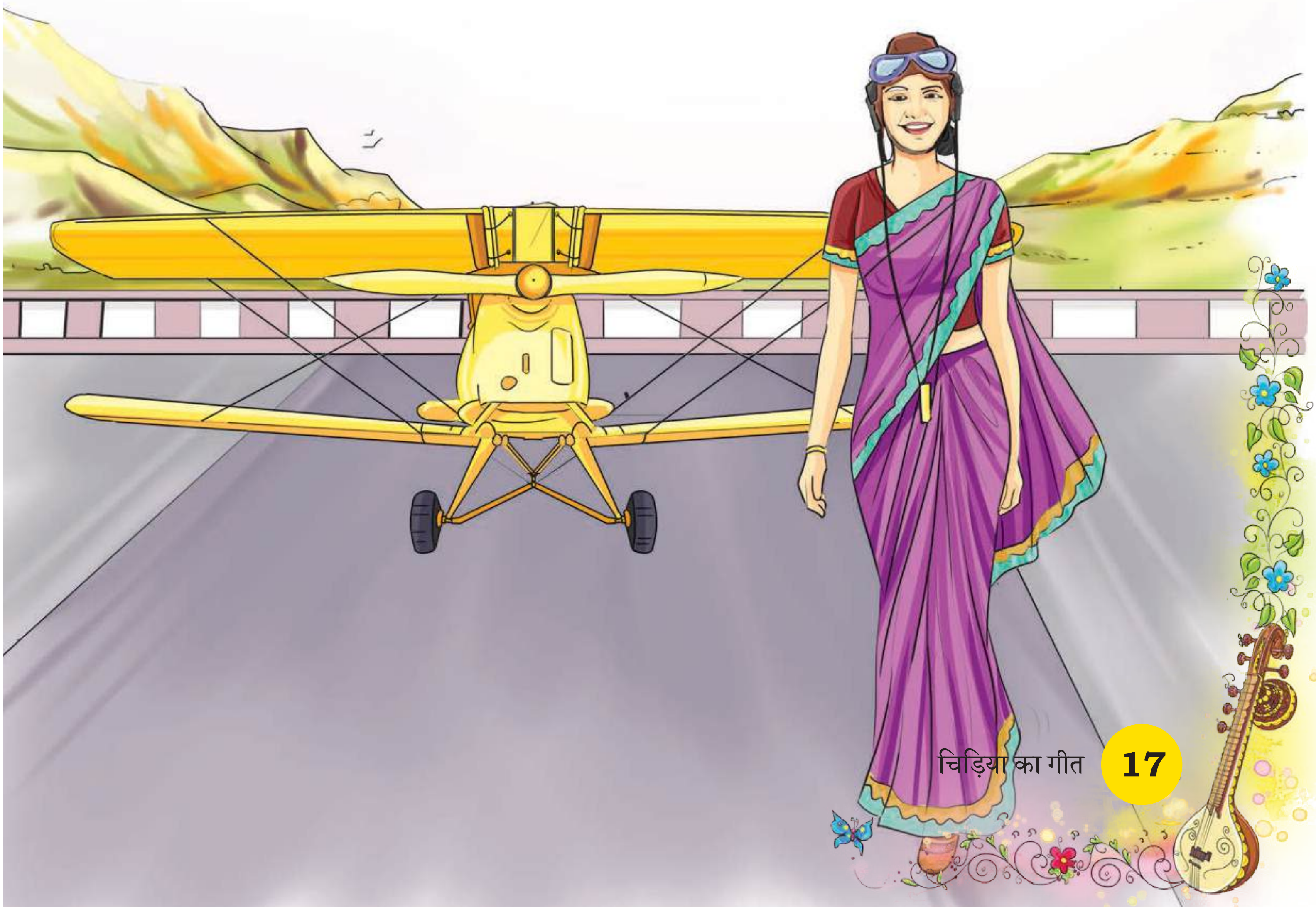

2 बगीचे का घोंघा

0431CH02

ऊपर दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

- यह कौन-सा जीव है?
- आपने इसे कहाँ देखा है?
- आपने इसे किस मौसम में अधिक देखा है?
- आपको अपने घर और विद्यालय में कौन-कौन से जीव दिखाई देते हैं?
- घोंघा उन जीवों से किस बात में भिन्न है?

बहुत समय पहले की बात है। एक बगीचे में एक घोंघा रहता था। जानते हो घोंघा कैसा होता है?

बगीचा बहुत छोटा और सुंदर था। घोंघे ने अपना सारा जीवन उसी बगीचे में बिताया था। उसे बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचने में पूरे दो दिन लगते थे। इतने समय तक वहाँ रहने के कारण घोंघा बगीचे का कोना-कोना पहचान गया था।

पर कभी-कभी घोंघे को लगता था, इस बगीचे के बाहर क्या होगा? कैसी होती होगी बाहर की दुनिया?

बगीचे की दीवार में एक छेद था। घोंघा प्रतिदिन उस छेद को देखता था। उसे याद आता था कि उसकी माँ उससे कहा करती थीं, "वहाँ कभी मत जाना। वह दुनिया हमारी दुनिया से बहुत अलग है।"

घोंघा कुछ और दिन सोचता रहा। फिर उसने तय कर लिया, "मैं बाहर जाकर देखूँगा कि दुनिया कैसी है।"

यह सोचकर उसने अपना सामान अपने शंख में बाँध लिया। अगले दिन सूरज निकलने के पहले ही घोंघा निकल पड़ा। बगीचा पीछे छोड़ दिया।

घोंघा छेद में घुसा और जल्दी ही बाहर निकल आया। बाहर आते ही घोंघा चकित रह

गया। जितनी दूर तक उसकी आँखें देख सकती थीं, उतना उसने देखा। उसके सामने बहुत बड़ा, लंबा और चौड़ा-सा मैदान था।

वास्तव में वह बच्चों के खेलने की जगह थी। पर घोंघे ने तो सोचा ही नहीं था कि इतनी बड़ी जगह भी हो सकती है। "वाह! दुनिया सचमुच कितनी बड़ी है", घोंघे ने कहा।

उसी समय खड़-खड़ की ध्वनि आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढँक गया है। वह डर के मारे जोर से चिल्लाया, "उई!" फिर वह अपने ऊपर हँसने लगा। उसने देखा कि एक सूखा पत्ता उसके ऊपर आ गिरा था।

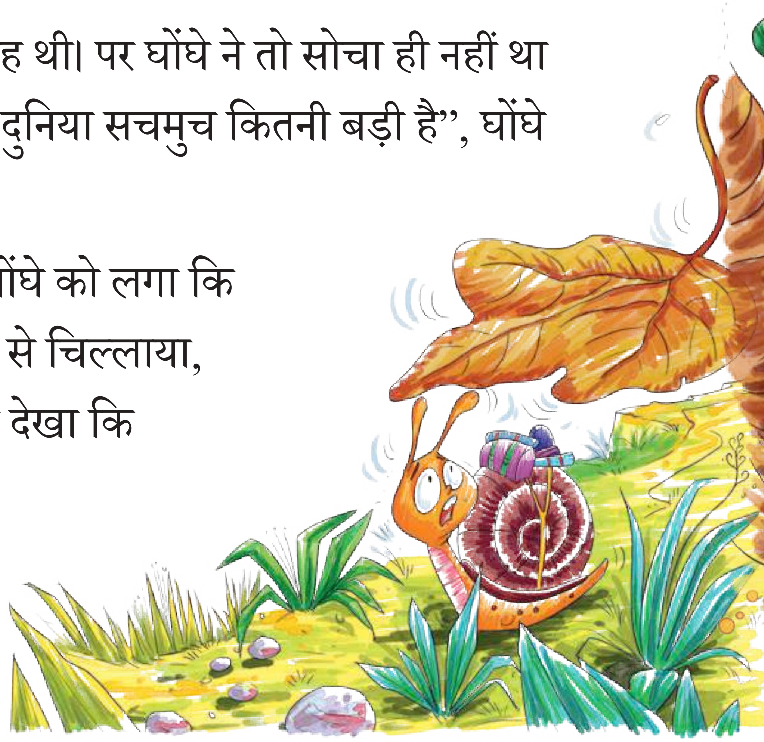

"वाह! दुनिया तो कितनी मज़ेदार है", घोंघे ने कहा। वह उस सूखी-भूरी पत्ती के नीचे से बाहर निकल गया।

थोड़ा आगे एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा हुआ था। घोंघे को लगा यह कोई पहाड़ होगा। वह झट से उस पर चढ़ गया और देखने लगा।

घोंघे ने अपने जीवन में पहली बार लाल चींटों को देखा। वे अपने लंबे-पतले पाँवों से इधर-उधर आ-जा रहे थे।

उसने देखा कि एक गिलहरी फुदक-फुदककर एक पेड़ पर चढ़ गई। उसने देखा कि दूर एक गेंद लुढ़कती हुई जा रही

है और एक कुत्ता उसके पीछे भाग रहा है।

"वाह! दुनिया में सब कुछ कितनी तेज़ी से चलता है", घोंघे ने कहा। "बगीचे में तो सबकुछ धीरे-धीरे चलता था।"

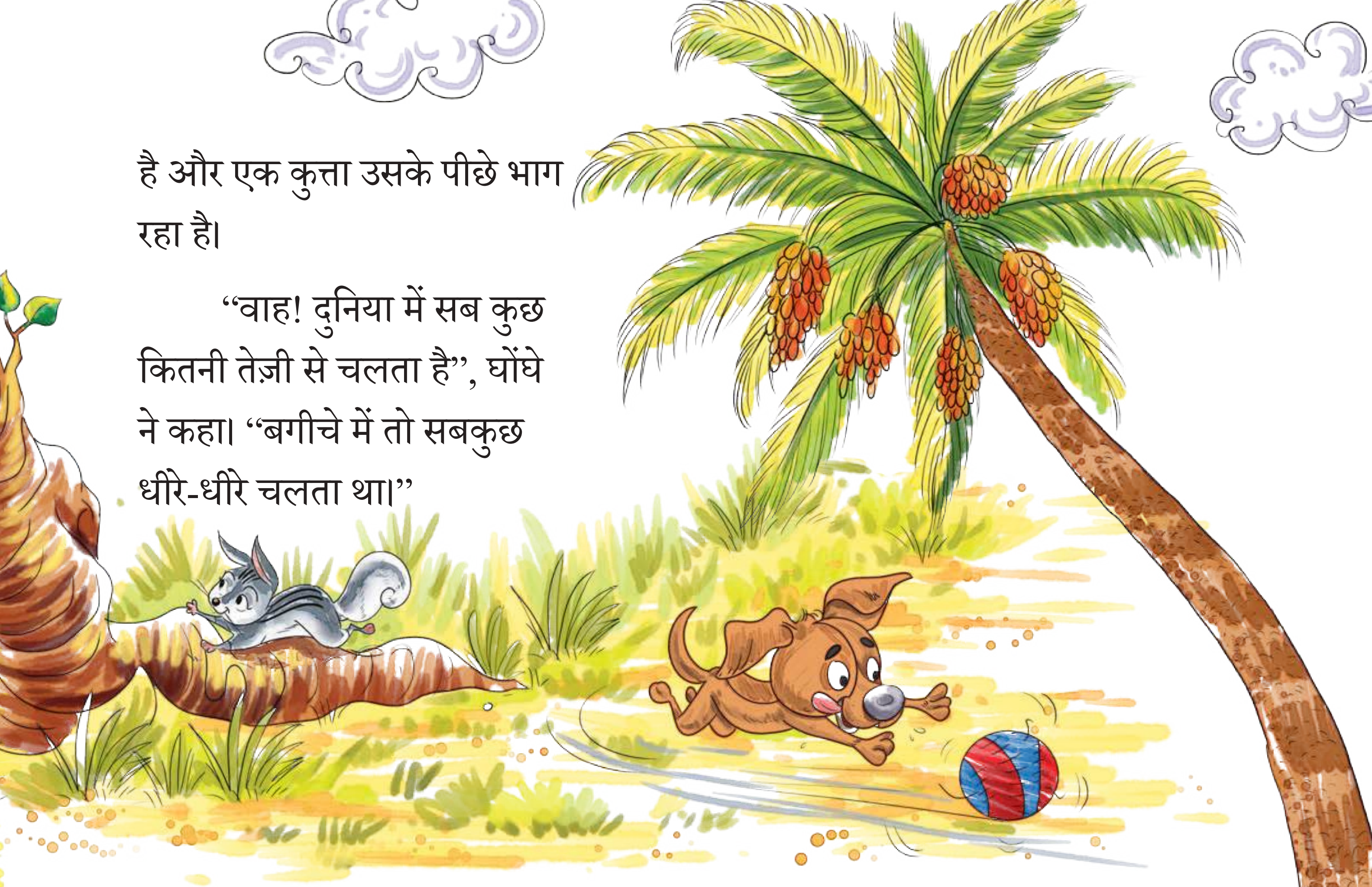

तभी अचानक उसने एक ऐसी चीज़ देखी जिससे उसका सर चकरा गया। अभी तक तो घोंघे ने पौधे या छोटे पेड़ ही देखे थे। पर यहाँ पर तो एक ऐसा लंबा पेड़ था जो पूरे आसमान तक जाता था। बेचारे घोंघे ने कभी खजूर का पेड़ नहीं देखा था।

वहाँ एक और पेड़ था जो इतना बड़ा था कि घोंघा उसके एक छोर से दूसरे छोर तक भी नहीं देख पाता था। बड़ के पेड़ से जो उसका पाला पड़ गया था, इसलिए। घोंघे की आँखें आश्चर्य से और भी खुल गईं। उसने कहा, "वाह, सचमुच दुनिया कितनी अद्भुत है!" घोंघे ने तय कर लिया कि अब तो वह इस दुनिया में ही रहेगा।

–एकलव्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक
'छींका-छींक' से साभार

बातचीत के लिए

1. घोंघे को बगीचे (उद्यान) के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँचने में दो दिन क्यों लगते थे?
2. आप अपने विद्यालय कैसे जाते हैं और आपको कितना समय लगता है?
3. घोंघा बगीचे से बाहर क्यों जाना चाहता था?
4. आपका कहाँ-कहाँ जाने का मन करता है?
5. आप घूमने के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं और किसके साथ जाते हैं?

पाठ के भीतर

नीचे दिए गए प्रश्नों के सटीक उत्तर के सामने सूरज का चित्र (☼) बनाइए—

1. घोंघा बगीचे से बाहर क्यों जाना चाहता था?
   - (क) उसे बगीचे में अच्छा नहीं लगता था। ☐
   - (ख) वह बाहर का जीवन देखना चाहता था। ☐
   - (ग) उसे बगीचा सुंदर नहीं लगता था। ☐
   - (घ) उसे बगीचा बहुत छोटा लगता था। ☐

2. घोंघे को बड़ा-सा पत्थर पहाड़ जैसा क्यों लगा होगा?
   - (क) पत्थर पहाड़ की तरह बहुत ही बड़ा था। ☐
   - (ख) घोंघे ने बगीचे में पत्थर जैसी बड़ी वस्तु कभी नहीं देखी थी। ☐
   - (ग) घोंघे को पत्थर पर चढ़कर दूर-दूर तक दिखाई दे रहा था। ☐
   - (घ) पत्थर की आकृति पहाड़ जैसी थी। ☐

3. घोंघे ने अपने जीवन में पहली बार क्या देखा?

(क) अपने लंबे-पतले पाँवों से आ-जा रहे लाल चींटें

(ख) अपना शंख

(ग) पीपल का पेड़

(घ) हरी-हरी घास

4. घोंघे की आँखें आश्चर्य से क्यों खुली रह गईं?

(क) उसके ऊपर एक बड़ा पत्ता गिरा।

(ख) वह बगीचे में एक नए कीट से मिला।

(ग) उसने पहली बार एक तालाब देखा।

(घ) उसने बड़ का एक पेड़ देखा।

5. छेद से बाहर निकलते ही घोंघे का जिन वस्तुओं से सामना हुआ, उनमें से कुछ वस्तुएँ छूट गई हैं। उन्हें पूरा कीजिए—

मैदान	....	पत्थर
....	गिलहरी	गेंद
कुत्ता	....	बड़ का पेड़

सोचिए और लिखिए

1. बगीचे की दीवार में छेद देखकर घोंघे को कौन-सी बात याद आती थी?
2. छेद के दूसरी ओर जाते ही घोंघा चकित क्यों रह गया?
3. घोंघे ने ऐसा क्यों कहा होगा कि बगीचे में सब कुछ धीरे-धीरे चलता है?

4. घोंघे की तरह आपको अपने घर, विद्यालय तथा आस-पास क्या-क्या अद्‌भुत लगता है और क्यों?

5. घोंघे ने बगीचे के भीतर और बाहर क्या-क्या देखा? नीचे लिखिए—

बगीचे के भीतर	बगीचे के बाहर
....	....
....	....
....	....
....	....

भाषा की बात

1. कहानी में आए निम्न शब्दों के आधार पर वाक्य बनाकर लिखिए—

आश्चर्य – ....

अद्‌भुत – ....

अचानक – ....

छोर – ....

2. जब घोंघे के ऊपर सूखा पत्ता गिरा, तब उसने 'वाह!' न कहकर 'उई!' कहा। आपके मुँह से कब 'वाह' और 'उई' जैसे शब्द निकलते हैं?

वाह! कितना सुंदर फूल है। ....

....

....

....

3. घोंघे ने अपने शंख में कौन-कौन सा सामान बाँधा होगा?

फल, पत्ता, ...

मिलान कीजिए

नीचे लिखी बातें घोंघे ने कब-कब कहीं? मिलान कीजिए—

घोंघे का कथन	कब कहा?
"वाह! दुनिया में सब कुछ कितनी तेज़ी से चलता है।"	जब उस पर सूखा पत्ता गिरा।
"वाह! दुनिया सचमुच कितनी बड़ी है।"	जब उसने बड़ का पेड़ देखा।
"वाह! दुनिया तो कितनी मज़ेदार है।"	जब उसने लुढ़कती गेंद के पीछे कुत्ते को भागते हुए देखा।
"वाह! सचमुच दुनिया कितनी अद्भुत है।"	जब उसने बच्चों के खेलने का स्थान देखा।

विभिन्न ध्वनियाँ

"उसी समय खड़-खड़ की ध्वनि आई।" यहाँ सूखे पत्तों के गिरने की ध्वनि 'खड़-खड़' जैसी है। इनकी ध्वनियाँ कैसी होंगी—

- बादलों का गरजना ....
- पानी का बरसना ....

- नल से बूँदों का गिरना

  ....

- मेंढक का बोलना

  ....

- घंटी का बजना

  ....

- हवा का बहना

  ....

अपनी-अपनी विशेषताएँ

घोंघे ने बगीचे से बाहर आकर जो भी देखा, वह किसी-न-किसी रूप में विशेष था। पाठ के आधार पर उनकी विशेषताएँ लिखिए—

जो देखा	उसकी विशेषता
	बहुत बड़ा, लंबा-चौड़ा ....
	....
	....
	....

अनुमान और कल्पना

इतने समय तक वहाँ रहने के कारण घोंघा बगीचे का कोना-कोना पहचान गया था।

1. अनुमान लगाकर बताइए कि घोंघा बगीचे में कब से रह रहा होगा।
2. घोंघे को बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में दो दिन लगते थे और उसे वापस लौटने में 48 घंटे लगते थे। ऐसा क्यों?
3. आप अपने विद्यालय में कितने वर्षों से पढ़ रहे हैं? आपने वहाँ अब तक क्या-क्या देखा है?
4. आपको अपनी कक्षा से पेयजल के स्थान और विद्यालय के मुख्य द्वार तक जाने में कितना समय लगता है?

घोंघे से आपकी भेंट

घोंघे को सबसे पहले बच्चों के खेलने का स्थान दिखाई दिया। कल्पना कीजिए कि बच्चों ने घोंघे को देखा और उससे बातें कीं।

बच्चे – अरे! आप कौन?

घोंघा – मुझे नहीं पहचानते! मैं घोंघा, नहीं तो और कौन?

बच्चे – ....

घोंघा – ....

बच्चे – ....

घोंघा – ....

बच्चे – ....

3

नीम

लहराता-बलखाता नीम,
दिनभर हँसता-गाता नीम।
चिड़िया, कौआ, तोता सबसे,
अपना नेह जताता नीम।
नहीं डॉक्टर फिर भी देखो,
कितने रोग भगाता नीम।
चले प्रदूषित वायु कभी तो,
उसको शुद्ध बनाता नीम।
कड़वे तन में मन को मीठा,
रखना हमें सिखाता नीम।
हवा चले तो झूम-झूमके,
सब का मन बहलाता नीम।
लेता नहीं किसी से कुछ भी,
पर कितना दे जाता नीम।

– हरीश निगम

बातचीत के लिए

1. नीम के बारे में आप क्या-क्या जानते हैं?
2. आपने अपने परिवेश में बहुत से पेड़-पौधे देखे होंगे। कुछ के नाम बताइए।
3. आप विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों की पहचान किस आधार पर कर पाते हैं?
4. पेड़-पौधों से जुड़ा अपना कोई अनुभव सुनाइए, जैसे आपने कोई पौधा लगाया हो या किसी वृक्ष की छाया के नीचे आप खेलते हों।
5. आपको सबसे अच्छा पेड़ कौन-सा लगता है? आपको यही पेड़ सबसे अच्छा क्यों लगता है?

पाठ के भीतर

1. इस कविता में किन पक्षियों के नाम आए हैं? उनके नाम लिखिए।
2. नीम से किन-किन रोगों में लाभ हो सकता है? किन्हीं तीन के नाम पता करके लिखिए।

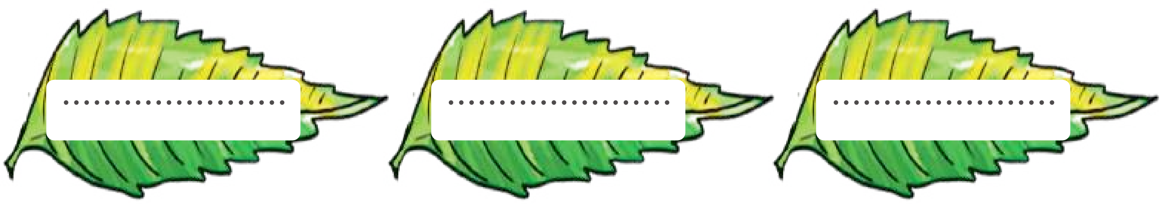

3. नीम का वृक्ष सबका मन कैसे बहलाता है?
4. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए—

> "चिड़िया, कौआ, तोता सबसे
> अपना <u>नेह</u> जताता नीम"

इन पंक्तियों में रेखांकित शब्द 'नेह' का भाव है – प्यार व स्नेह। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) नीम का वृक्ष पक्षियों से अपना नेह किस प्रकार जताता है?

(ख) आपके परिवार के सदस्य और अध्यापक आपसे अपना नेह किस प्रकार जताते हैं?

5. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

"चले प्रदूषित वायु कभी तो
उसको शुद्ध बनाता नीम"

(क) 'प्रदूषित वायु' से आप क्या समझते हैं?

(ख) वृक्ष प्रदूषित वायु को कैसे शुद्ध बनाते हैं?

6. नीचे लिखे भाव कविता की किन पंक्तियों में आए हैं?

(क) "नीम का वृक्ष डॉक्टर नहीं है, फिर भी बहुत सारे रोगों को भगाता है।"

कविता की पंक्ति – ....

....

(ख) "नीम का वृक्ष दिनभर प्रसन्न रहता है।"

कविता की पंक्ति – ....

....

भाषा की बात

1. नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

लड़की पुस्तक पढ़ती है।

लड़का पुस्तक पढ़ता है।

इन दोनों वाक्यों में लड़की व लड़का संज्ञा शब्द हैं। आपने ध्यान दिया होगा कि लड़की के लिए 'पढ़ती' और लड़के के लिए 'पढ़ता' क्रिया रूप का प्रयोग किया गया है। यह अंतर 'लिंग' के कारण आया है। 'लिंग' संज्ञा शब्दों के बारे में बताता है कि यह संज्ञा शब्द स्त्रीवाचक है या पुरुषवाचक। इसे नीचे दिए गए उदाहरणों से समझते हैं —

माताजी समाचार पढ़ती हैं।

पिताजी सब्जी काटते हैं।

मनीषा पतंग उड़ाती है।

अरविंद झूला झूलता है।

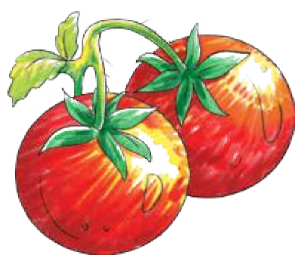

टमाटर खट्टा है।

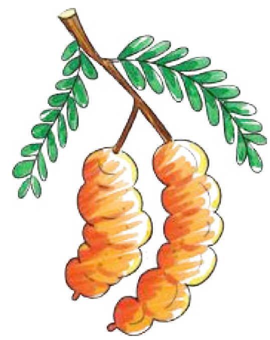

इमली खट्टी है।

(क) अब इस कविता में आए उन शब्दों को लिखिए जिनसे पता चलता है कि नीम शब्द पुल्लिंग है।

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

(ख) नीचे रखी टोकरी में बहुत से फल और साग-भाजी दिखाए गए हैं। इन्हें स्त्रीलिंग और पुल्लिंग की श्रेणी में रखिए।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

2. 'प्रदूषित' शब्द में 'प्र' लगा है। ऐसे ही कुछ और शब्द ढूँढ़कर नीचे लिखिए।

.........प्रदूषित.........	**प्र**	....
....		....

अभिनय

'नीम' कविता में बहुत से क्रिया शब्द आए हैं। कविता एक बार पुनः पढ़िए और नीचे लिखे क्रिया शब्दों के भाव के अनुसार अभिनय कीजिए—

- लहराना
- हँसना
- नेह जताना
- बलखाना
- गाना
- भगाना

वृक्ष एक, गुण अनेक

1. वृक्षों की बहुत-सी विशेषताएँ होती हैं, उन विशेषताओं को लिखिए।

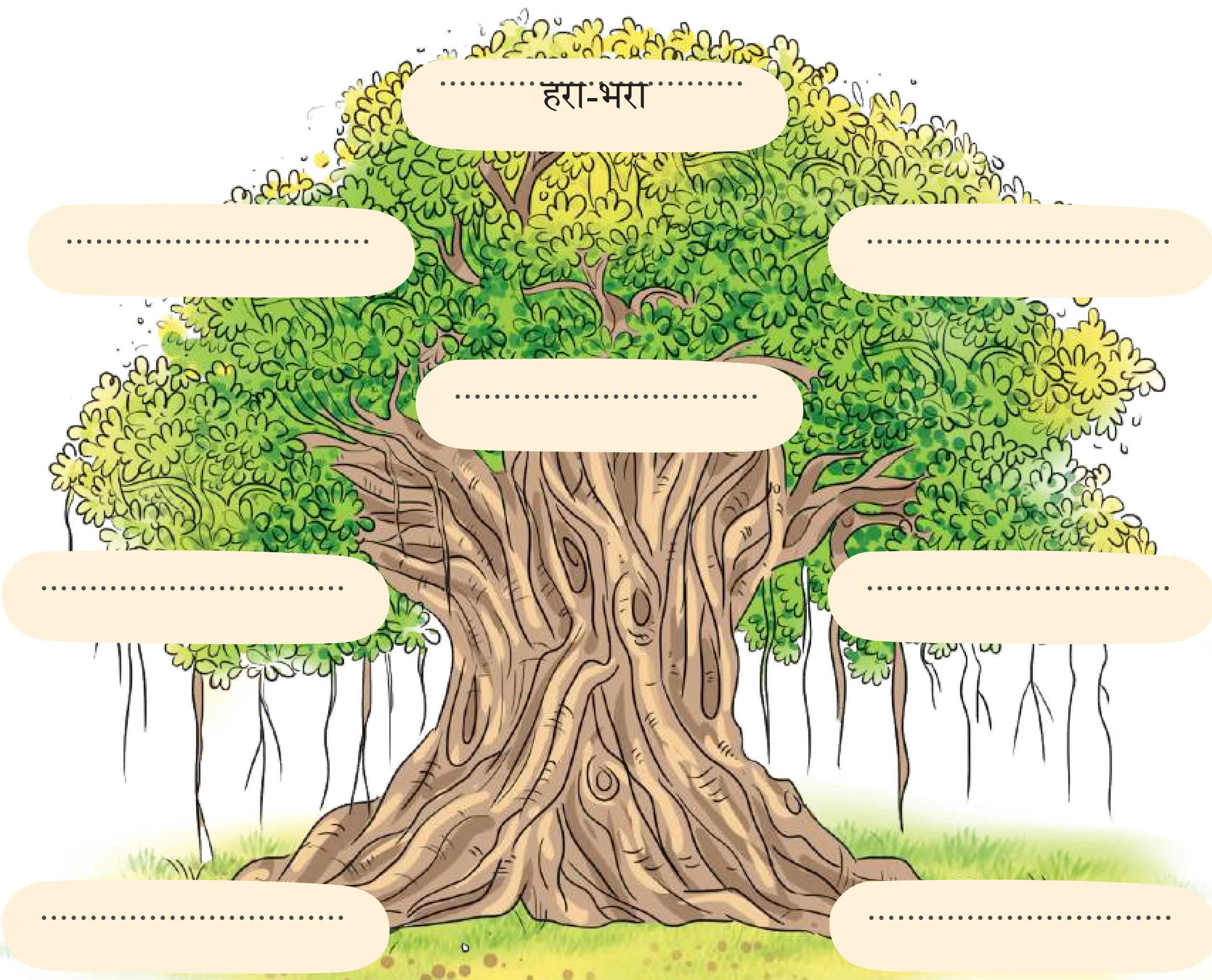

2. नीचे कुछ वृक्षों/पौधों की पत्तियों के चित्र हैं। उनके नाम उलट-पुलट गए हैं। उन्हें पहचानकर मिलान कीजिए। अपनी भाषा में भी उनके नाम पता करके लिखिए।

पत्तियों के चित्र	पत्तियों के नाम	आपकी भाषा में नाम
	बरगद	....
	धनिया	....
	आम	....
	तुलसी	....
	केला	....
	पीपल	....

3. नीचे दी गई पत्तियों को पहचानिए और इनके नाम तथा विशेषताएँ अपने अध्यापकों तथा अभिभावकों की सहायता से लिखिए—

पत्तियाँ	नाम	विशेषता
	आम	बंदनवार बनाने में प्रयोग की जाती हैं। ....
	....	....
	....	....
	....	....
	....	....

4. आपके परिवेश में जो भी पत्ते दिखते हैं, उनका संग्रहण कीजिए। पत्तों को किसी मोटे कागज पर चिपकाइए। उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए।

मैं नीम हूँ

1. नीचे नीम के बारे में कुछ आधे-अधूरे वाक्य लिखे हैं। सहपाठियों से चर्चा करके इन वाक्यों को पूरा कीजिए—

- मेरा एक-एक भाग ………………………………… है।
- मेरी पत्तियों का आकार ………………… और रंग ………………… होता है।
- मेरी पत्तियों के किनारे ………………………………… होते हैं।
- मेरी पत्तियों को उबालकर उस पानी से नहाने से ………………… दूर होते हैं।
- मेरी कोमल टहनियाँ दाँत ………………………… करने के काम आती हैं। इसे ………………………… कहते हैं।
- मेरे फल को ………………………………… कहा जाता है।
- मेरी पत्तियों का स्वाद ………………………………… होता है।
- मेरी पत्तियों को सुखाकर ………………………… में रखा जाता है।
- ………………………… मास में मेरी छटा देखने लायक होती है।
- आओ, कभी मेरी डाल पर ………………………… का आनंद लो।

2. आपने नीम के बहुत से गुणों के बारे में जाना। इसकी टहनियों, पत्तियों, निबौरियों में औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसलिए इसे औषधीय वृक्ष भी कहते हैं। अपने सहपाठियों से चर्चा करके कुछ और औषधीय पेड़-पौधों एवं लताओं के नाम नीचे लिखिए—

……तुलसी……	………………………
………………………	………………………
………………………	………………………

3. आप नीम की डालियों पर रस्सी डालकर झूला झूलने का आनंद लेना चाहते हैं। आप वहाँ झूला डालने गए। कल्पना कीजिए कि नीम की डालियाँ आपसे बातें करने लगीं। उस संवाद को लिखिए—

नीम – अरे! बहुत दिन बाद आई/आए हो!

आप – ....

नीम – ....

आप – ....

नीम – ....

आप – ....

बूझो तो जानें

बीज, फूल, फल, पत्ते कड़वे
मैं औषध की धाम।
शीतल छाया नित मैं देती,
बूझो मेरा नाम।

स्वादहीन हूँ, रंग निराला,
मेरे बिना न एक निवाला।
भाप, बर्फ से मेरा नाता,
सबकी मैं तो प्यास बुझाता।

बिना पैर चलती रहती,
नहीं किसी से कुछ भी
कहती।
कोई मुझको देख न पाए,
नहीं चलूँ तो जग घबराए।

सरदी में सब पास बुलाते,
गरमी में मुझसे घबराते।
रंग सुनहरी, काया दमके,
मेरे दम पर दुनिया चमके।

पहेलियों के उत्तर

1.नीम 2.हवा 3.पानी 4.सूरज

मेरा पौधा

- आप मिट्टी अथवा टिन का खुले मुँह वाला बर्तन लीजिए (यदि कोई छोटा या बड़ा गमला मिल सकता है तो वह ले सकते हैं)।

- बड़ों की सहायता से बर्तन की तली के बीच में एक छेद कीजिए (यह छेद अतिरिक्त पानी के रिसाव के लिए है)।

- टूटे हुए घड़े/सुराही आदि के दो-तीन छोटे-छोटे टुकड़े लीजिए। यदि ये टुकड़े न मिलें तो छोटे कंकड़-पत्थर ले लीजिए। इन्हें गमले के छेद पर टिकाइए।

- गमले के आकार के अनुसार मिट्टी लीजिए (आप उसमें खाद मिला सकते हैं)।

- मिट्टी को भुरभुरा करके गमले या बर्तन में डालिए और मनपसंद पौधे का बीज बोइए।

- थोड़ा-सा पानी छिड़किए।

- प्रतिदिन अवलोकन कीजिए कि आपके द्वारा लगाया गया बीज कब अंकुरित होता है। अपने पौधे को बढ़ते हुए देखने का आनंद लीजिए।

भाँति-भाँति की पत्तियाँ

पत्तियाँ कई प्रकार की होती हैं।

कुछ छोटी तो कुछ बड़ी।

कुछ गोल और कुछ पक्षी के पंख जैसी।

हाथीकान पौधा (जायंट एलिफैंट-ईयर कोलोकेसिया) अरवी का एक प्रकार है। इसके पत्ते छह फीट तक लंबे होते हैं यानी अधिकतर मनुष्यों से लंबे।

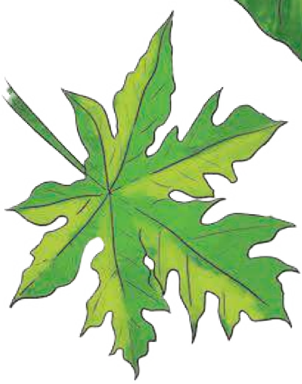

इमली की पत्तियाँ इतनी छोटी होती हैं कि हमारी छोटी उँगली के नाखून को भी नहीं ढँक सकतीं।

पपीते की पत्तियाँ तारे के आकार की होती हैं।

पीपल की पत्तियाँ मनुष्य के हृदय के आकार की होती हैं।

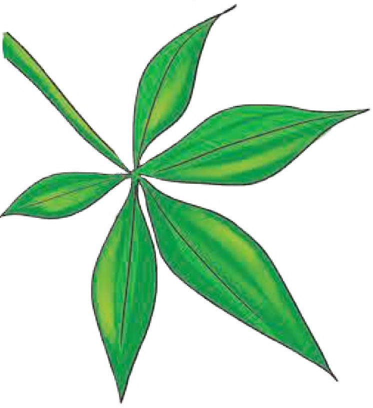

नारियल की पत्तियाँ कागजी पंखे जैसी दिखती हैं।

सेमल की पत्तियाँ हाथ के पंजे की तरह होती हैं।

कचनार की पत्तियाँ ऊँट के पैरों की तरह होती हैं।

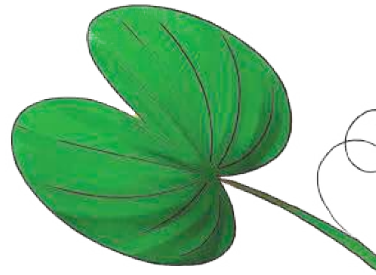

नागफनी की पत्तियाँ नुकीली और काँटेदार होती हैं। इन पौधों को कम पानी की आवश्यकता होती है।

केले के पत्ते इतने बड़े होते हैं कि इनका उपयोग थाली की तरह किया जाता है।

अब आप भी अपने आस-पास के पेड़-पौधों की पत्तियों को देखिए और उनके आकारों के बारे में जानिए।

– हरिनी नगेंद्र और सीमा मुंडोली

(प्रथम प्रकाशन से साभार)

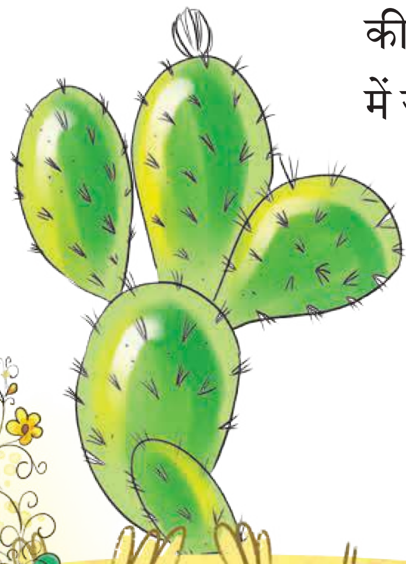

4

हमारा आहार

0431CH04

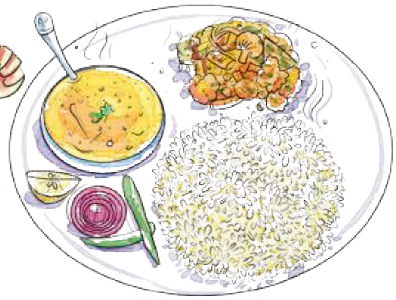

कैसा हो अपना आहार,
आओ मिलकर करें विचार।
चावल, दाल और सब्जी खाओ,
तन में चुस्ती-फुर्ती लाओ।

केवल आलू तुम मत लाना,
भिंडी, परवल, नेनुआ भी खाना।
दूध-दही तुम छककर खाओ,
फल-फूलों के बाग लगाओ।

आम-अमरूद, पपीता खाओ,
केला, बेल भी घर ले आओ।
खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा,
गरमी की हरते हैं पीड़ा।

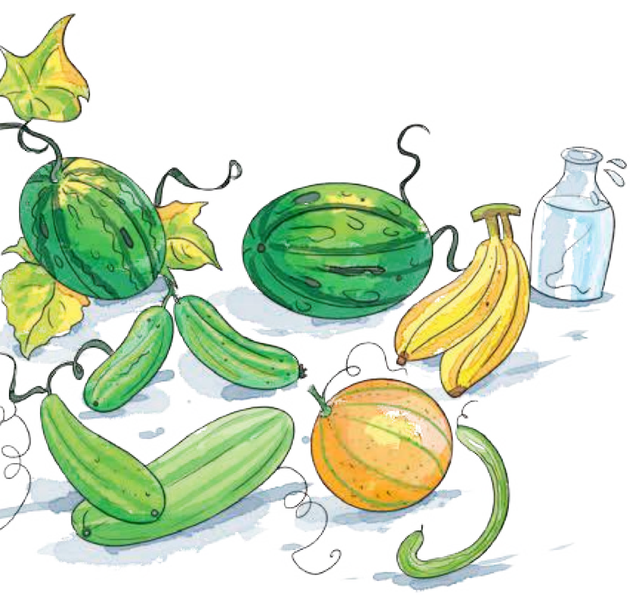

खूब करो पानी का व्यवहार,
इसकी महिमा अपरंपार।
भोजन में हो खूब सलाद,
इसका है अपना अंदाज।

मूली, टमाटर, गाजर खाना,
पालक को भी भूल न जाना।
भूँजा-सत्तू नियमित खाएँ,
वैद्य-हकीम घर न आएँ।

पेट से ज्यादा जब कोई खाए,
खाकर वह पीछे पछताए।
ताजा खाना हरदम खाओ,
नहीं बहाना कभी बनाओ।

जब खाते हैं ढंग से खाना,
व्याधि को ना मिले बहाना।
ऐसा हो अपना आहार,
खाकर हम ना पड़ें बीमार।

– कोंपल, भाग 2, कक्षा 4
(रा.शि.शो.प्र.प., बिहार से साभार)

बातचीत के लिए

दिए गए चित्र पर बातचीत कीजिए—

1. चित्र में आपको क्या-क्या दिख रहा है?
2. आपके लिए आहार क्यों महत्वपूर्ण है?
3. आपको क्या खाना पसंद है?
4. खाने में सावधानी रखना क्यों आवश्यक है?
5. क्या आपको लगता है कि केवल आहार ही हमें स्वस्थ रख सकता है या स्वस्थ रहने के लिए कुछ और भी आवश्यक है? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

कविता के आधार पर

1. नीचे एक तालिका दी गई है। दिए गए उदाहरण के आधार पर तालिका को पूरा कीजिए—

फलों के नाम	साग-भाजियों के नाम	दूध से बने उत्पादों/ सामानों के नाम	सलाद की सामग्री के नाम
आम	परवल	दही	गाजर
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों का चयन करके उनके सामने दी गई जगह पर सेब का चित्र (🍎) बनाइए—**

(क) चावल, दाल और साग-भाजी खाने के लाभ हैं—

i. शरीर मोटा होता है।

ii. शरीर सुस्त रहता है।

iii. शरीर चुस्त और फुर्तीला बनता है।

iv. शरीर पतला बनता है।

(ख) गरमी के मौसम में किन वस्तुओं का भरपूर सेवन करना चाहिए?

i. खरबूज

ii. ककड़ी

iii. खीरा

iv. चाय-कॉफी

(ग) हम खाकर कब पछताते हैं?

i. जब कम खाते हैं।

ii. जब अधिक खाते हैं।

iii. जब दूसरा अधिक खाता है।

iv. इनमें से सभी

(घ) किन खाद्य पदार्थों को नियमित खाने का सुझाव दिया गया है?

i. नमकीन और चिप्स

ii. भूँजा और सत्तू

iii. बर्फ़ और आइसक्रीम

iv. पकौड़े और पराठे

3. **नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—**

(क) हमें फलों और फूलों के बगीचे क्यों लगाने चाहिए?

(ख) हमें भूख से अधिक क्यों नहीं खाना चाहिए?

(ग) "ताजा खाना हरदम खाओ, नहीं बहाना कभी बनाओ।" इस पंक्ति के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?

(घ) भोजन का सेवन किस प्रकार करने की सलाह दी गई है और क्यों?

4. **मिलान कीजिए—**

पेट से ज्यादा जब कोई खाए, •	• खाकर हम ना पड़ें बीमार।
खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा, •	• इसका है अपना अंदाज।
ऐसा हो अपना आहार, •	• व्याधि को ना मिले बहाना।
भोजन में हो खूब सलाद, •	• खाकर वह पीछे पछताए।
जब खाते हैं ढंग से खाना, •	• गरमी की हरते हैं पीड़ा।

5. **चित्र में दी गई साग-भाजियों को पहचानिए और उनके नाम नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए—**

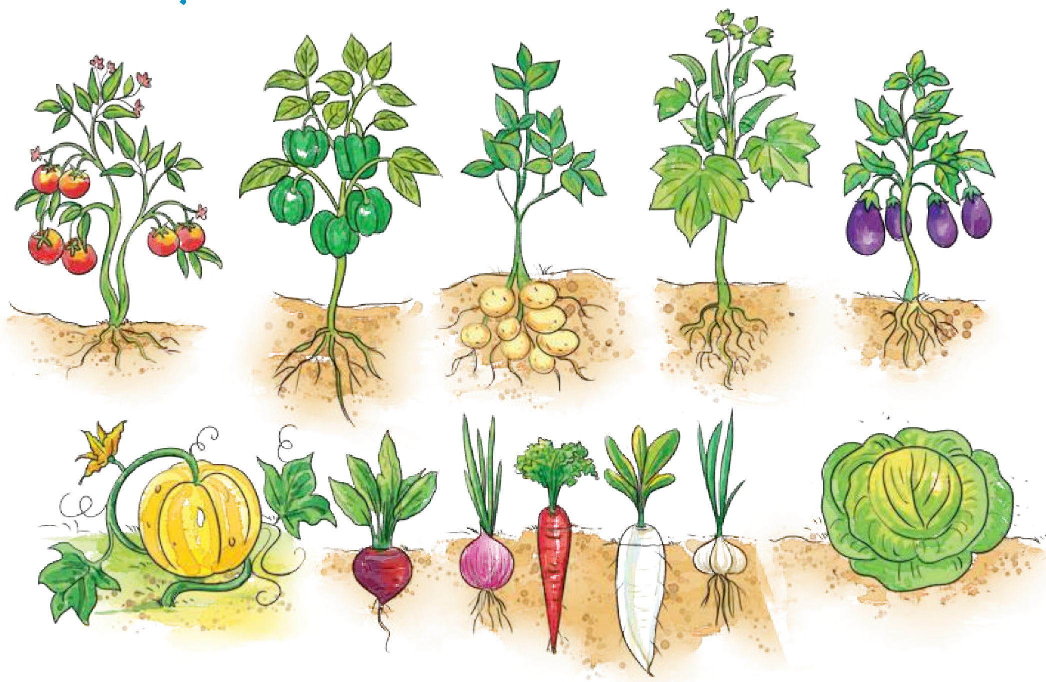

....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

6. **नीचे दिए गए कथनों को 'हाँ जी हाँ' और 'ना जी ना' से पूरा कीजिए—**

(क) तुम केवल आलू ही लाना,
मुझको है बस आलू खाना। ......ना जी ना, ना जी ना........

(ख) दूध-दही तुम छककर खाना,
हरी सब्जियाँ भूल ना जाना। ....

(ग) खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा,
खाने पर होती है पीड़ा। ....

(घ) भोजन में हो खूब सलाद,
चौबीस घंटे रखना याद। ....

(ङ) ताजा खाना हरदम खाओ,
रोग-व्याधि को दूर भगाओ। ....

अनुमान और कल्पना

1. अगर आपके पास एक छोटा-सा खेत होता तो आप उसमें कौन-से फल और साग-भाजी उगाते और क्यों?
2. अगर आप इस कविता में कुछ और खाद्य पदार्थ जोड़ सकते तो आप क्या जोड़ते और क्यों?
3. कल्पना कीजिए कि आपने स्वस्थ आहार से संबंधित एक प्रतियोगिता में भाग लिया है। प्रतियोगिता में आप कौन-से तीन सबसे अच्छे खाद्य पदार्थ चुनेंगे?

भाषा की बात

1. **रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

(क) खाने में सलाद अधिक और तले हुए व्यंजन .... खाएँ।

(ख) अच्छी आदतों को भूलना नहीं, ... रखना चाहिए।

(ग) गरमी के मौसम में सूती और .... के मौसम में ऊनी कपड़े पहनने चाहिए।

(घ) सही समय पर सोइए और सही समय पर ....।

2. 'नियमित' शब्द 'नियम' में 'इत' जोड़कर बना है। ऐसे ही नीचे दिए गए शब्दों में 'इत' लगाकर नए शब्द बनाइए—

(क) नियम — ......नियमित......

(ख) प्रमाण — ....

(ग) शिक्षा — ....

(घ) मोह — ....

(ङ) चर्चा — ....

(च) सुगंध — ....

3. वर्ग पहेली में नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द ढूँढ़िए और उनसे वाक्य बनाइए—

आहार – ...भोजन..., हरदम – ...., बाग – ....

सब्जी – ...., पीड़ा – ...., अपरंपार – ....

अ	म	भो	जी	ह	छो
सी	ट	ज	तो	मे	फ
म	ख	न	ली	शा	ठे
खी	पो	बे	लो	च	दु
त	र	का	री	ल	ख
म	उ	प	व	न	म

भोजन – भैया ने बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाया है।

....

....

....

....

....

4. नीचे दिए गए शब्दों में से आपको केवल वर्ण बदलकर फल अथवा साग-तरकारी का नाम लिखना है। ध्यान रखिए कि मात्रा न बदले—

- भालू – आलू
- मीरा – ....
- चौकी – ....
- मकड़ी – ....
- मेला – ....
- जाम – ....

- लंगूर – ....
- गोली – ....
- जेब – ....
- चालक – ....
- नीची – ....
- अंतरा – ....

पता लगाइए

अपने माता-पिता/शिक्षकों की सहायता से पता लगाइए कि आपके यहाँ तालिका में दी गईं साग-तरकारियों को क्या कहा जाता है। इनके अतिरिक्त अन्य साग-तरकारियों के भी प्रचलित तथा स्थानीय नाम लिखिए—

साग-तरकारी का प्रचलित नाम	आपका प्रदेश/क्षेत्र	स्थानीय नाम
प्याज	महाराष्ट्र	कांदा
कद्दू	....	....
तोरई	....	....

टिंडा	....	....
फूलगोभी	....	....
भिंडी	....	....
करेला	....	....
....	....	....
....	....	....

समझिए और लिखिए

1. **शिक्षक की सहायता से पौधे के विभिन्न भागों की पहचान कीजिए तथा उनके नाम लिखिए—**

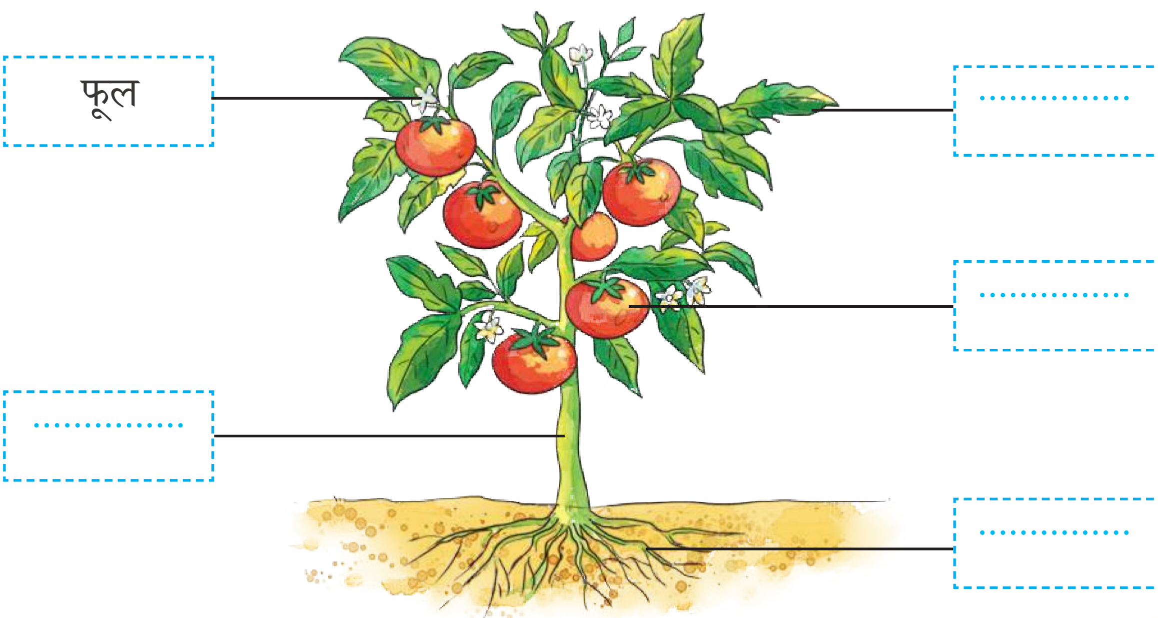

2. नीचे दिए चित्र को देखकर उस पर दस वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

आनंदमयी गतिविधि

1. नीचे दी गई सारणी में आपको स्वास्थ्यवर्धक और हानिकारक खाद्य/पेय पदार्थों के नाम लिखने हैं। आपको यह तय करना है कि कौन-सा खाद्य पदार्थ स्वास्थ्यवर्धक है और कौन-सा हानिकारक।

क्रम संख्या	स्वास्थ्यवर्धक	हानिकारक
1.	ताजा फल/छाछ	कोल्ड ड्रिंक
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

2. पुरानी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से भिन्न-भिन्न फलों और साग-भाजियों के चित्र काटिए। इन चित्रों का कोलाज बनाकर उसे कोई प्यारा-सा नाम भी दीजिए।

3. एक डिब्बे में कागज की पर्चियाँ लीजिए जिन पर कुछ फलों और साग-भाजियों के नाम लिखे होंगे। डिब्बे में से एक पर्ची निकालिए। अब आप उस पर्ची पर लिखे हुए फल या साग-भाजी के गुण और विशेषताएँ बताइए। आप उस फल या साग-भाजी की विशेषताएँ ऐसे बताएँ, जैसे आप ही वह फल या साग-भाजी हैं।

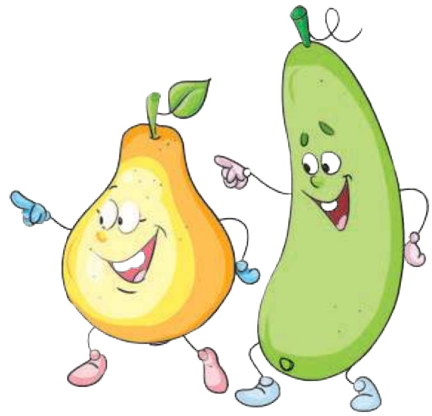

बूझो तो जानें

कड़वी सब्जी मैं कहलाता,
रहता सदा अकेला।
मध्य हटे कला बन जाऊँ,
प्रथम हटे तो रेला।

हरी थी, मन भरी थी,
लाख मोती जड़ी थी।
किसानों के खेत में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
खाने के आता हूँ काम।
मध्य कटे हवा हो जाता,
अंत कटे तो हल कहलाता।

पहेलियों के उत्तर

1. करेला 2. भुट्टा 3. हलवा

5 आसमान गिरा

0431CH05

एक खरगोश था। वह पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक जोर की आवाज हुई — धम्म! खरगोश चौंककर उठ गया। वह बोला, "अरे! क्या गिरा?"

खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा आसमान गिर रहा है। खरगोश डर गया और भागने लगा।

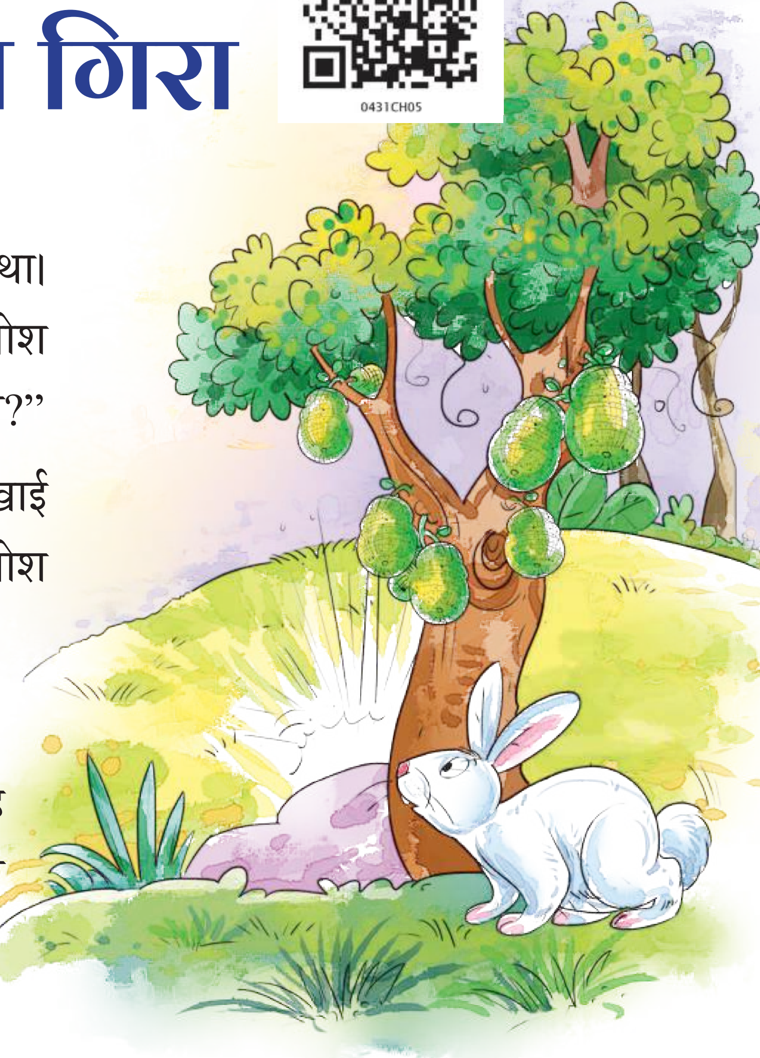

भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली। उसने पूछा, "खरगोश भाई, कहाँ भागे जा रहे हो? जरा सुनो तो।" खरगोश भागते-भागते बोला, "आसमान गिर रहा है, भागो! भागो! जल्दी भागो!"

लोमड़ी भी भागने लगी। आगे जाकर उन्हें एक भालू मिला। भालू बोला, "ठहरो, ठहरो! कहाँ भागे जा रहे हो?" खरगोश और लोमड़ी बोले, "भागो! तुम भी भागो। आसमान गिर रहा है!" भालू भी उनके साथ भागने लगा। खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले। हाथी बोला, "अरे! सब क्यों भागे जा रहे हो? ठहरो, कुछ बताओ तो।"

भालू बोला, "आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो।" हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे — आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमड़ी, उसके पीछे भालू और सबसे पीछे हाथी। भागते-भागते उन्हें शेर मिला। उसने पूछा, "तुम सब क्यों भागे जा रहे हो?"

हाथी बोला, “आसमान गिर रहा है। तुम भी भागो!” शेर ने दहाड़कर कहा, “आसमान गिर रहा है! कहाँ गिर रहा है? रुको।” यह सुनकर सभी जानवर रुक गए। शेर ने पूछा, “किसने कहा आसमान गिर रहा है?” हाथी बोला, “भालू ने कहा।” भालू बोला, “मुझसे तो लोमड़ी ने कहा।”

लोमड़ी बोली, “मुझसे तो खरगोश ने कहा... सबसे पहले इसी ने कहा था।” खरगोश चुप रहा। शेर बोला, “कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान?” खरगोश ने कहा, “मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।” शेर ने कहा, “चलो, चलकर देखें।”

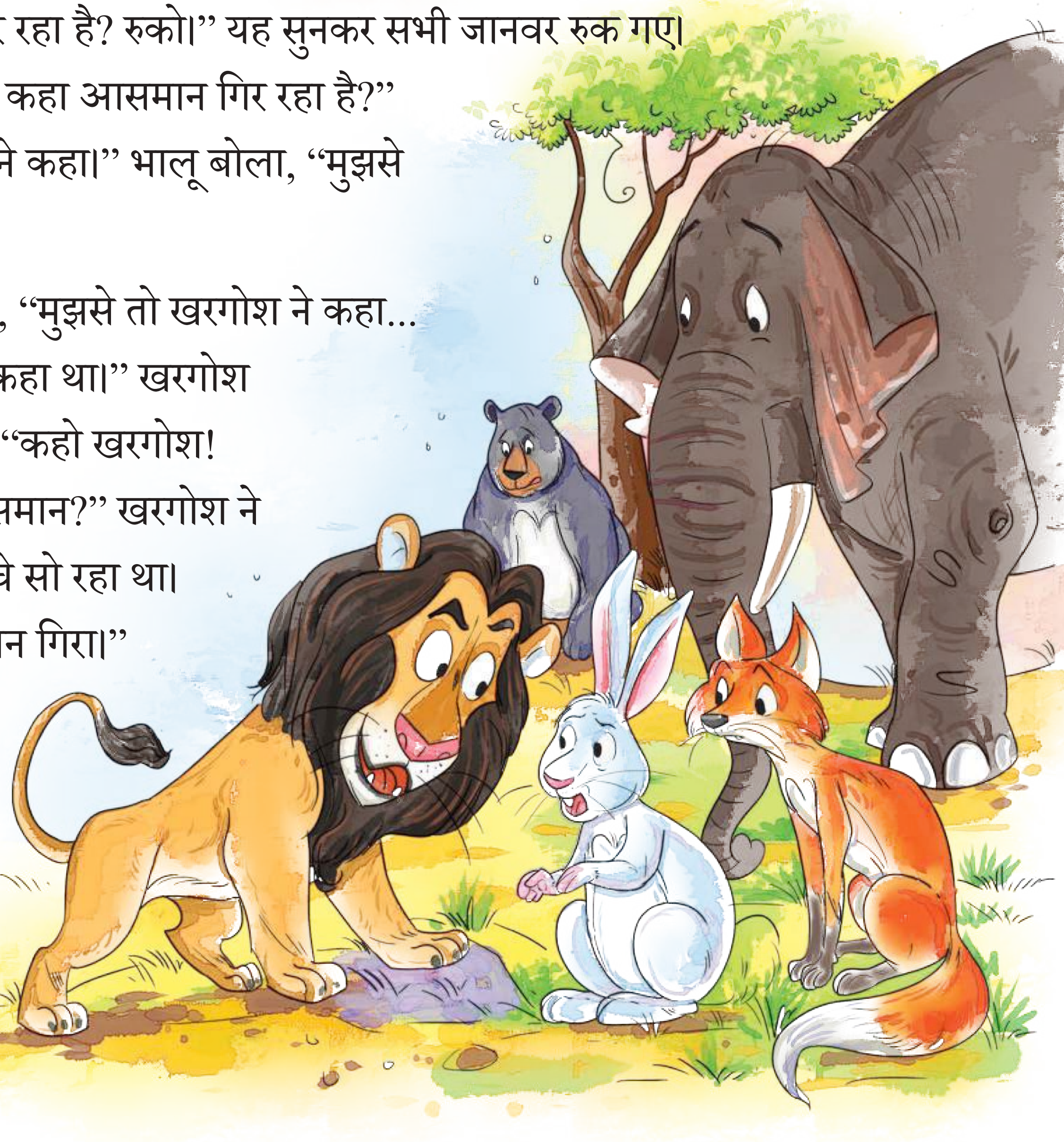

वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा। वहाँ एक बड़ा-सा फल गिरा पड़ा था। तभी वैसा ही एक और फल गिरा — धम्म! खरगोश चौंक गया। शेर बोला, “तो यही तुम्हारा आसमान था। लो फिर आसमान गिरा। भागो!” और सभी हँसने लगे।

बातचीत के लिए

1. खरगोश को ऐसा क्यों लगा कि आसमान गिर रहा है? यदि आप खरगोश के स्थान पर होते तो क्या करते?
2. क्या आपने कभी आसमान से किसी वस्तु को गिरते हुए देखा है? अपने-अपने अनुभव साझा कीजिए।
3. यदि आप शेर के स्थान पर होते तो खरगोश को किस प्रकार समझाते? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. इस कहानी से मिलती-जुलती कोई दूसरी घटना या कहानी कक्षा में सुनाइए।

पाठ के भीतर

निम्नलिखित प्रश्नों के उचित उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए—

(क) डरकर भागते हुए खरगोश को सबसे पहले कौन मिला?

i. लोमड़ी ☐ ii. शेर ☐

iii. भालू ☐ iv. हाथी ☐

(ख) हाथी ने जब शेर से कहा कि आसमान गिर रहा है, तब शेर ने क्या किया?

i. बात सुनकर चला गया। ☐

ii. वह मुस्कुराने लगा। ☐

iii. वह भी सबके साथ भागने लगा। ☐

iv. उसने सबको रोककर प्रश्न पूछा। ☐

(ग) "तो यही तुम्हारा आसमान था। लो फिर आसमान गिरा। भागो!" यह कथन किसके द्वारा कहा गया है?

i. हाथी ☐ ii. लोमड़ी ☐

iii. भालू ☐ iv. शेर ☐

(घ) आपके अनुसार खरगोश के आस-पास कौन-सा फल गिरा होगा?

i. कद्दू ☐ ii. कटहल ☐

iii. तरबूज ☐ iv. पपीता ☐

सोचिए और लिखिए

1. इस कहानी में किन-किन पात्रों का उल्लेख हुआ है? उनके नाम क्रम से लिखिए।
2. "आसमान गिर रहा है, भागो! भागो! जल्दी भागो!" खरगोश की यह बात सुनकर आपके अनुसार पशुओं को क्या करना चाहिए था?

3. कहानी में आपको कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?

4. यदि शेर भी भगदड़ में शामिल हो जाता और प्रश्न न पूछता तो क्या होता?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित पंक्तियों को नीचे दिए गए उचित विराम चिह्नों की सहायता से पूरा कीजिए—

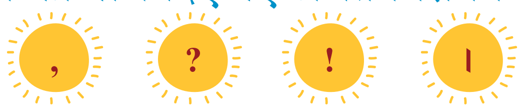

(क) अरे इतना बड़ा हाथी

(ख) मैंने खरगोश लोमड़ी भालू हाथी और शेर जंगल में देखे हैं

(ग) ये पुस्तकें किसकी हैं

(घ) वाह कितने सुंदर फूल हैं

2. कहानी में एक कथन आया है—

"भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली।" इस वाक्य में 'भागते-भागते' शब्द-युग्म का प्रयोग हुआ है।

अब निम्नलिखित शब्द-युग्मों की सहायता से एक-एक वाक्य लिखिए—

(क) इधर-उधर – ....

(ख) कभी-कभी – ....

(ग) टेढ़ी-मेढ़ी – ....

(घ) लंबे-चौड़े – ....

3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और दिए गए उदाहरण के अनुसार प्रश्न बनाइए—

उदाहरण – भागते-भागते उन्हें शेर मिला।

यहाँ 'कौन' का प्रयोग करते हुए प्रश्न बनेगा—

भागते-भागते उन्हें कौन मिला?

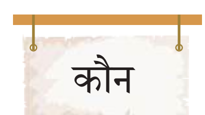

(क) खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था।

....

(ख) खरगोश भागते-भागते बोला।

....

(ग) वहीं धम्म से आसमान गिरा।

....

(घ) खरगोश ने लोमड़ी से कहा, "मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।"

....

कहाँ | कब | कैसे | क्या

4. **नीचे दिए गए शब्दों में मात्रा लगाकर और हटाकर नए-नए शब्द बनाइए। उदाहरण के अनुसार इन शब्दों से वाक्य बनाकर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।**

उदाहरण – बस → बीस तथा चला → चल

(क)	यह	–	कही	– ....
(ख)	भर	–	पढ़ी	– ....
(ग)	रह	–	केला	– ....
(घ)	फल	–	सेब	– ....

5. **आसमान पर आधारित कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं। इन मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(क) आसमान छूना
(ख) आसमान गिरना
(ग) आसमान सिर पर उठाना
(घ) जमीन-आसमान एक करना

6. चित्र देखकर वाक्य लिखिए—

→ खरगोश डर गया और भागने लगा।

....। ←

→ ....।

....। ←

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए कि यदि खरगोश के स्थान पर शेर और शेर के स्थान पर खरगोश होता तो क्या होता। अपनी कहानी बनाइए और कक्षा में सहपाठियों को सुनाइए।

2. कहानी में खरगोश कुछ गिरने की ध्वनि सुनकर घबरा गया। यदि ऐसी ही ध्वनि हाथी ने सुनी होती तो क्या वह भी इतना घबराता? सोचिए और अपनी बात सहपाठियों को सुनाइए।

3. यदि खरगोश के स्थान पर कौआ चौंक जाता और उड़ने लगता तो उसे रास्ते में कौन-कौन मिलता और उससे क्या-क्या पूछता? कल्पना कीजिए और एक कहानी सुनाइए।

ढूँढ़िए और गिनिए

नीचे दिखाए गए चित्र में पात्रों की संख्या गिनकर रिक्त स्थान पर लिखिए —

कौन कितनी बार आया?

कलाकारी

1. दिए गए चित्र में रंग भरिए —

2. नीचे दिए गए चित्रों के अनुसार शिक्षक की सहायता से कागज की पुतलियाँ बनाकर इस कहानी का अभिनय कक्षा में कीजिए।

3. नीचे दिए गए चित्रों के अनुसार शिक्षक/अभिभावक की सहायता से कागज की छतरी बनाइए।

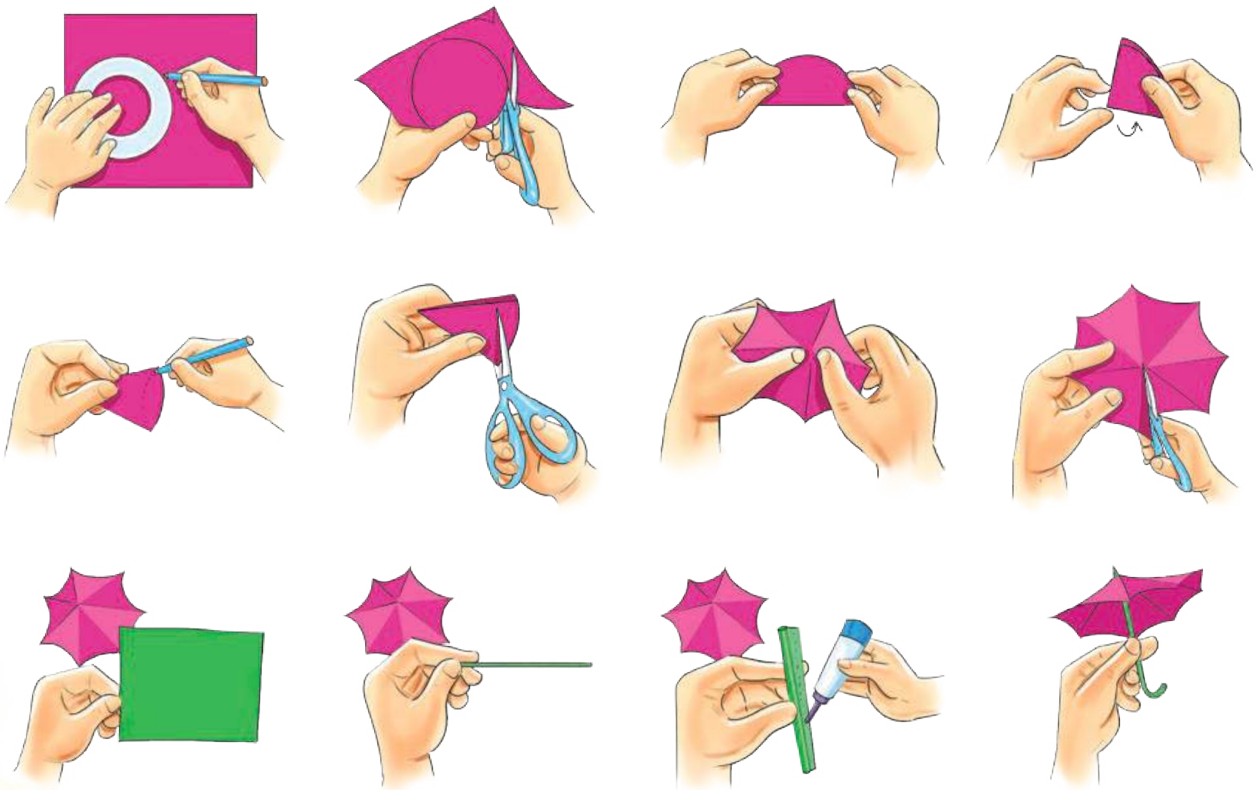

चेरापूँजी के मेहमान

जुलाई का महीना था। एक महीने से बारिश एक मिनट के लिए भी नहीं थमी थी। उन दिनों मैं सोहरा (आज का चेरापूँजी) के स्टेट बैंक में काम करता था। मेरा घर बैंक के ठीक ऊपर वाले माले पर था। एक दिन जब मैं घर आया तो देखा घर पानी से भरा हुआ है। पूरा घर पानी-पानी था। मुझे लगा कि सेंगमा (देखभाल करने वाला) से कोई नल खुला रह गया होगा।

मैंने सारे नल देखे। सभी अच्छी तरह से बंद थे। मैंने तुरंत सेंगमा को बैंक से बुलवाया। वह भी घर देखकर हैरान था। बोला, "सर, कहीं पानी की टंकी तो लीक नहीं कर रही?" हमने उसे भी देखा पर कुछ समझ नहीं आ रहा था कि बात क्या है।

तभी मेरा टिफिन लेकर कांग आईं। उन्होंने पहले घर को देखा फिर मुस्कराते हुए पूछा, "खिड़की खुली थी क्या बाबा?" मैंने कहा, "हाँ।" वे हँसीं और बोलीं, "खिड़की खुली

रखेगा तो बादल तो घर में आएगा ही न।”
मैं बोला, “बादल!” वे बोलीं, “हाँ, बादल। बरसाती दिनों में बादल बहुत नीचे तैरते हैं। ऐसे में खिड़की-दरवाजे खुले मिल जाएँ तो वे घर को अपना समझकर चले आते हैं और सब कुछ गीला कर जाते हैं।”

– *मिताली अहीर*

(इकतारा ट्रस्ट की पत्रिका 'साइकिल' से साभार)

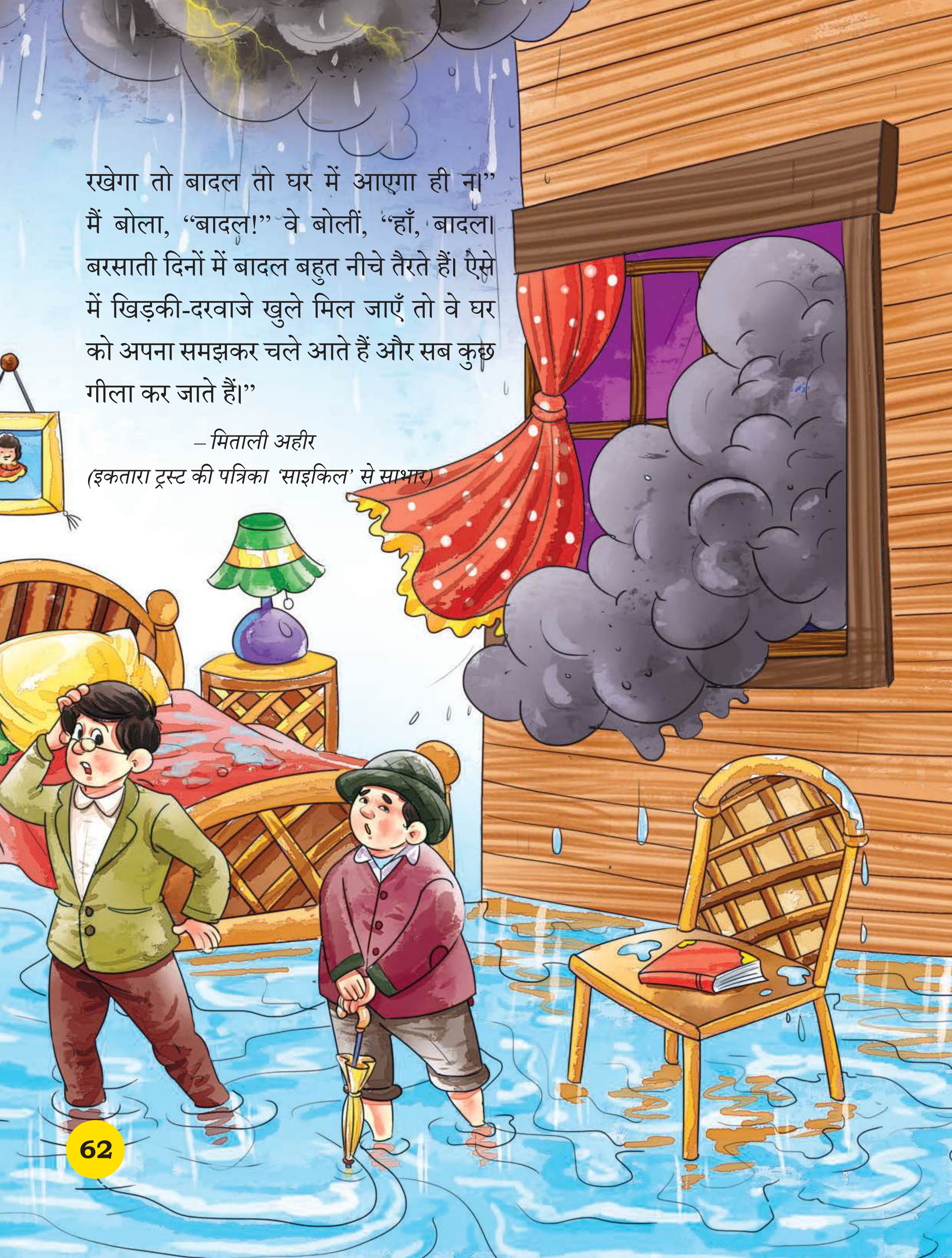

6 जयपुर से पत्र

0431CH06

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम! परसों रात को हम सकुशल जयपुर पहुँच गए। हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही। अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा। यहाँ मौसम अच्छा है।

कल सुबह जलपान करके हम सब लोग जयपुर की सैर के लिए निकले। सबसे पहले हमने हवामहल देखा। हवामहल के पास ही जंतर-मंतर है। इस वेधशाला का निर्माण राजा सवाई जयसिंह ने किया था। हमने घूम-घूमकर जंतर-मंतर देखा। इसके बाद हम रामनिवास बाग गए। यहाँ एक अच्छा कला-संग्रहालय है। यह दर्शनीय है। संग्रहालय में जयपुर के राजा-महाराजाओं के कपड़े, अस्त्र-शस्त्र और उनके चित्र रखे हुए हैं।

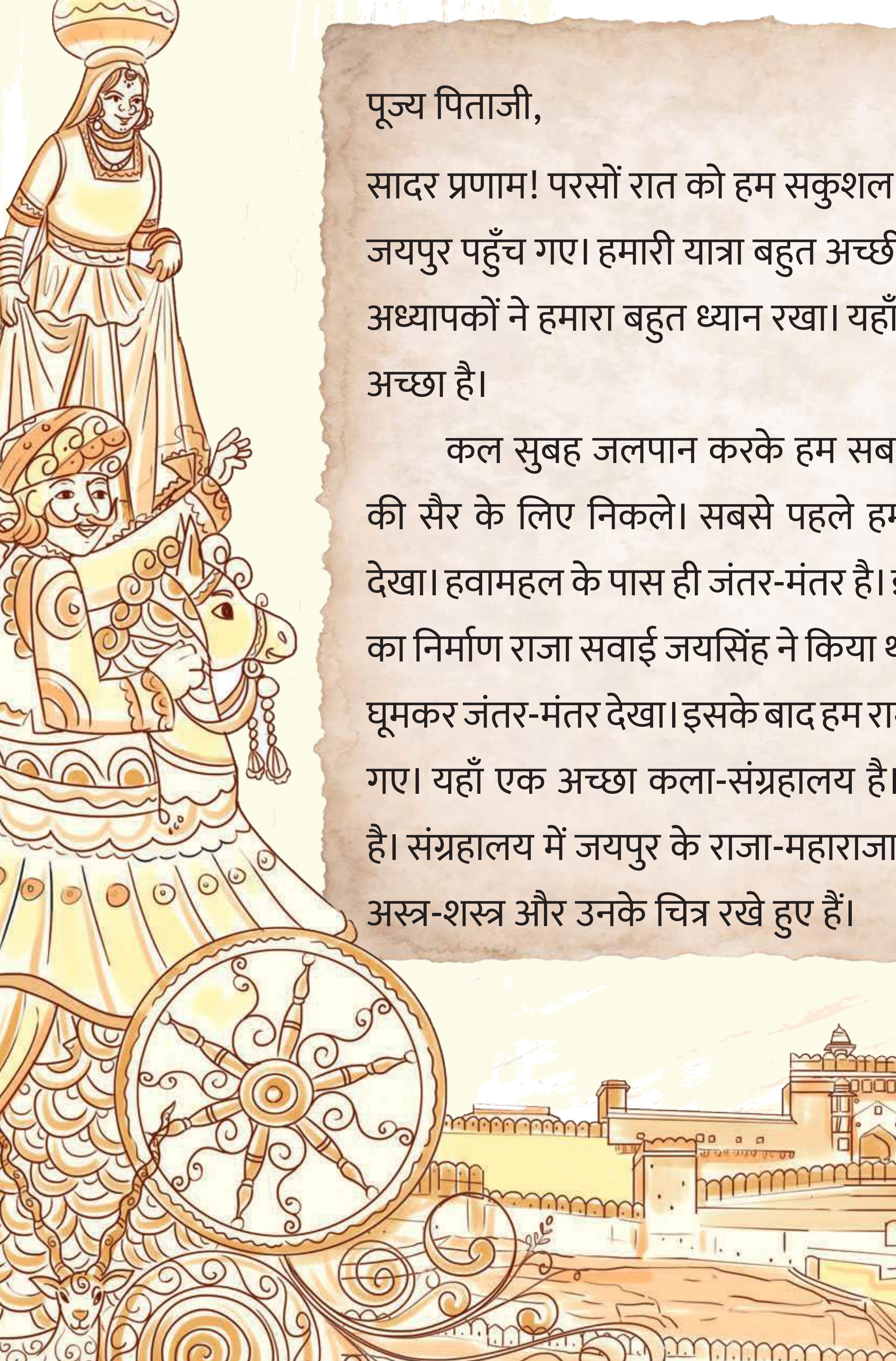

जयपुर से लगभग चौदह किलोमीटर की दूरी पर आमेर का दुर्ग है। यह बहुत पुराना और बड़ा है। आमेर में शीशमहल देखने योग्य है। शीशमहल के पास ही शिला देवी का मंदिर है। मंदिर में दर्शन करने के बाद हम नगर वापस आए। रात को हमने राजस्थान के लोकनृत्य देखे। फिर राजस्थान का विशेष व्यंजन दाल-बाटी चूरमा खाया। आज दोपहर पश्चात् हम झीलों के नगर उदयपुर जाएँगे। अगला पत्र उदयपुर से लिखूँगा।

माताजी को मेरा प्रणाम और लता बहन को बहुत प्यार।

आपका पुत्र

अमर

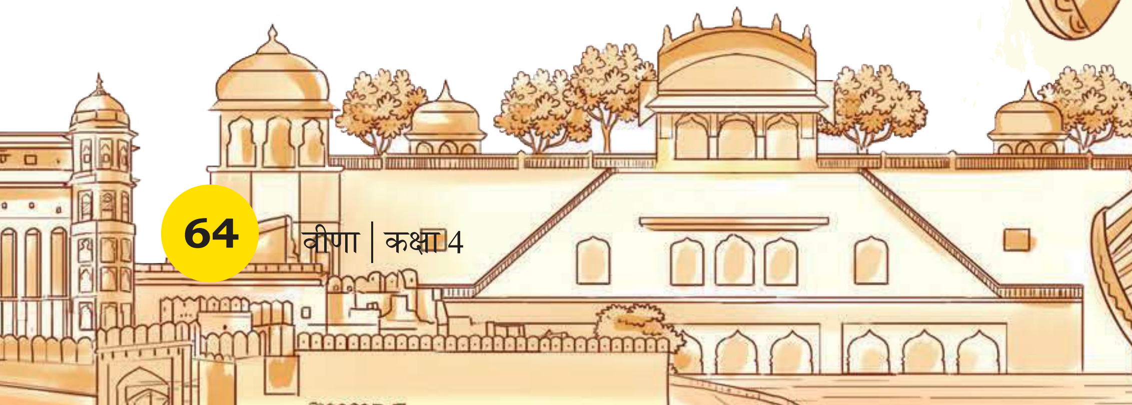

बातचीत के लिए

1. आपको घूमना कैसा लगता है?
2. अगर आपके आस-पास कोई ऐसा स्थान है जहाँ बाहर से लोग घूमने आते हैं तो उसके विषय में बताइए।
3. अगर आपको किसी स्थान पर जाने का अवसर मिले तो आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?
4. यदि आप या आपके परिवार का कोई सदस्य कहीं पर घूमने गया हो तो उसके विषय में बताइए।

समझ की बात

नीचे कुछ बहुविकल्पीय प्रश्न दिए गए हैं। प्रश्नों के उत्तर में एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सही विकल्प के आगे (☺) बनाइए—

1. शीशमहल है—

   (क) शिला देवी मंदिर के पास

   (ख) आमेर के दुर्ग में

   (ग) हवामहल के पास

   (घ) रामनिवास बाग में

2. पत्र—

   (क) जयपुर से लिखा गया था।

   (ख) यात्रा के बाद लिखा गया था।

   (ग) पिता को लिखा गया था।

   (घ) अमर ने लिखा था।

3. निम्नलिखित में से किसे सैर (भ्रमण) नहीं कहा जाएगा—

(क) ताजमहल देखने के लिए आगरा जाना

(ख) बीमारी के उपचार के लिए नगर जाना

(ग) पढ़ाई के लिए शिलांग जाना

(घ) भारत दर्शन पर जाना

अपनी बात

अमर के पत्र का एक अंश नीचे दिया गया है। इसे ध्यान से पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी समझ के अनुसार लिखिए—

> "परसों रात को हम सकुशल जयपुर पहुँच गए। हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही। अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा। यहाँ मौसम अच्छा है।"

यात्रा में ऐसा क्या-क्या हुआ होगा कि अमर ने अपने पत्र में लिखा—

(क) परसों रात को हम सकुशल जयपुर पहुँच गए।

(ख) हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही।

(ग) अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा।

(घ) यहाँ मौसम अच्छा है।

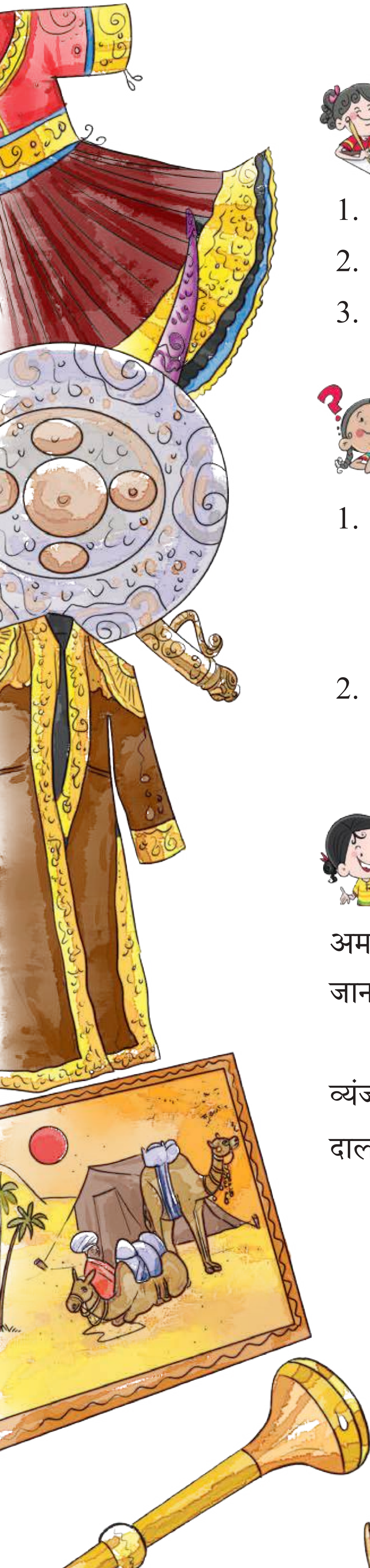

सोचिए और लिखिए

1. अमर ने जयपुर में क्या-क्या देखा?
2. उसने कला-संग्रहालय को दर्शनीय क्यों बताया?
3. उसने आमेर के दुर्ग को बहुत बड़ा और पुराना क्यों कहा है?

अनुमान और कल्पना

1. निम्नलिखित के बारे में अनुमान लगाइए कि ये क्या और कैसे होंगे?

   (क) जंतर-मंतर　　(ख) रामनिवास बाग

   (ग) शीशमहल　　(घ) हवामहल

2. अनुमान लगाकर बताइए कि उदयपुर को झीलों का नगर क्यों कहा जाता है।

खान-पान

अमर ने जयपुर में दाल-बाटी चूरमा खाया। आइए, इस व्यंजन के बारे में जानते हैं।

दाल-बाटी चूरमा एक पारंपरिक राजस्थानी व्यंजन है। इसमें तीन मुख्य व्यंजन होते हैं—

दाल : यह अरहर, मूँग, चने या मसूर की दाल से बनती है। इसे कई मसालों के साथ पकाकर बनाया जाता है जिससे इसका स्वाद बढ़ जाता है। हरा धनिया इसके स्वाद को और भी बढ़ा देता है।

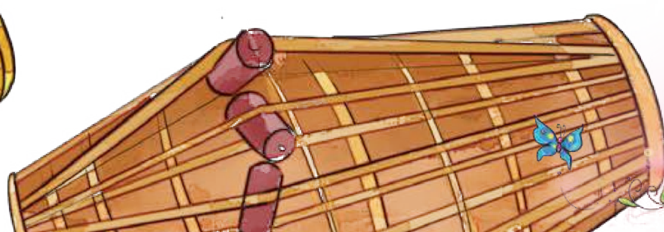

बाटी : यह गेहूँ के आटे से बनी गोल लोइयाँ होती हैं जिन्हें उपले और लकड़ियों की आग में सेंका जाता है। फिर तैयार गरम बाटियों को घी में डुबोया जाता है। उसके बाद इसे खाने के लिए परोसा जाता है। ये बाटियाँ बाहर से कुरकुरी और अंदर से मुलायम होती हैं।

चूरमा : यह थोड़े मोटे आटे से बनता है। इसे बनाने के लिए पहले बाटी अथवा मोटी रोटी बनाई जाती है। फिर इसे मूसल की सहायता से ओखली में कूटा जाता है। जब यह बारीक हो जाता है, तब इसमें घी, सूखे मेवे और बूरा (गुड़ अथवा चीनी से मिलता-जुलता पदार्थ) मिला दिया जाता है। आधुनिक समय में इसे बनाने की विधि में कुछ परिवर्तन आ गए हैं।

आपकी रुचि का व्यंजन

अब आप अपने रुचिकर व्यंजनों में से किसी एक के विषय में बताइए जो आपके घर में विशेष अवसरों पर बनाया जाता है। संक्षेप में बताइए कि यह कैसे तैयार किया जाता है और इसमें क्या-क्या सामग्री डाली जाती है।

उपला, जिसे 'गोइठा' अथवा 'कंडा' भी कहा जाता है गाय या भैंस के गोबर से बना एक पारंपरिक ईंधन है। इसे गोबर को हाथ से आकार देकर और धूप में सुखाकर बनाया जाता है।

इन्हें भी जानिए

डाक पेटी (पोस्ट बॉक्स)

डाक पेटी एक लाल रंग की पेटी होती है। इसका प्रयोग भेजी जाने वाली चिट्ठियों का संग्रह करने के लिए किया जाता है। जब हमें किसी को चिट्ठी भेजनी होती है तो हम उस पर सही पता लिखकर डाक पेटी में डाल देते हैं। फिर डाकघर (पोस्ट ऑफिस) वाले डाकिया भैया/बहना इस डाक पेटी से चिट्ठियाँ निकालकर डाकघर ले जाते हैं। डाकघर से चिट्ठियाँ पते पर लिखे नगरों के डाकघरों को भेजी जाती हैं। उसके पश्चात् डाकिया भैया/बहना उन्हें सही पते पर देने जाते हैं।

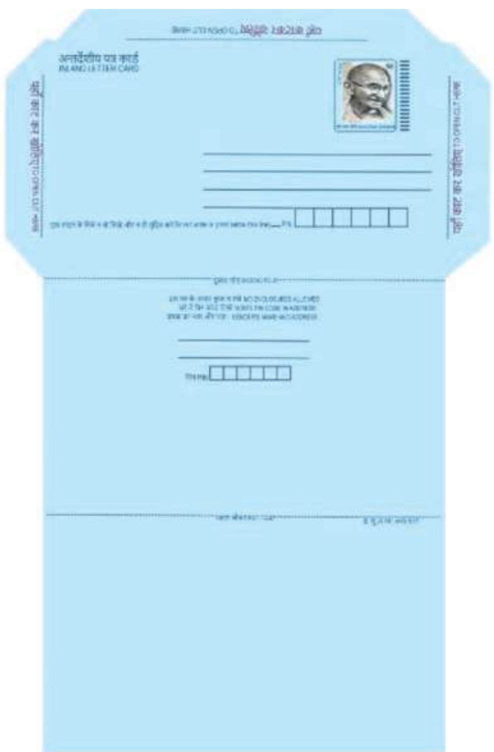

पिनकोड

पिनकोड (PIN Code) छह अंकों की संख्या होती है। इसे किसी विशेष क्षेत्र की पहचान के लिए प्रयोग किया जाता है। यह मुख्य रूप से डाक (चिट्ठी और पार्सल) भेजने और प्राप्त करने में सहायता करता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी गाँव या नगर में कोई चिट्ठी भेजनी हो तो उस स्थान का पिनकोड डालकर यह सुनिश्चित किया जाता है कि चिट्ठी सही पते पर पहुँचे। इसका पहला अंक राज्य को बताता है। दूसरा और तीसरा अंक ज़िले को बताता है। अंतिम तीन अंक डाकघर की पहचान बताते हैं।

चिट्ठी आई है

पत्र लिखना एक बहुत पुरानी और आनंददायक कला है। सोचिए कि मोबाइल फोन, ईमेल या व्हाट्सएप आने से पहले लोग एक-दूसरे से कैसे संवाद करते थे। हाँ, वे पत्र लिखते थे! पत्र एक संदेश होता है जिसे कागज पर लिखा जाता है और डाक के द्वारा दूर रहने वाले मित्रों तथा सगे-संबंधियों को भेजा जाता है।

पत्र कैसे लिखें?

प्रारंभ– सबसे पहले आप ऊपर दाईं ओर दिनांक लिखें ताकि पत्र पाने वाले को पता चले कि यह कब लिखा गया था।

संबोधन– संबोधन में पूज्य या आदरणीय माँ अथवा पिताजी या मेरे प्रिय मित्र लिख सकते हैं।

अभिवादन– संबोधन के बाद अभिवादन अवश्य लिखें, जैसे— नमस्ते, प्रणाम, आशीर्वाद आदि।

आपकी बात– अभिवादन के बाद पत्र के माध्यम से आप क्या कहना चाहते हैं, वह लिखें।

अंतिम पंक्ति – घर के अन्य लोगों का अभिवादन करें, जैसे— बड़ों को प्रणाम और छोटों को प्यार।

समापन– अंत में आप आपका/आपकी प्यारा बेटा/प्यारी बेटी या आपका प्रिय मित्र और फिर अपना नाम लिखें।

पत्र लिखते समय आपको अपनी भावनाओं को कागज पर उतारने का अवसर मिलता है। जब दूसरा व्यक्ति इसे पढ़ता है तो उसे ऐसा लगता है कि आप उसके पास ही बैठे हैं और उससे बातें कर रहे हैं। और हाँ, पत्र को लिफ़ाफ़े में डालना न भूलें। लिफ़ाफ़े पर एक डाक टिकट भी चिपकाएँ और साफ अक्षरों में जिसे पत्र भेज रहे हों, उसका पूरा पता पिनकोड सहित लिखें।

आजकल ऐसे पत्र कम लिखे जाते हैं, फिर भी वे बहुत विशेष होते हैं। तो क्या आप किसी को पत्र लिखने का सोच रहे हैं? इसे लिखें और देखें कि यह प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है या नहीं।

अभिवादन

1. **अमर ने अपने पिता को पत्र में 'सादर प्रणाम' लिखा है। सोचिए वह क्या लिखता यदि वह—**

(क) अपने मित्र को पत्र लिखता ....

(ख) अपनी बहन को पत्र लिखता ....

(ग) अपनी माँ को पत्र लिखता ....

(घ) अपने अध्यापक को पत्र लिखता ....

2. **आप अपने मित्र को पत्र लिखिए। पत्र में आस-पास के भ्रमण-स्थलों और प्रसिद्ध व्यंजनों के बारे में बताइए।**

भाषा की बात

1. **नीचे दिए गए उदाहरण को ध्यान से पढ़िए। अब आप भी उसी प्रकार नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

उपसर्ग	मूल शब्द	नया शब्द	वाक्य प्रयोग
वि	शेष	विशेष	आज का दिन मेरे लिए विशेष है।
भर	पेट	....	....
....	योग	उपयोग	....
प्र	....	....	....
अनु	शासन	....	....

2. **नीचे दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़िए—**

हमने घूम-घूमकर जंतर-मंतर देखा।

अब इन्हें आगे बढ़ाइए—

हमने झूम-झूमकर ....

हमने कूद-कूदकर ....

हमने उछल-उछलकर ....

हमने ....

3. **तालिका को ध्यान से पढ़कर उपयुक्त वाक्य लिखिए—**

समय	वाक्य
जो कार्य बीते समय में पूरे हो गए हों।	हमारी यात्रा बहुत अच्छी थी। ....
जो कार्य अभी हो रहे हैं।	मैं गीत गा रही/रहा हूँ। ....
जो कार्य आगे आने वाले समय में होंगे।	हम सपरिवार कल घूमने जाएँगे। ....

4. पत्र में आए शब्दों को वर्ग पहेली से खोजकर लिखिए—

क	ला	ज	ल	चू	ना
उ	द	य	पु	र	आ
रा	जा	पु	ल	मा	मे
जं	त	र	मं	त	र
बा	ज	य	सिं	ह	दा
टी	ह	वा	म	ह	ल

..........उदयपुर..........	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

5. पत्र में संग्रहालय शब्द आया है। ऐसे और भी शब्द पता कीजिए, जैसे– विद्यालय। उन्हें समझिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

....

....

> शिक्षण-संकेत – शिक्षक अवसर देखकर विद्यार्थियों को किसी संग्रहालय में ले जाएँ। उन्हें वहाँ रखी सामग्री के बारे में बताएँ। साथ ही बच्चों को देश के अन्य संग्रहालयों की जानकारी भी दें।

वेधशाला

वह स्थान जहाँ ग्रहों, तारों और नक्षत्रों को देखने के लिए यंत्र रखे जाते हैं, उसे वेधशाला कहते हैं। इन यंत्रों की सहायता से ग्रहों की गति-स्थिति का निरंतर अध्ययन किया जाता है।

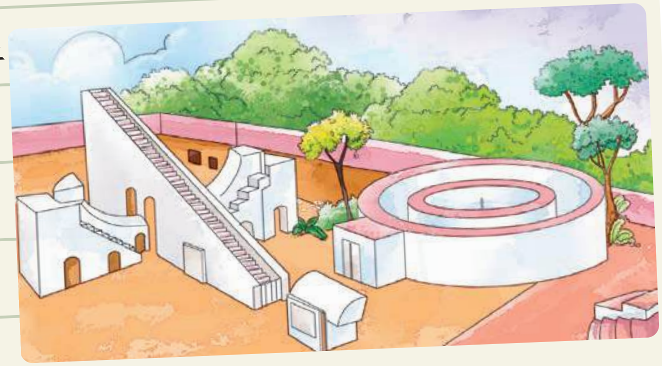

संग्रहालय

संग्रहालय एक ऐसा सार्वजनिक भवन है जहाँ सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्व की वस्तुओं को प्रदर्शित किया जाता है। संग्रहालयों में कई प्रकार की वस्तुएँ रखी जाती हैं जिनमें से कुछ अद्वितीय होती हैं।

पता लगाइए

1. जंतर-मंतर क्या है? भारत में यह जयपुर के अतिरिक्त और कहाँ-कहाँ स्थित है?
2. आपके राज्य में कौन-कौन से दर्शनीय स्थल हैं? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

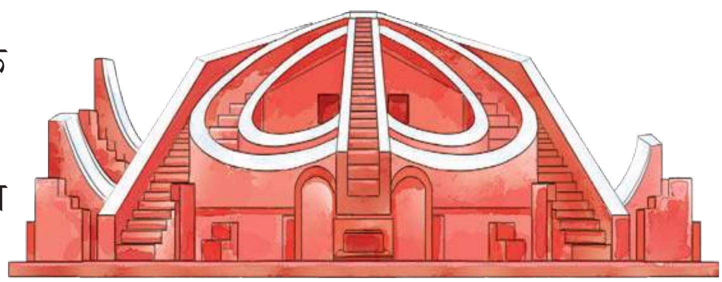

कुछ कीजिए

1. अपने शिक्षक या किसी बड़े सदस्य के साथ डाकघर जाइए। वहाँ क्या-क्या काम किए जाते हैं, इसकी जानकारी एकत्रित कीजिए।
2. सभी विद्यार्थी चार-चार के समूह में भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों के चित्रों का संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

पत्र की यात्रा

- प्राचीन काल में संदेश या पत्र भेजने के लिए व्यक्ति-विशेष होते थे जिन्हें दूत कहा जाता था। कम दूरी के लिए दूत पैदल ही जाकर पत्र पहुँचा देते थे।

- लंबी दूरी के लिए पक्षियों, विशेषकर कबूतरों द्वारा पत्र भेजे जाते थे।

- अति आवश्यक पत्राचार के लिए बारी-बारी से दौड़कर दूतों द्वारा पत्र पहुँचाए जाते थे। एक दूत पत्र लेकर कुछ निश्चित दूरी तक दौड़ता था। उसके बाद दूसरे संदेशवाहक को पत्र पकड़ा देता था।

- लंबी दूरी तक संदेश पहुँचाने के लिए अश्वदूत अर्थात् घुड़सवारों द्वारा भी पत्र भेजे जाते थे।

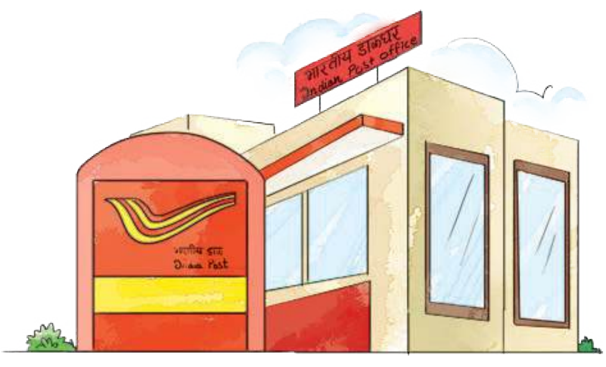

- भारत में डाक विभाग की स्थापना सन् 1854 में हुई। इसके बाद देशभर में डाकघर खोले गए। आज इस यात्रा में स्पीड पोस्ट जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

शब्दों का फुहारा

फुहारे में दी गई शब्द पहेली को निर्देशों की सहायता से हल कीजिए—

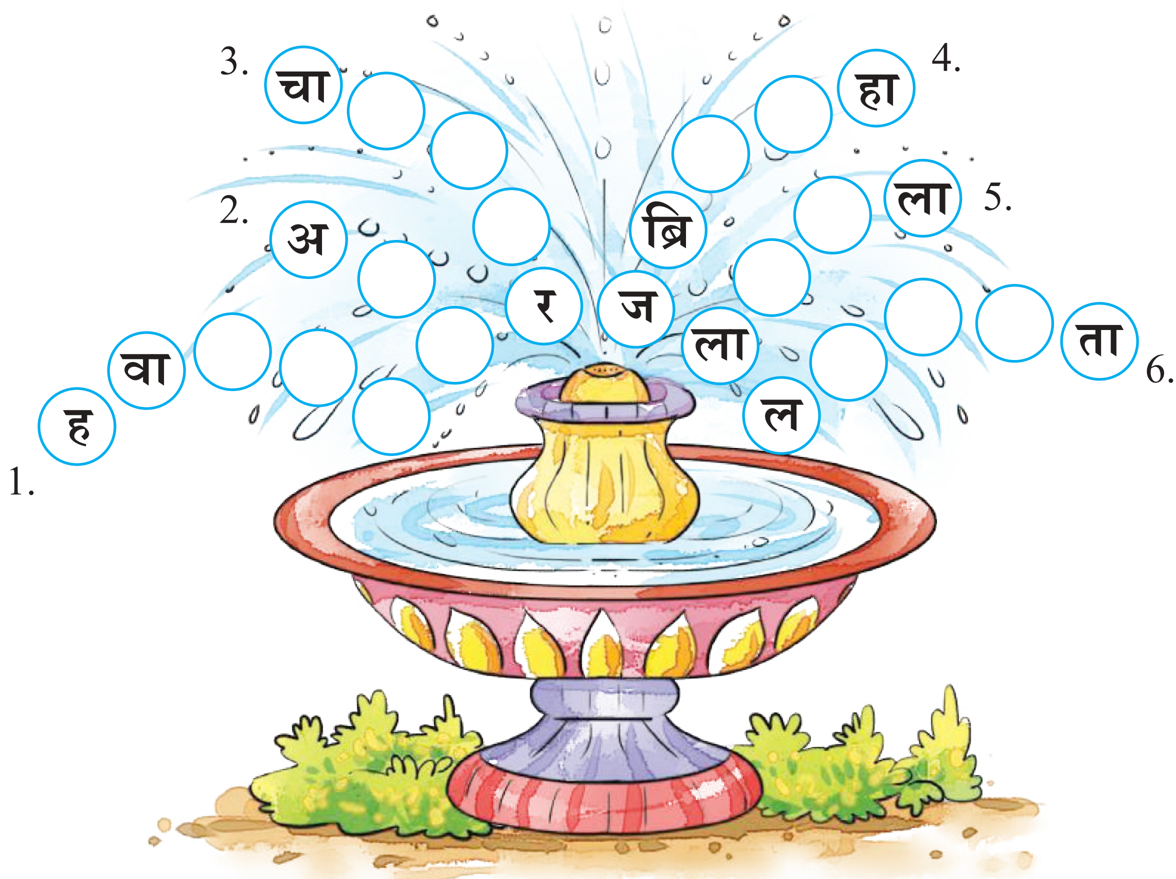

निर्देश—

1. राजस्थान का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल
2. महाराष्ट्र की एक प्रसिद्ध गुफा
3. हैदराबाद में एक प्रसिद्ध मीनार
4. कोलकाता का एक प्रसिद्ध पुल
5. दिल्ली का एक प्रसिद्ध किला
6. आगरा का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल

गोलगप्पा

आनंदमयी कविता

भरा मटर से एक बताशा,
मुँह में फूटे फक्क।
खट्टा, तीखा और चटपटा,
पानी निकले भक्क।

कोई इसको पिचकू बोले,
कोई गोलगप्पा।
दादा-दादी खाएँ मजे से,
खाएँ अम्मा-बप्पा।

मुँह फैलाओ खूब बड़ा-सा,
झटपट अंदर रक्खो।
बड़ी सावधानी से इसका,
स्वाद निराला चक्खो।

चूक गए थोड़ा-सा भी यदि,
बिगड़ गया जो ढंग।
खाँस-खाँस कर हाल बुरा हो,
कपड़े हों बदरंग।

– लायक राम मानव

7 नकली हीरे

0431CH07

हर दरबारी को राजा ने एक-एक हीरा दिया।
आपके उत्तर के लिए धन्यवाद।
सब दरबारी प्रसन्न होकर चले गए। पर एक दरबारी चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा।
आप चुप क्यों हैं? आपका उत्तर क्या है?
महाराज, दूसरों ने तो आपको प्रसन्न करने वाले उत्तर दिए… पर क्षमा कीजिएगा, मेरा उत्तर वैसा नहीं है।
फिर भी, हम सुनना चाहते हैं।
इसमें कोई संदेह नहीं है महाराज कि आप बुद्धिमान और ईमानदार हैं। पर आपसे भी श्रेष्ठ राजा हो चुके हैं जो बुद्धिमत्ता और ईमानदारी में आपसे बढ़-चढ़कर थे।

हमें आपका उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। यह लो आपका हीरा।
अगली सुबह, काननपुर के सारे दरबारी दरबार में वापस आए—
महाराज, हमने इन हीरों की जाँच जौहरी से करवाई। पता चला कि सारे हीरे तो नकली हैं!
आपने हमारे साथ ऐसा क्यों किया महाराज?

– नीरा बेनेगल

('टिंकल' पत्रिका से साभार)

बातचीत के लिए

1. राजा ने अपने पुत्र का सलाहकार किसे और क्यों चुना?
2. दरबारियों ने राजा के उपहार की जौहरी से तुरंत जाँच करवाई। इससे उनके बारे में कौन-कौन सी बातें पता चलती हैं?
3. नवयुवक दरबारी राजा का प्रश्न सुनकर भी चुपचाप क्यों खड़ा था?
4. चित्रकथा के अनुसार काननपुर का राजा बहुत बुद्धिमान था। क्या आप इस बात से सहमत हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है?
5. जब राजा ने अपने पुत्र के सलाहकार की घोषणा की, तब सभी दरबारियों को कैसा लगा होगा? उन्होंने क्या-क्या सोचा होगा?

सोचिए और लिखिए

1. चित्रकथा के दिए गए अंश को ध्यान से देखिए—

इस अंश के बारे में अपने समूह में चर्चा कीजिए। अब नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

- चित्रकथा के इस अंश में कुल कितने चित्र-खंड हैं?
- यहाँ मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
- बीच वाले चित्र-खंड में क्या हो रहा है?
- यहाँ केवल चित्रों को देखकर कौन-कौन सी बातें पता चल रही हैं?

2. इस चित्रकथा का नाम 'नकली हीरे' क्यों रखा गया है? आप भी इस चित्रकथा का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
3. राजा ने नकली हीरों का पुरस्कार किन्हें और क्यों दिया?
4. राजा ने एक को छोड़कर अन्य सभी दरबारियों को नकली हीरे क्यों दिए? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

शब्दों से मित्रता

नीचे दिए गए शब्दों को उनके उपयुक्त अर्थों के साथ रेखाएँ खींचकर मिलाइए—

वृद्ध	सर्वोत्तम
निस्संदेह	रुकना
बुद्धिमान	बूढ़ा
श्रेष्ठ	संदेह न होना
ठहरना	विवेकवान

हमारी समझ

इन प्रश्नों के सबसे उपयुक्त उत्तर पर सूरज का चित्र (☼) बनाइए—

(क) नवयुवक दरबारी का उत्तर सुनकर राजा—

i. प्रसन्न हो गया।

ii. अप्रसन्न हो गया।

iii. भयभीत हो गया।

iv. चिंतित हो गया।

(ख) सबसे अलग उत्तर देने वाले दरबारी के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य सही है?

i. वह सदैव झूठ बोलता था।

ii. वह राजा के पुत्र का सलाहकार बनना चाहता था।

iii. वह अन्य दरबारियों से अलग दिखना चाहता था।

iv. वह एक विनम्र नवयुवक था।

भाषा की बात

1. *'काननपुर के बुद्धिमान और वृद्ध राजा का एक बेटा था।'*
'काननपुर के बुद्धिमान और वृद्ध राजा का एक ही बेटा था।'

(क) इन दोनों पंक्तियों को ध्यान से देखिए। दोनों में क्या अंतर है?

(ख) आप भी कक्षा में पाँच-पाँच के समूह बनाकर 'ही' शब्द वाले चार वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में से जो आपको अपने लिए सबसे उपयुक्त लगते हैं, उनके सामने सही का चिह्न (✓) लगाइए—**

- मुझे कहानियाँ और कविताएँ पढ़ना पसंद है। [ ]
- मुझे रोचक कहानियाँ सुनाना या लिखना पसंद है। [ ]
- मुझे पहेलियाँ हल करना पसंद है। [ ]
- मुझे गणित के खेल और प्रश्न हल करना रुचिकर लगता है। [ ]
- मुझे चित्रकारी करना पसंद है। [ ]
- मुझे घूमने-फिरने और खेलने में आनंद आता है। [ ]
- मुझे अभिनय या नृत्य करना पसंद है। [ ]
- मुझे गीत गाना या वाद्ययंत्र बजाना अच्छा लगता है। [ ]
- मुझे संगीत सुनना पसंद है। [ ]
- मुझे दूसरों के साथ काम करना और मित्र बनाना पसंद है। [ ]
- मुझे अपने सहपाठियों की सहायता करना अच्छा लगता है। [ ]
- मुझे प्रकृति और जानवरों के बारे में जानना पसंद है। [ ]
- मुझे बागवानी पसंद है। [ ]

3. **अब ऊपर दी गई सूची में से अपनी मनभावन गतिविधि को चुनकर उस पर एक अनुच्छेद लिखिए। आप एक से अधिक गतिविधियाँ भी चुन सकते हैं।**

4. ***"सब दरबारियों ने बारी-बारी से यही उत्तर दिया।"***
उपर्युक्त पंक्ति में 'बारी' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। आप भी नीचे दिए ऐसे शब्दों से वाक्य बनाइए—

- धीरे-धीरे – ....

- भिन्न-भिन्न – ....
- साथ-साथ – ....
- बार-बार – ....

5. "कृपा करके स्पष्ट उत्तर दीजिएगा।" कृपा जैसे शब्दों का प्रयोग विनम्रता दर्शाने के लिए किया जाता है। नीचे दिए गए ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए और अपने समूह में एक-दूसरे से बातचीत करते हुए उनका प्रयोग कीजिए—

- कृपया – ....
- धन्यवाद – ....
- क्षमा कीजिए – ....
- आपका आभार – ....

पाठ की विशेषताएँ

नीचे इस चित्रकथा की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। आप भी इस पाठ्यपुस्तक में से किसी कहानी अथवा कविता की विशेषताएँ लिखिए—

पाठ का नाम	–	नकली हीरे	मेरी रुचि का पाठ ....
चित्र	–	सुंदर, रंग-बिरंगे, स्पष्ट	....
रचनाकार	–	नीरा बेनेगल	....
रोचकता	–	आनंददायक	....
अंत	–	सकारात्मक	....

आपकी चित्रकथा

नीचे दी गई चित्रकथा के संवाद लिखिए। इसके लिए आप अपनी मातृभाषा का प्रयोग भी कर सकते हैं।

–रामबाबू माथुर

खोजिए और आनंद लीजिए

1. नीचे दिए गए एक जैसे चित्रों में पाँच अंतर खोजिए—

2. नीचे दिए गए चित्र में पाठ में आए पाँच शब्द छिपे हैं। खोजकर लिखिए—

....

....

....

पुस्तकालय से

1. क्या आपने कोई चित्रकथा पढ़ी है? यदि हाँ तो अपने सहपाठियों को उसके विषय में बताइए।
2. अपने विद्यालय के पुस्तकालय में से कोई अन्य चित्रकथा ढूँढ़िए और अपने सहपाठियों के साथ पढ़िए।

दोस्त हमारे

दोस्त हमारे पेड़-हवाएँ
धरती-अंबर सारे हैं।
दोस्त हमारे उड़ते पंछी
सूरज चाँद-सितारे हैं।

दोस्त हमारे फूल-शूल सब
तितली-भँवरे प्यारे हैं।
दोस्त हमारे बादल-बिजली
रिमझिम मस्त फुहारें हैं।

दोस्त हमारे घाटी-पर्वत
नदी-नहर के धारे हैं।
दोस्त हमारे खेत-बाग
कुदरत के सभी नजारे हैं।

– श्याम सुशील

४

विश्व का अनूठा पर्व - बस्तर का दशहरा

यह चित्र 'बस्तर-दशहरा' का है। छत्तीसगढ़ राज्य का एक स्थान है, 'बस्तर'। यहाँ मनाया जाने वाला बस्तर का दशहरा विश्व का एक अनूठा पर्व है, जो अन्य जगहों में मनाए जाने वाले दशहरे से बिल्कुल अलग है। इस दशहरे में रावण को जलाया नहीं जाता, बल्कि माँ दंतेश्वरी देवी की पूजा की जाती है।

'बस्तर-दशहरा' करीब पचहत्तर दिनों तक मनाया जाता है, जो इसे विश्व का सबसे लंबा पर्व बनाता है। यह पर्व श्रावण अमावस्या से प्रारंभ होकर अश्विन शुक्ल दशमी तक चलता है।

बस्तर दशहरे का केंद्र माँ दंतेश्वरी देवी हैं, जिन्हें बस्तर की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। यह पर्व उनके सम्मान में मनाया जाता है। दंतेवाड़ा में स्थित दंतेश्वरी मंदिर इस आयोजन का धार्मिक केंद्र होता है।

माना जाता है कि माता सती ने जब यज्ञ कुंड में आत्मदाह कर लिया था, तब भगवान शिव उनके मृत शरीर को लेकर ब्रह्मांड में घूमने लगे। इसी दौरान माता सती के अंग जगह- जगह गिरते गए। उस समय दाँत (दंत) इस स्थान पर गिरा। इसलिए यह स्थान दंतेवाड़ा कहलाया। बाद में यहीं पर माँ दंतेश्वरी के मंदिर की स्थापना हुई।

दूसरी एक लोककथा के अनुसार बस्तर के राजा पुरुषोत्तम देव को युद्ध में विजय प्राप्त नहीं हो रही थी। तब उन्होंने माँ दंतेश्वरी की उपासना की। देवी ने प्रसन्न होकर उन्हें विजयी होने का आशीर्वाद दिया।

विजय प्राप्त करने के बाद राजा ने देवी के सम्मान में एक अनूठे उत्सव 'बस्तर-दशहरा' को शुरू किया। उन्होंने इसे रावण के वध की परंपरा से अलग रखा और केवल माँ दंतेश्वरी की आराधना को केंद्र में रखा।

बस्तर दशहरे में अनेक अनुष्ठान और रस्में होती हैं। सबसे पहले देवी के रथ के लिए बड़ी-बड़ी पवित्र लकड़ी लाई जाती है, उसकी पूजा-अर्चना की जाती है। जिसे 'पाट जात्रा' कहा जाता है। इसके बाद दूसरी रस्म 'डेरी गड़ाई' की होती है। इसमें दशहरा पर्व के प्रारंभ होने के पहले साल प्रजाति की एक लकड़ी को एक निश्चित जगह पर गड़ाया जाता है।

इसकी पूजा-अर्चना करके 'दशहरा पर्व' के निर्विघ्न संपन्न होने की कामना की जाती है। उसके बाद एक विशेष गद्दी होती है, जो काँटों से बनी होती है। जिसे 'काछिन गादी' कहा जाता है। इस गद्दी पर एक कन्या को देवी का प्रतीक मानकर बैठाया जाता

है। जिसे 'काछिन देवी' कहा जाता है। नौ दिनों तक उस देवी की पूजा होती है। उसके बाद लकड़ी से बने विशाल रथ में देवी की प्रतीकात्मक यात्रा होती है, जिसे हजारों लोग खींचते हैं। इसके बाद 'काछिन जात्रा' होता है। इसमें पूरे विधि-विधान से देवी को विदाई दी जाती है। माना जाता है कि इस 'जात्रा' में कई स्थानीय देवी-देवता भी शामिल होते हैं। इस पर्व में इसके अलावा और भी कई छोटी-बड़ी रस्में होती हैं।

यह पर्व बस्तर के मुरिया, माड़िया, धुरवा, बटरा जैसे कई आदिवासी समुदायों के लिए गौरव और एकता का प्रतीक है। वे पारंपरिक नृत्य, गीत, वाद्य यंत्रों और पोशाकों के साथ दशहरे में भाग लेते हैं और सभी मिलकर झूम-झूमकर नाचते हैं। इस अवसर

पर बस्तर की शाही परंपरा भी देखने के लिए मिलती है, जिसमें राजा और पुजारियों की विशेष भूमिका होती है।

'बस्तर-दशहरा' केवल एक धार्मिक पर्व ही नहीं, बल्कि आदिवासी संस्कृति, परंपरा और प्रकृति-पूजा का जीवंत उदाहरण है। सरलता, श्रद्धा और समर्पण से भरा यह पर्व हर वर्ष बस्तर ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की पहचान को जीवित रखता है।

बातचीत के लिए

1. बस्तर दशहरे का त्योहार कब मनाया जाता है ?
2. बस्तर दशहरे का त्योहार किस लोककथा पर आधारित है?
3. आप कौन-कौन से त्योहार मनाते हैं?
4. आपको कौन-सा त्योहार सबसे अधिक अच्छा लगता है और क्यों?
5. त्योहार वाले दिन आप क्या-क्या करते हैं?

पाठ के भीतर

1. प्रश्नों के सटीक उत्तर के सामने सूरज का चित्र (☼) बनाइए—

(क) 'बस्तर-दशहरा' का आरंभ किस रस्म से होता है?

i. नौ दिनों तक देवी की पूजा होती है।

ii. देवी को 'काछिन गादी' में बैठाया जाता है।

iii. पवित्र लकड़ी लाई जाती है।

iv. विधि-विधान से देवी की विदाई होती है।

(ख) राजा पुरुषोत्तम देव ने युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए क्या किया?

i. बस्तर दशहरे में भाग लिया।

ii. लकड़ी का रथ बनाया।

iii. देवी के सामने नृत्य किया।

iv. देवी माँ की उपासना की।

(ग) बस्तर का दशहरा किनके सम्मान में मनाया जाता है?

i. भगवान श्रीराम के सम्मान में।

ii. राजा पुरुषोत्तम देव के सम्मान में।

iii. माता दंतेश्वरी देवी के सम्मान में।

iv. आदिवासियों के सम्मान में।

2. स्तंभ 'क' का स्तंभ 'ख' से मिलान कीजिए—

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
पाट जात्रा	इसमें पर्व के प्रारंभ होने से पहले साल प्रजाति की एक लकड़ी की एक निश्चित जगह पर गड़ाई जाती है। इसकी पूजा करके पर्व के निर्विघ्न संपन्न होने की कामना की जाती है।
डेरी गड़ाई	एक कन्या जिसे देवी का प्रतीक मानकर काँटों से बनी गद्दी पर बैठाया जाता है।
काछिन गादी	इसमें देवी के रथ के लिए 'पवित्र लकड़ी' लाई जाती है, उसकी पूजा-अर्चना की जाती है।
काछिन देवी	इसमें एक विशाल रथ पर देवी को बैठाकर हजारों लोगों के द्वारा खींचा जाता है।
काछिन जात्रा	यह एक विशेष गद्दी होती है, जो काँटों से बनी होती है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

(क) छत्तीसगढ़ में तीज-त्योहारों में कौन-कौन से पकवान बनाए जाते हैं? किसी एक पकवान के बारे में विस्तार से लिखिए।

(ख) हमारे देश में कौन-कौन से पर्व विशेष रूप से मनाए जाते हैं? उन पर्वों की कौन-सी बातें 'बस्तर-दशहरा' से मिलती जुलती हैं?

(ग) बस्तर दशहरे से जुड़ी कई कथाएँ हैं। किसी एक कथा के बारे में पता कीजिए और विस्तार से लिखिए।

(घ) पाठ में आए किन-किन बातों से पता चलता है कि 'बस्तर का दशहरा' एक अनूठा पर्व है?

(ङ) पाठ में बस्तर दशहरे से जुड़े कुछ अनुष्ठान और रस्मों के बारे में बताया गया है। किन्हीं दो रस्मों के बारे में विस्तार से लिखिए।

मधुर स्मृतियाँ

1. अपने घर के बड़ों से बातचीत करके पता लगाइए कि वे अपने जीवन के बीते हुए किन-किन अवसरों को याद करके प्रसन्न होते हैं। उन बातों को अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।
2. आपके घर के सदस्य आपकी किन बातों से प्रसन्न होते हैं? वे आपकी प्रसन्नता के लिए क्या-क्या प्रयास करते हैं? आप उनके प्रति आभार कैसे व्यक्त करते हैं?

हमारे देश के नृत्य

आइए, अपने देश के विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय और लोकनृत्यों की पहचान करते हैं—

भरतनाट्यम

कथक

कथकली

मोहिनीअट्टम

ओडिसी

लावणी

कुचिपुड़ी

राउत नाचा

भांगड़ा

बिहू

गरबा

कालबेलिया

छऊ

देश हमारा एक, रंग इसके अनेक

1. पाठ में आए उन वाक्यांशों को चिह्नित करके लिखिए जिससे यह पता चलता है कि बस्तर दशहरा प्रकृति-पूजा का जीवंत उदाहरण है।

2. कक्षा में तीन-तीन विद्यार्थियों का समूह बनाकर आपस में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि हमारे देश में प्रकृति-पूजा से जुड़े कौन-कौन से त्योहार हैं? ऐसे त्योहारों की सूची भी तैयार कीजिए।

3. उपज से जुड़े निम्नलिखित त्योहार भारत के किन-किन राज्यों में मनाए जाते हैं? उनके नीचे दिए गए रंगों के द्वारा उन्हें मानचित्र में दर्शाइए—

ओणम	लोहड़ी	हरेली	साङ्केन	बिहू	छठ	फूलदेई
पीला	लाल	हरा	नीला	भूरा	नारंगी	गुलाबी

4. छत्तीसगढ़ में फसल तैयार होने के बाद गाया जाने वाला लोकगीत—

सुआ गीत

तरी हरि ना ना, मोर ना हा नारी ना ना वो
फुलगे चिरैया रुम झुम ले..
रुम झुम ले वो सदा फूल, मोंगरा माते हे घुम घुम ले...
के ओर लगे मोर केकती अउ केवरा वो, के ओर लगे भृंगराजे

भृंगराजे वो सदा फूल, फुलगे चिरैया रुम झुम ले...
रुम झुम ले वो सदा फूल, मोंगरा माते हे घुम घुम ले....
अंगना के चौरा मा तुलसी लगाए वो, मढली लगइले दौना पाने
दियना झकइबे तै तुलसी के चौरा वो, कान खोंचले दौना पाने
दौना पाने वो सदा फूल, फुलगे चिरैया रुम झुम ले
रुम झुम ले वो सदा फूल, मोंगरा माते हे घुम घुम ले

शब्दों का चमत्कार

1. पाठ में आए कुछ वाक्यों के अंश नीचे लिखे हैं, इन्हें ध्यान से पढ़िए—

- बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ। • झूम-झूमकर नाचना

इन वाक्यांशों में 'बड़ी' तथा 'झूम' शब्दों का दो बार प्रयोग किया गया है। इन शब्दों का एक बार प्रयोग करके पढ़ते हैं -

- बड़ी लकड़ियाँ
- झूमकर नाचना

अपने शिक्षकों से चर्चा कीजिए कि विशेषता बताने वाले शब्दों का एक साथ दो बार प्रयोग करने से वाक्य में किस प्रकार का विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। आप भी ऐसे कुछ वाक्य लिखिए।

2. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

(क) बस्तर दशहरा करीब पचहत्तर दिनों तक <u>मनाया</u> जाता है।

(ख) देवी के रथ के लिए पवित्र बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ <u>लाई</u> जाती हैं।

(ग) एक लकड़ी को निश्चित जगह पर <u>गड़ाया</u> जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मनाना', 'लाना' और 'गड़ाना' शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

3. इस पाठ में आए विशेषता बताने वाले शब्दों (विशेषण) को छाँटकर लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

जैसे – <u>अनूठा</u> पर्व

- बस्तर का दशहरा विश्व का एक अनूठा पर्व है।
- ....
- ....
- ....

4. केरल की मुख्य भाषा मलयालम है। इस शब्द को उलटकर पढ़ें तो भी यह मलयालम ही पढ़ा जाएगा। ऐसे और भी शब्द हैं जो आगे-पीछे से पढ़ने पर एक समान रहते हैं, जैसे – सरस और जहाज। आप भी पाँच-पाँच की टोलियों में ऐसे और शब्द खोजिए।

त्योहार और सामूहिकता

1. **इस पाठ को पुनः पढ़िए और उन पंक्तियों को चिह्नित कीजिए जिनसे यह भाव निकलता है कि त्योहार मिल-जुलकर मनाए जाते हैं।**

2. **आपके विद्यालय में 'वृक्षा रोपण' का आयोजन किया जाना है। इस आयोजन का संपूर्ण उत्तरदायित्व आपकी कक्षा को दिया गया है।**

   (क) सभी सहपाठी मिलकर योजना बनाइए कि 'वृक्षा रोपण' के आयोजन हेतु क्या-क्या किया जाएगा।

   (ख) वन महोत्सव में अभिभावकों को आमंत्रित करने के लिए आमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

3. **दिए गए स्थान पर रंगोली बनाइए—**

4. **आप अपने विद्यालय में आयोजित उत्सवों में किस प्रकार योगदान देते हैं?**

....

....

....

....

यह भी जानिए

1. नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर छत्तीसगढ़ के बारे में अध्यापकों और पुस्तकालय की सहायता से कुछ और जानकारी जुटाइए।

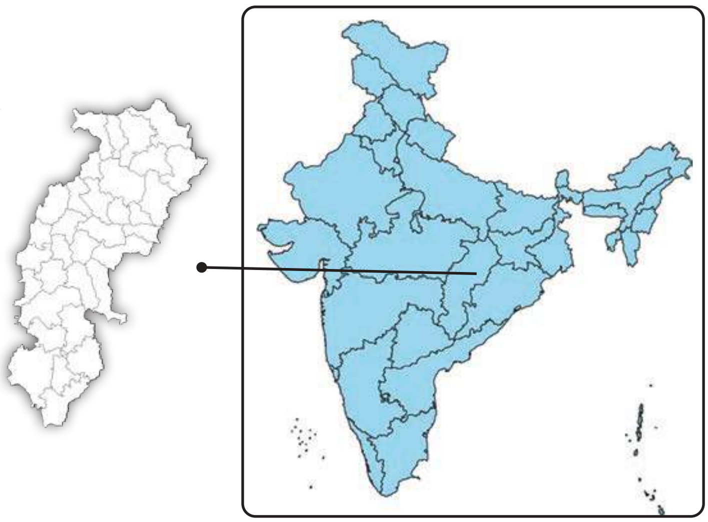

- स्थानीय नृत्य
- भाषा
- परिधान/वस्त्र
- मुख्य फसल
- राजधानी
- त्योहार

2. आपने पिछले पृष्ठ में भारत के कुछ प्रदेशों के शास्त्रीय नृत्यों के चित्र देखें हैं, अपने अध्यापक के मदद से इनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी एकत्रित कीजिए।

ओणम के रंग

दक्षिण भारत का एक राज्य है केरल। ओणम यहाँ का मुख्य त्योहार है। फसल कटाई के बाद सावन महीने के श्रावण नक्षत्र के दिन यह त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ का एक स्थान है 'आरन्मुला'। ओणम के त्योहार पर यहाँ नौका-दौड़ आयोजित की जाती है। इस दिन सुबह-सुबह बच्चे नहा-धोकर हाथ में टोकरी लिए लाल, पीले, सफेद फूल तोड़ने के लिए बाग-बगीचों में निकल जाते हैं। सूर्योदय होते ही बच्चे अपने-अपने घर के आँगन को गोबर से लीपकर पूक्कलम (फूलों की रंगोली) बनाते हैं। इसी के साथ केरल में ओणम का त्योहार शुरू हो जाता है।

ओणम के त्योहार से संबंधित एक पौराणिक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में महाबली नाम के एक राजा थे, जो केरल पर शासन करते थे। उनका राज्य पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल लोक तक फैला हुआ था। महाबली के राज में लोग पूरी तरह प्रसन्न थे।

एक दिन महाविष्णु वामन का रूप धारण करके राजा महाबली के पास पहुँचे और तीन पग भूमि की याचना की। महाबली ने इस तुच्छ दान की तुरंत स्वीकृति दे दी। महाविष्णु ने तत्काल अपना वामन रूप त्याग दिया और त्रिविक्रम बनकर ब्रह्मांड तक फैल गए। उन्होंने दो पगों से स्वर्ग, भूमि और पाताल को नाप लिया और उनका तीसरा पग रखने के लिए कोई जगह शेष नहीं बची। इस पर उन्होंने महाबली की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा तो महाबली ने महाविष्णु का तीसरा पग रखने के लिए अपना सिर झुका दिया।

महाबली के इस व्यवहार से प्रसन्न होकर महाविष्णु ने महाबली को पाताल लोक का राज्य सौंप दिया। महाबली ने पाताल जाने के पहले एक याचना की कि वर्ष में केवल एक बार उन्हें अपनी प्रजा से मिलने के लिए धरती पर आने की अनुमति दी जाए। महाविष्णु ने महाबली की इस माँग को स्वीकार कर लिया।

जनता की मान्यता है कि तब से महाबली अपनी प्रजा को देखने के लिए वर्ष में एक बार केरल आते हैं। महाबली के स्वागत के लिए इस दिन को केरल के लोग ओणम के त्योहार के रूप में हर वर्ष मनाते चले आ रहे हैं।

0431CH09

९ मिठाइयों का सम्मेलन

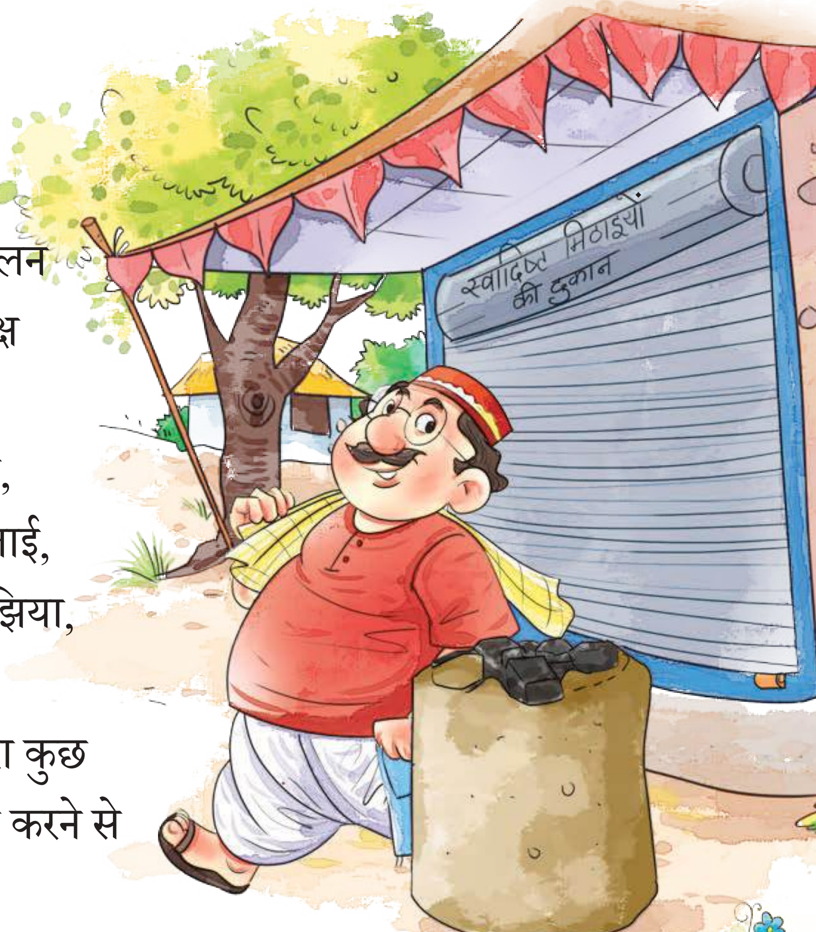

छगनलाल हलवाई दुकान बंद करके अपने घर चले गए। अवसर मिलते ही बंद दुकान के भीतर मिठाइयों ने एक सम्मेलन का आयोजन किया। लड्डू दादा को अध्यक्ष बनाया गया। श्रोताओं में इमरती जी, पेड़ा, बरफ़ी बहन, रसगुल्ला, जलेबी बहन, रबड़ी जी, गुलाबजामुन, मैसूरपाक, रसमलाई, सोनपापड़ी, बालूशाही, कलाकंद भाई, गुझिया, काजूकतली और शक्करपारा आदि बैठे।

कलाकंद भाई – आजकल डॉक्टरों द्वारा कुछ लोगों को हमारा सेवन करने से रोका जा रहा है।

सोनपापड़ी – क्या आप जानते हैं कि डॉक्टर लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं?

जलेबी बहन – बरफ़ी बहन तुम ही बता दो न!

बरफ़ी बहन – आप इस तरह मेरा मजाक मत उड़ाइए।

मैसूरपाक – बरफ़ी बहन और जलेबी बहन, आप दोनों यह न भूलें—

मीठा अपना स्वाद है, मीठे-मीठे बोल।
बस मिठास फैलाइए, मन दरवाजे खोल।।

रसगुल्ला – आप यह नहीं जानते कि हमारी अति मिठास ही हमारी उपेक्षा का कारण है।

गुलाबजामुन – रसगुल्ला भाई बिलकुल सही कह रहे हैं पर—

जीभ चटोरी न सुने, माँगे मीठा मोर।
मीठा-मीठा खाय के, लोग न होवें बोर।।

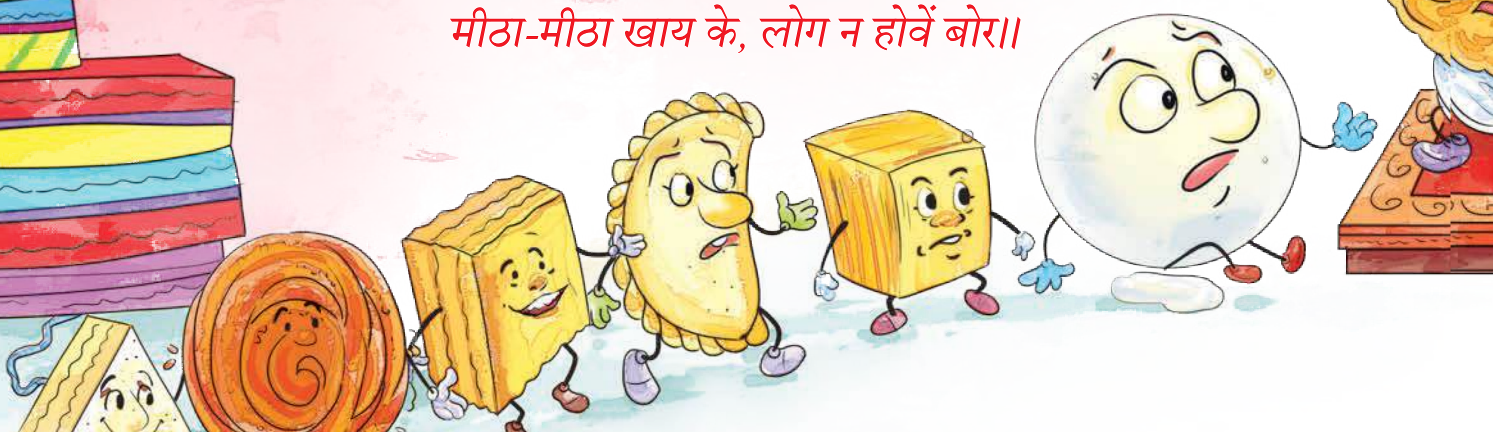

गुझिया – कुछ लोगों के शरीर में शक्कर की मात्रा बढ़ रही है।

रबड़ी जी – आप सभी ने सुना होगा कि जहाँ अति होती है, वहाँ क्षति होती है। हमारा सेवन करते समय लोग अति कर देते हैं और बाद में भुगतते हैं।

लड्डू दादा – इसके लिए हमें अपने में शक्कर की मात्रा कम करनी चाहिए।

गुलाबजामुन – फिर हमें मिठाई कौन कहेगा?

लड्डू दादा – ध्यान रखो, शक्कर कम होने से ही हम लोगों के मन में मिठास बढ़ा सकते हैं।

पेड़ा – शुभ कार्यों में मिठाई बाँटने की प्रथा को भला कौन बंद कर सकता है?

लड्डू दादा – लोगों को भी चाहिए कि वे अपनी जीभ पर थोड़ा नियंत्रण रखें। हमारा सेवन करें पर अति न करें। शारीरिक श्रम करते रहें और स्वस्थ रहें।

इस निर्णय के साथ सभी को धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष लड्डू दादा ने सम्मेलन समाप्ति की घोषणा की।

–मनीष बाजपेयी

(रा.शै.सं.प्र.प., महाराष्ट्र से साभार)

बातचीत के लिए

1. आपको कौन-सी मिठाई सबसे अधिक पसंद है और क्यों?
2. आपके घर में मिठाई कब-कब बनाई और बाँटी जाती है?
3. घर से विद्यालय तक जाते हुए आपको किन-किन वस्तुओं की दुकानें मिलती हैं?
4. अगर आप अपनी कक्षा में बालसभा का आयोजन करते तो किन-किन बातों पर चर्चा करते?

पाठ के भीतर

1. रसगुल्ला भाई के अनुसार मिठाइयों की उपेक्षा का क्या कारण है?
2. लड्डू दादा ने क्या-क्या सुझाव दिए?
3. "फिर हमें मिठाई कौन कहेगा?" गुलाबजामुन ने ऐसा क्यों कहा?
4. इस पाठ में जीभ पर नियंत्रण रखने की बात क्यों कही गई है?

5. इस पाठ में मिठाइयों को लड्डू दादा, बरफ़ी बहन आदि नामों से पुकारा गया है। नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार मिठाइयों को अपनी पसंद के नाम देते हुए उनके चित्र भी बनाइए—

- गुलाबजामुन – ...गुलाबजामुन मामा...

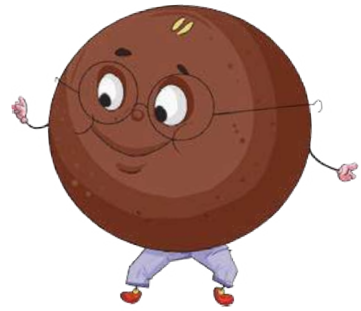

- काजूकतली – ....
- गुझिया – ....
- मैसूरपाक – ....

हमारी मिठास

1. हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों में बनाई जाने वाली मिठाइयों के बारे में पता कीजिए और उनके नाम भी लिखिए—

प्रदेश/केंद्रशासित प्रदेश	मिठाई
गोवा	बेबिंका
ओडिशा	छेना पोड़ा
....	....
....	....
....	....

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए—

मीठा →	मिठास →	रसगुल्ला
खट्टा →	.... →	....
.... →	नमकीन →	....
कड़वा →	.... →	....

3. **विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ बनाने के लिए अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, पत्ते, दलहन, तिलहन और सूखे मेवे आदि का उपयोग होता है। अपने अध्यापक या अभिभावक की सहायता से दी गई तालिका को पूरा कीजिए—**

मिठाई	अनाज	फल/फूल	सूखे मेवे	दलहन	तिलहन	साग-भाजी
बरफ़ी	गेहूँ/चावल	नारियल/ केसर	काजू/ बादाम/ पिस्ता	चना/मूँग	तिल	लौकी/कद्दू
....	....	....	....	....	....	....
....	....	....	....	....	....	....

भाषा की बात

1. **'मन में लड्डू फूटना' का अर्थ है अत्यधिक प्रसन्न होना, जैसे—**

जब ज्योति को लाल किला जाने का अवसर मिला तो उसके मन में लड्डू फूटने लगे।

इसी प्रकार फलों, मसालों और साग-तरकारियों पर आधारित मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए।

(क) .... अंगूर खट्टे हैं। ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

अब इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य भी बनाइए।

2. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार शब्दों के बहुवचन लिखिए—

एक (एकवचन)	अनेक (बहुवचन)
मिठाई	मिठाइयाँ
जलेबी	....
रसगुल्ला	....
इमरती	....
पेड़ा	....

3. कुछ मिठाइयों के नाम दो शब्दों के मेल से बनते हैं। यहाँ कुछ नाम दिए गए हैं। इनकी सहायता से मिठाइयों के पूरे नाम लिखिए—

सोन, रस, कला, पेठा, जामुन, बालू, कतली, भोग

(क) रस + मलाई .... रसमलाई

(ख) गुलाब + ...

(ग) .... + शाही ....

(घ) मोहन + ...

(ङ) .... + कंद ....

(च) काजू + ...

(छ) .... + पापड़ी ....

(ज) अंगूरी + ...

साग-भाजियों का सम्मेलन

ऋषभ और गुरप्रीत एक दिन घर में खेल रहे थे कि अचानक उन्हें रसोईघर से कुछ आवाजें आईं। वहाँ साग-भाजियाँ आपस में बातें कर रही थीं। उनकी बातचीत को पूरा कीजिए।

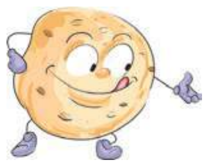

आलू – मैं साग-भाजियों का राजा हूँ। मेरे बिना सारी साग-भाजियाँ अधूरी हैं।

बैंगन – तुम राजा हो तो क्या हुआ? मैं भी कम स्वादिष्ट नहीं!

टमाटर – ....

प्याज – ....

मिर्च – ....

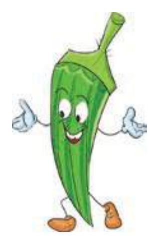

भिंडी – ....

गोभी – ....

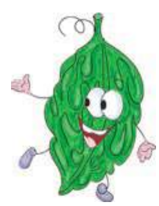

करेला – ....

पालक – ....

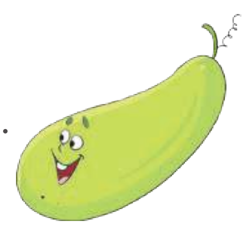

लौकी – ....

हम और हमारा स्वास्थ्य

1. स्वस्थ रहने के लिए आप क्या-क्या करते हैं? इससे संबंधित पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

2. “जहाँ अति होती है, वहाँ क्षति होती है।” अगर आपके पास इस कथन से संबंधित कोई अनुभव है तो उसे कक्षा में साझा कीजिए और उस पर चर्चा कीजिए। शिक्षक भी कुछ उदाहरण देकर अपने अनुभव साझा कर सकते हैं।

भूल-भुलैया

भाई-बहन मिठाइयों के सम्मेलन में गए थे और लौटते समय घर का रास्ता भूल गए। इन्हें जलेबी भूल-भुलैया से बाहर निकालिए—

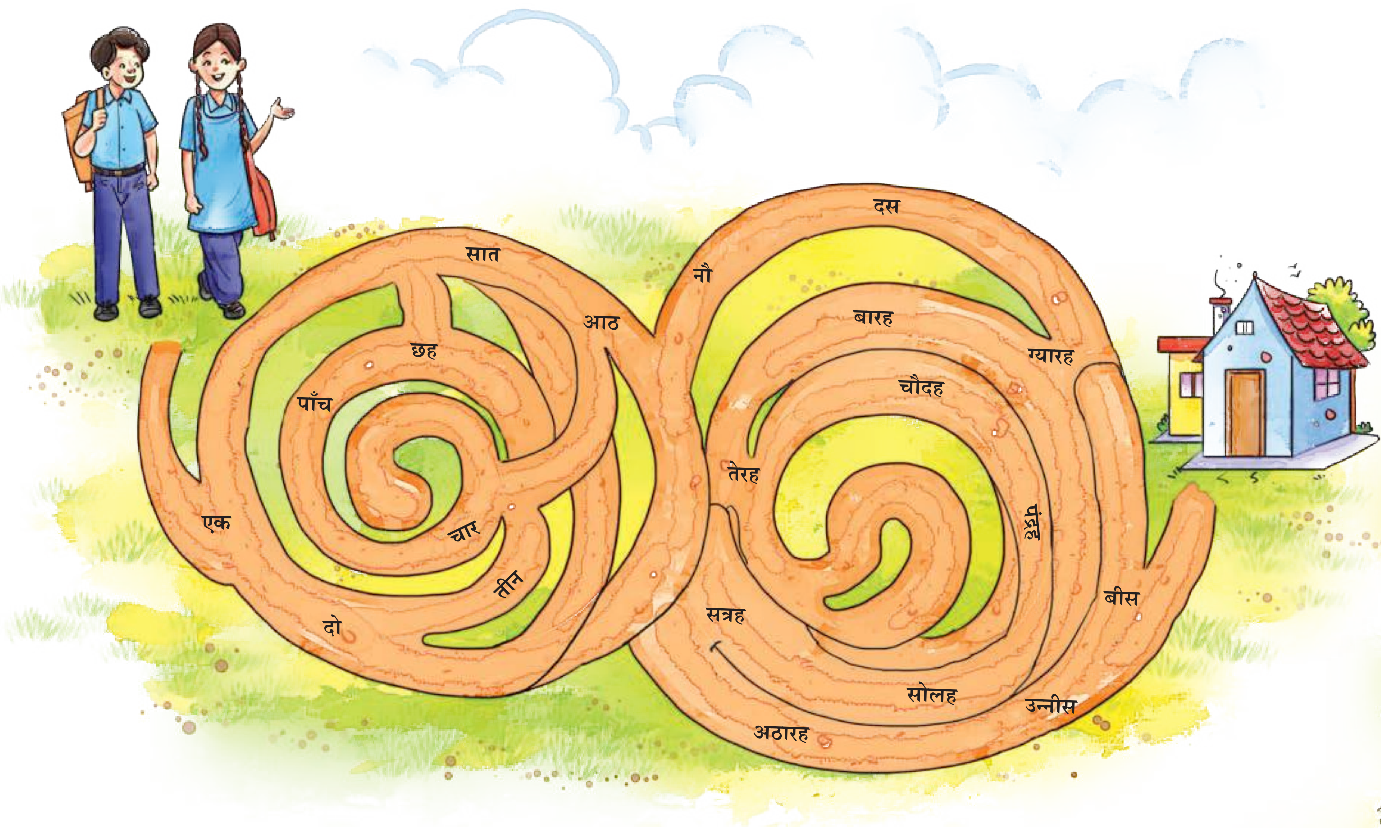

चटपटी चाट

चटपटी चाट बनाने के लिए आपको चाहिए—

- अंकुरित चने, मूँग आदि।
- हरी मिर्च और हरा धनिया (इच्छानुसार)
- काला/सादा नमक (स्वादानुसार)
- भुना जीरा पाउडर
- उबले आलू
- खीरा
- चाट मसाला
- टमाटर
- प्याज
- नींबू

बनाने की विधि—

अंकुरित किए हुए मूँग और चने को एक कटोरे में लीजिए।

अब इसमें बारीक कटी प्याज, टमाटर, खीरा, उबले आलू, हरी मिर्च और हरा धनिया डालिए।

इसके बाद इसमें स्वादानुसार सादा नमक/काला नमक, चाट मसाला, नींबू का रस और भुना जीरा पाउडर डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए।

स्वादिष्ट चाट तैयार है। स्वाद के साथ-साथ पौष्टिकता से भरपूर इस चाट का आनंद लीजिए।

इनके अतिरिक्त आपके पास जो भी सामग्री उपलब्ध हैं, आप उनकी सहायता से भी अपनी मनपसंद चाट बना सकते हैं।

जलेबी

गोल- गोल जलेबी रानी,
देख के मुँह में आता पानी।
मीठी -मीठी, पीली- पीली,
रस में भीगी हुई रसीली।
गुल्लू बोला-मैं खाऊँगा,
नंदू को मैं ललचाऊँगा।
बिन्नी ने झट मुँह में डाली,
बोली-वाह! बड़ी निराली।
नानी बोली - थोड़ी खाओ,
बच्चे बोले- और दिलाओ।
कुरकुरी-सी टुक -टुक बोले,
मिठास सबके मुँह में घोले।

– विनय शरण सिंह

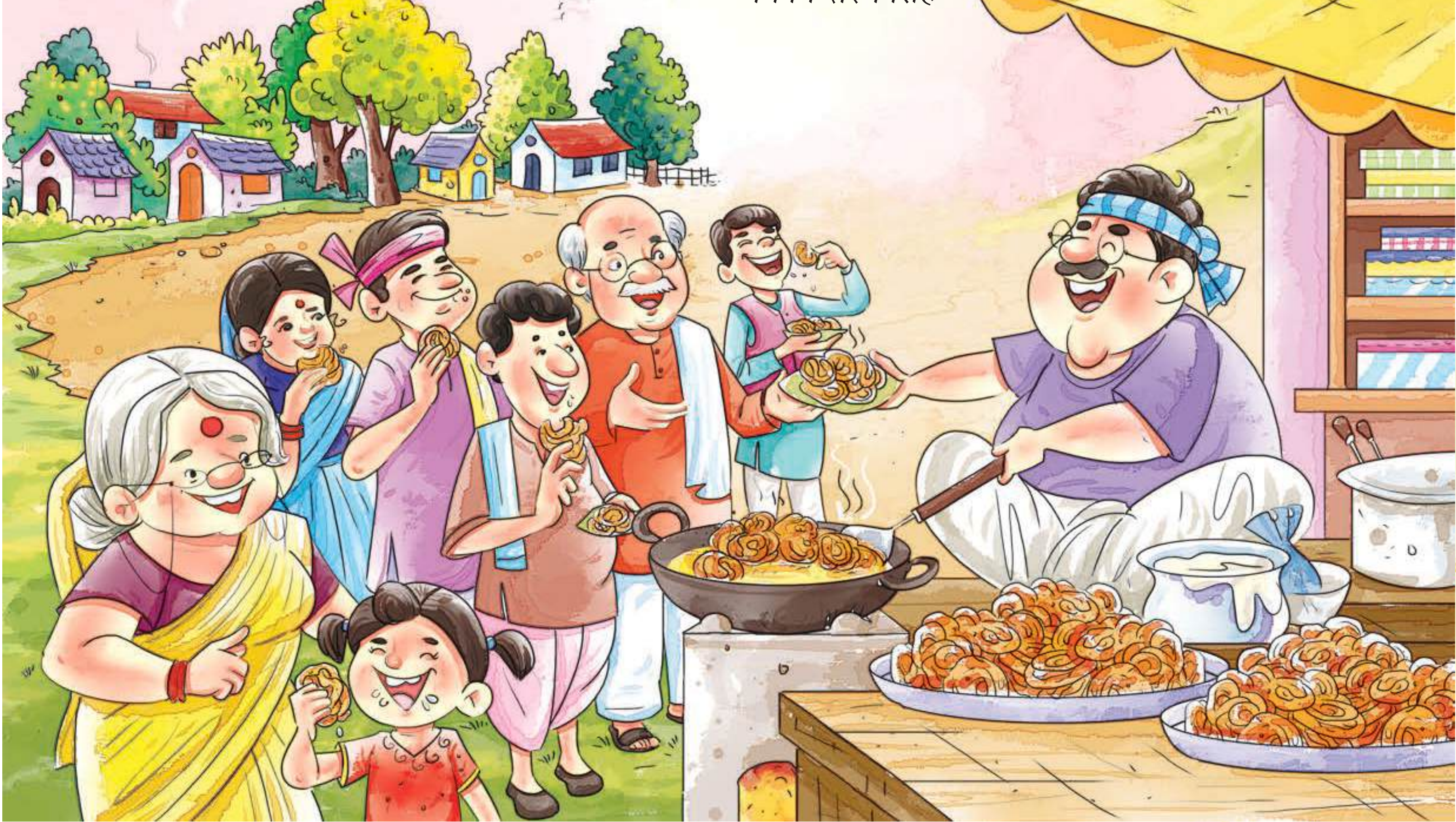

सुन, इमली के दाने सुन!

सुन, इमली के दाने सुन!
सुन, इमली के दाने सुन!

तुझे गली में पाया था,
झुककर तुझे उठाया था,
सोचा, तुझे उठा करके,
मिट्टी तले दबा करके,
चुपके से रख छोड़ूँगा,
कुछ दिन यूँ ही देखूँगा।

फिर जब बारिश आएगी,
मिट्टी नम हो जाएगी,
अंकुर बन तू फूटेगा,
खुली हवा में झूमेगा,
फिर पौधा बन जाएगा,
दिन दूना बढ़ जाएगा,
फिर तुझ पर फल आएँगे,
हम भी इमली खाएँगे।

पर बचकर तू निकल गया,
हाथों से तू फिसल गया,
जब तक मेरी मति जागी,
तुझे गिलहरी ले भागी।

– *रमेश तैलंग*

ठहाके

बिमला – तुम आकाश के तारे गिन सकती हो?

मीता – अभी तो बहुत अँधेरा है। दिन की रोशनी में गिनकर बता दूँगी।

माताजी – सोनू, मैंने कहा था पूजा के लिए धूप ले आना।

सोनू – लाता कहाँ से माँ, आज तो दिनभर बादल छाए रहे।

राहुल – बताओ, ऐसा कौन है जो शेर से नहीं डरता?

रश्मि – शेर का बच्चा।

अध्यापक – तिनके का बहुवचन क्या है?

विद्यार्थी – झाड़ू।

संदीप – प्रमोद, तुम चींटियों के पीछे क्यों जा रहे हो?

प्रमोद – यह देखने के लिए कि माँ ने मिठाई कहाँ छिपाकर रखी है।

10 कविता का कमाल

0431CH11

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। माँ-बेटा बहुत गरीब थे। उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल-कूद में ही समय बिता देता था।

परेशान होकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, “अब मैं तुझे बिठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।”

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि कैसे पैसे कमाए? अचानक उसे ढिंढोरा पीटने की आवाज सुनाई दी।

“सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि-सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फियाँ पुरस्कार में मिलेंगी।” मदन चौकन्ना हो गया। सौ अशर्फियाँ, यह तो बना-बनाया अवसर है। वह सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा

वहाँ पहुँचकर? उसने सोचा कि रास्ते में कुछ-न-कुछ सूझ ही जाएगा। थोड़ी दूर पहुँचा तो उसे एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से जमीन खोदने में लगा था। मदन ने अपनी कविता की एक पंक्ति सोच ली।

"खुदुर-खुदुर का खोदत है?" यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दुहराते हुए वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?" मुस्कराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में उसे पेड़ की एक डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। पत्तियों के बीच से वह सिर निकालकर इधर-उधर झाँक रही थी। उसे देखते ही मदन के

मुँह से निकल पड़ा, "ताक-झाँक का खोजत है?" तीनों पंक्तियों को रटते हुए वह चलता गया। रटते-रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई, "हम जानत का ढूँढ़त है!"

अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी उसे 'सर्र' की आवाज सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था। उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर लीं, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो हम देखत हैं। हमसे न बच सकत है।" अब केवल एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते-चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, "भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?" "क्यों नहीं", उस आदमी ने उत्तर दिया। "मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?" मदन ने सोचा कि अवश्य यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, "आप कौन हैं, साहब?" उत्तर मिला, "धन्नू शाह।"

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी, "धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!" क्या बढ़िया शब्द थे! उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता बना डाली। वह खुशी-खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई—

खुदुर-खुदुर का खोदत है?
सुरुर-सुरुर का पीबत है?
ताक-झाँक का खोजत है?
हम जानत का ढूँढ़त है!
सरक-सरक कहाँ भागत है?
जानत हो हम देखत हैं।
हमसे न बच सकत है।
धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!

राजमहल में कवि सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक-एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुनने वाले एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ था इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई थी। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दुहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाएँ। संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खजाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से एक चोर वही धन्नू शाह था जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज में राजा साहब बोलते जा रहे थे, "खुदुर-खुदुर का खोदत है?"

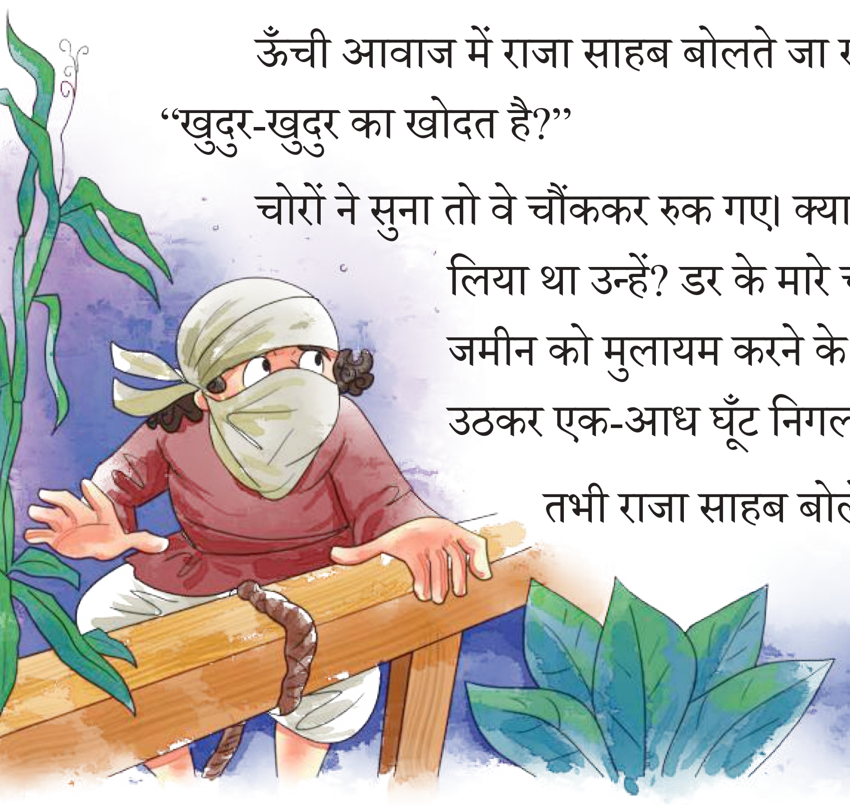

चोरों ने सुना तो वे चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ जमीन को मुलायम करने के लिए वे पानी लाए थे। धन्नू शाह ने उठकर एक-आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?"

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर-उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है? राजा ने फिर कहा, "ताक-झाँक का खोजत है? हम जानत का ढूँढ़त है।"

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे। पर राजा की फिर आवाज आई, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो हम देखत हैं! हमसे न बच सकत है। धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!"

धन्नू शाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, "अब कोई चारा नहीं। बस, राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।" दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, "क्षमा कर दीजिए महाराज! अब मैं भूलकर भी ऐसा काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खजाना सही-सलामत है।"

राजा साहब हक्के-बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खजाना लुटते-लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।" मदन को सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के खाने-पीने के लिए पर्याप्त धन था।

– रा.शै.अ.प्र.प., छत्तीसगढ़ से साभार

बातचीत के लिए

1. क्या आपको कथा-कहानी सुनना-सुनाना पसंद है? अपने उत्तर का कारण बताइए।
2. इस लोककथा का सबसे रोचक हिस्सा कौन-सा है और क्यों?
3. राजा का खजाना मदन की कविता के कारण बचा या राजा के कारण जो कविता को जोर-जोर से बोल रहे थे?
4. राजमहल में जब मदन ने अपनी कविता सुनाई तो सुनने वाले एक-दूसरे का मुँह क्यों ताकने लगे?
5. आप इस कहानी का कोई और शीर्षक सुझाइए तथा बताइए कि यह शीर्षक क्यों देना चाहते हैं।

कविता की बात

उपयुक्त शब्द का चयन कर वाक्य पूरा कीजिए—

1. सुरुर-सुरुर का .... है?

   (क) पीयत ☐ (ख) खोजत ☐

   (ग) पीबत ☐ (घ) चलत ☐

2. .... का खोदत है?

   (क) सरक-सरक ☐ (ख) हम जानत ☐

   (ग) ताक-झाँक ☐ (घ) खुदुर-खुदुर ☐

3. "आप कौन हैं, साहब?" उत्तर मिला—

   (क) धनु शाह ☐ (ख) धन्नु शाह ☐

   (ग) धनी शाह ☐ (घ) धन्नू शाह ☐

मिलान कीजिए

1. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को उनके क्रम से मिलाइए—

हमसे न बच सकत है।	6
खुदुर-खुदुर का खोदत है?	2
जानत हो हम देखत हैं।	1
सुरुर-सुरुर का पीबत है?	7
ताक-झाँक का खोजत है?	8
हम जानत का ढूँढ़त है!	3
धन्नू शाह, भाई धन्नू शाह!	4
सरक-सरक कहाँ भागत है?	5

2. रिक्त स्थानों में उपयुक्त पंक्ति लिखिए और चित्र बनाकर उनका मिलान कीजिए—

खुदुर-खुदुर का खोदत है?

सुरुर-सुरुर का पीबत है?

....

सरक-सरक कहाँ भागत है?

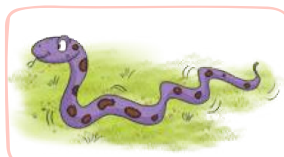

सोचिए और लिखिए

1. "अब मैं तुझे और बिठाकर नहीं खिला सकती।" मदन की माँ ने ऐसा क्यों कहा?
2. जब मदन ने महल का रास्ता पूछा तो धन्नू शाह ने ऐसा क्यों कहा कि अगर वह नहीं तो और कौन जानेगा?
3. कहानी में मदन की कविता को विचित्र कहा गया है। क्या आपको भी ऐसा ही लगता है? कारण सहित लिखिए।
4. राजा को मदन की कविता पहेली जैसी लगी। आपको यह कैसी लगी?

समझ और अनुभव

1. "सुरुर-सुरुर का पीबत है" पंक्ति में पीने के साथ 'सुरुर-सुरुर' शब्द का ही प्रयोग क्यों किया गया है?
2. राजदरबार में कवि-सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फियाँ पुरस्कार में मिलेंगी। सौ अशर्फियों से आप क्या समझते हैं?
3. "सरक-सरक कहाँ भागत है" पंक्ति में 'सरक-सरक' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? यहाँ 'सरक-सरक' का ही प्रयोग क्यों किया गया है?
4. "अब कोई चारा नहीं। बस राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।" ऐसा धन्नू शाह ने क्यों सोचा?

अनुमान और कल्पना

1. यदि मदन रोजगार की खोज में घर से बाहर नहीं निकलता तो क्या होता?
2. अपनी कल्पना और अनुमान से बताइए कि राजमहल कैसा होता होगा।
3. राजा के खजाने में क्या-क्या होता होगा और कितना-कितना होता होगा?

4. मदन की कविता से प्रसन्न होकर राजा ने उसे विदा करते समय क्या-क्या उपहार दिए होंगे?

5. राजा ने मदन को बहुत सारा धन दिया होगा। उसे यह सब कहाँ-कहाँ खर्च करना चाहिए?

क्रम संख्या	खर्च करने हेतु प्रस्तावित सुझाव	आपकी राय यदि कोई हो
1.	माँ के लिए कपड़े खरीदना	
2.	कुछ रुपये बैंक में जमा करना	
3.	....	
4.	....	
5.	....	

कहो कहानी, सुनो कहानी

कहानियाँ सुनना और सुनाना सभी को पसंद होता है। नीचे दिए गए निर्देशों के अनुसार कक्षा में 'कविता का कमाल' कहानी सुनाइए—

1. स्वयं को मदन की जगह रखकर यह कहानी अपनी मातृभाषा या अपनी पसंद की भाषा में सुनाइए।
2. मदन आपका मित्र है। मदन ने कुछ समय पहले आपको यह कहानी सुनाई थी। अब आप यह कहानी अपनी कक्षा में सुनाइए।

पाठ से आगे

1. साँप रेंगकर चलते हैं। रेंगकर चलने वाले जीव-जंतुओं की सूची बनाइए और कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. राजमहल में कवि-सम्मेलन की सूचना देने के लिए ढिंढोरा पीटा जा रहा था। आजकल ऐसी सूचनाएँ कैसे दी जाती हैं?
3. आपके विद्यालय में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आप इसकी सूचना कैसे देंगे?

मीडिया और आप

विजेता बनने के बाद मदन को मीडिया के प्रश्नों के उत्तर देने पड़े। अपने को मदन मानते हुए इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

मीडिया – कविसम्मेलन में पुरस्कार पाकर आपको कैसा लग रहा है?

मदन – ....

....

मीडिया – आप इस उपलब्धि का श्रेय किसे देना चाहेंगे?

मदन – ....

मीडिया – आपको राजदरबार में कविता सुनाकर कैसा लगा?

मदन – ....

मीडिया – आगे आपकी क्या योजनाएँ हैं?

मदन – ....

मीडिया – बहुत-बहुत धन्यवाद मदन जी।

मदन – ....

आपकी कविता

रजनी, मदन की कविता को गाते हुए विद्यालय जा रही थी। उसे बहुत आनंद आ रहा था। चलते-चलते अचानक उसे एक पेड़ पर कुछ बंदर दिखाई दिए। वे एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे। जब वह थोड़ा आगे बढ़ी तो उसे एक सियार दिखाई दिया। सियार 'हुआँ-हुआँ' कर रहा था। अब सियार को आधार बनाकर आप कविता को पूरा करने में रजनी की सहायता कीजिए।

डाल-डाल क्यों कूद रहा?
खों-खों-खों क्यों बोल रहा?
बंदर जी, भाई बंदर जी!
....
....
....
....

भाषा की बात

1. मुहावरे हमेशा एक विशेष अर्थ देते हैं जो उनके शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है। जैसे– 'फूला न समाना' मुहावरे का अर्थ है— अत्यधिक प्रसन्न होना।
वाक्य प्रयोग– विद्यालय की खेल प्रतियोगिता में पुरस्कृत होकर राजू फूला न समा रहा था।

अब आप अपनी लेखन-पुस्तिका में निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) मन में लड्डू फूटना (ख) मुँह ताकना

2. निम्नलिखित गद्यांश में कहीं-कहीं विराम चिह्नों का प्रयोग हुआ है। इस गद्यांश को उचित ठहराव के साथ पढ़िए।

उसे देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, "ताक-झाँक का खोजत है?" तीनों पंक्तियों को रटते हुए वह चलता गया। रटते-रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई, "हम जानत का ढूँढ़त है।"

3. नीचे लिखे वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाकर वाक्य पूरा कीजिए—

(क) क्या ताक झाँक कर रहे हो ....

(ख) अरे वाह क्या चौका मारा है ....

(ग) आइए राजा से मिलवाता हूँ ....

(घ) दादी देखते ही बोली कहाँ जा रहे हो ....

कलाकारी

ढोल, नगाड़ा या अन्य कोई वाद्ययंत्र बजाते हुए बोलिए, "सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि-सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फियाँ इनाम में मिलेंगी।" अब इस संवाद को अपनी मातृभाषा में हाव-भाव के साथ बोलिए।

आपकी सूझ-बूझ

एक व्यक्ति के घर के बाहर दस मीटर ऊँचा खजूर का एक पेड़ था। एक बंदर उस पर चढ़ने लगा। वह पेड़ की चोटी पर पहुँचना चाहता था। समस्या यह थी कि वह दिन के समय तो 5 मीटर चढ़ जाता था परंतु जब रात होती तो वह 4 मीटर नीचे फिसल जाता था। क्या आप बता सकते हैं कि बंदर पेड़ की चोटी पर पहुँचने में कितने दिन में सफल होगा?

11 शतरंज में मात

0431CH12

तेनाली रामकृष्ण (तेनालीरामन) विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय के दरबार में विदूषक एवं राज परामर्शदाता के रूप में जाने जाते थे। वे अपनी कुशाग्र बुद्धि और हास्य भरे वृत्तांतों के लिए प्रसिद्ध हैं।

पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने-अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीरामन के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी – देखा! अब तक नहीं आए तेनालीरामन।

दूसरा दरबारी – भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?

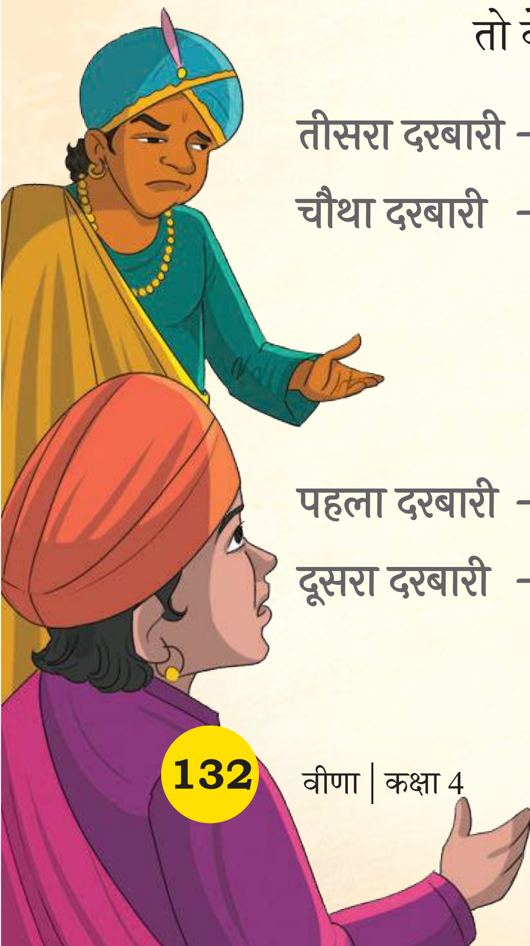

तीसरा दरबारी – महाराज ने भी बहुत सिर चढ़ाया है तेनाली को!

चौथा दरबारी – (*राजा की नकल करता है*) हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने... तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते-सुनते।

पहला दरबारी – महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।

दूसरा दरबारी – कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे एक नहीं चली।

चौथा दरबारी - कुछ युक्ति निकाली जाए!

(सब सोचते हैं।)

पहला दरबारी - *(चुटकी बजाते हुए)* निकाल लिया मैंने उपाय! सुनो! *(सब उसे घेर लेते हैं। आपस में खुसुर-फुसुर होती है। सब प्रसन्न दिखते हैं। तभी नगाड़े बजने लगते हैं।)*

एक सेवक - सावधान! महाराजाधिराज कृष्णदेव राय पधार रहे हैं।

राजा - *(बैठते ही)* तेनालीरामन कहाँ हैं?

पहला दरबारी - *(दर्शकों को देखते हुए)* लो, आते ही आ गई याद! *(राजा से)* अभी नहीं आए। लगता है शतरंज का खेल जमा है कहीं।

राजा - शतरंज? तेनालीरामन क्या शतरंज के शौकीन हैं?

दूसरा दरबारी - हाँ महाराज, वे तो अद्भुत खिलाड़ी हैं।

तीसरा दरबारी - पर महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

चौथा दरबारी - महाराज, आज्ञा हो तो मुकाबला आयोजित किया जाए। एक ओर आप, दूसरी ओर तेनालीरामन। तेनाली जी नहला तो आप भी तो दहला हैं।

राजा - *(प्रसन्न होकर)* क्या उत्तम सुझाव है! बराबर का खिलाड़ी मिले तभी खेल का आनंद आता है। यह तेनाली भी बड़ा चतुर निकला। मुझे बताया क्यों नहीं?

पहला दरबारी - वह आपकी हार नहीं देखना चाहता महाराज, इसलिए छिपाए रखा। पर वास्तव में बड़ा घाघ है तेनाली। एक से एक खिलाड़ियों को मात दे चुका है।

राजा - घाघ है तो हम भी कुछ कम नहीं। हो जाए दो-दो हाथ!

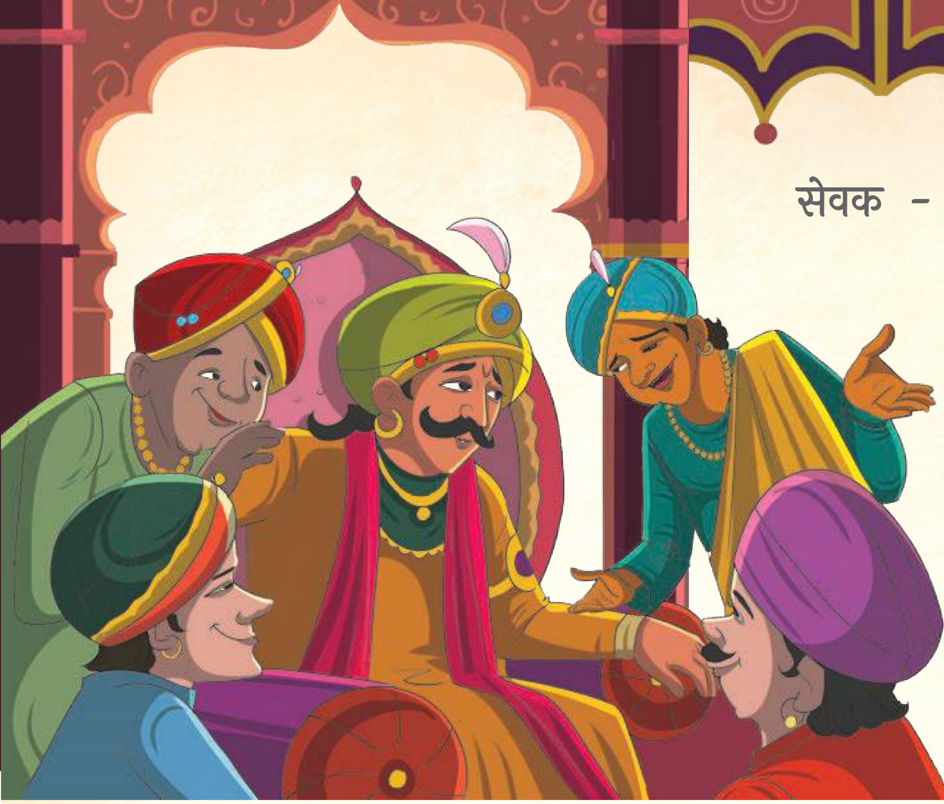

सेवक – श्री तेनालीरामन जी आ रहे हैं!

(तेनालीरामन का प्रवेश)

तेनाली – (*झुककर*) प्रणाम! महाराजाधिराज की जय हो!

(राजा मुँह फेरते हैं, तेनाली चौंकता है।)

तेनाली – इस तुच्छ सेवक का प्रणाम स्वीकार करें, महाराज।

राजा – (*क्रोधित*) तेनाली, तुमने बताया नहीं कि तुम शतरंज में माहिर हो?

तेनाली – (*चकित*) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता, महाराज।

राजा – (*क्रोधित*) मुझे सब पता है तेनाली। बात अब छिप नहीं सकती। (*दरबारियों से*) क्यों?

पहला दरबारी – हाँ महाराज, बड़े-बड़ों को मात दी है तेनाली ने।

तीसरा दरबारी – जरा बचके खेलिएगा, महाराज।

सब दरबारी – (*मुँह छिपाकर हँसते हुए*) क्या आनंद आ रहा है!

तेनाली – (*घबराकर*) पर...पर... मुझे वास्तव में शतरंज का ज्ञान नहीं महाराज... इस अनाड़ी के संग खेलकर आप पछताएँगे।

राजा – कोई बहाना नहीं चलेगा। (*सेवक से*) जाओ, व्यवस्था करो।

तेनाली	-	मैं नहीं खेलता शतरंज! *(सिर ठोकता है।)*
पहला दरबारी	-	तेनाली जी, क्यों अस्वीकार करते हैं?
दूसरा दरबारी	-	जब महाराज ने स्वयं न्योता दिया है।
तीसरा दरबारी	-	तेनाली जी, दाँव जरा सोचकर चलिएगा! *(सभी हँसकर तेनाली के असमंजस का आनंद लूटते हैं। तेनाली उन्हें देखता हुआ कुछ सोचता है।)*
तेनाली	-	(*दर्शकों से*) समझा! चाल चली है सबने। ठीक है!

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में चौकी, उस पर गद्दी। एक ओर तकिए से टिके राजा। सामने मुँह लटकाए तेनाली। बीच में शतरंज की चादर बिछी है। चारों ओर दरबारी और अन्य लोग बैठे हैं।)

दरबारीगण	-	(*दर्शकों से*) अब बरसेगा महाराज का क्रोध तेनाली पर!
राजा	-	हाँ भई तेनाली, खेल आरंभ हो?
तेनाली	-	(*मुँह लटकाए, धीरे से*) महाराज, आरंभ करें।
राजा	-	यह चला मैं पहली चाल। (*मोहरा उठाकर रखते हैं।*)
चौथा दरबारी	-	क्या चाल चली महाराज ने! (*ताली बजाता है।*)
तेनाली	-	(*सोच में*) अँऽऽ क्या चलूँ?
दूसरा दरबारी	-	पर हमारे तेनाली भी कुछ कम नहीं।
तेनाली	-	(*अपने आप से, एक मोहरा उठाते हुए*) चलो, इसको बढ़ाता हूँ।

राजा - (*दर्शकों से*) ऐंऽऽ? सबसे पहले मंत्री? अवश्य कोई गूढ़ चाल है। सोच-समझकर चलूँ।

तेनाली - (*दर्शकों से*) कुछ भी चलें, मुझे क्या? (*राजा से*) लीजिए, यह चला।

राजा - (*धीरे से*) यह क्या? चतुराई है या मूर्खता?

तेनाली - अब चला यह घोड़ा।

राजा - अरे, यह तो सरासर मूर्खता है। अवश्य जान-बूझकर हार रहा है। (*गरजकर*) तेनाली मन से खेलो!

पहला दरबारी - ठीक से खेल जमाओ, तभी महाराज को आनंद आएगा।

दूसरा दरबारी - महाराज को अनाड़ी नहीं, बराबरी का खिलाड़ी चाहिए।

चौथा दरबारी - आप कुशल खिलाड़ी हैं, जानकर मत हारिए।

तेनाली - अच्छा तमाशा बन रहा है मेरा।

राजा - (*समझाते हुए*) ठीक से खेलो! यह मत समझो कि मैं आसानी से हार जाऊँगा।

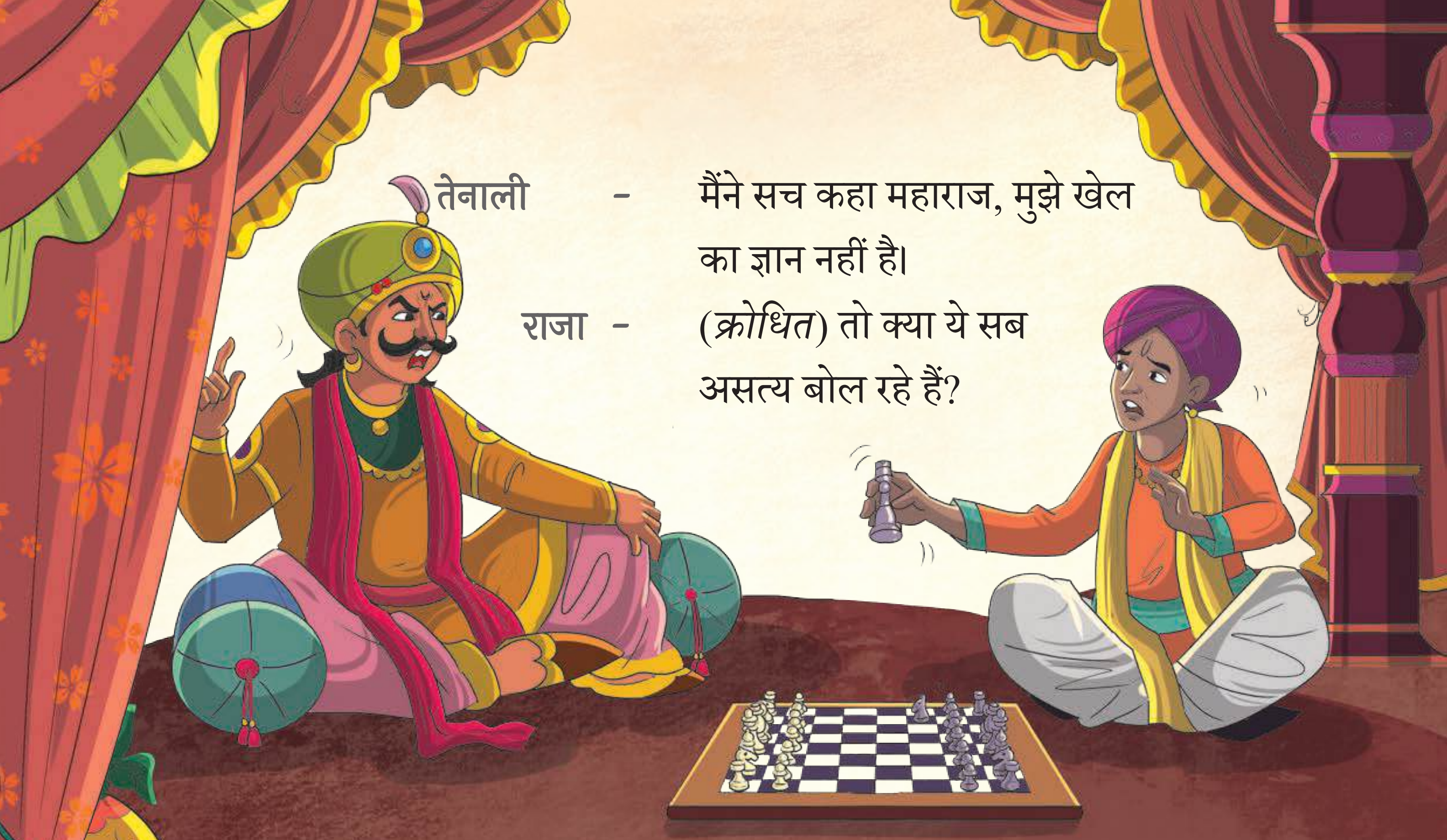

तेनाली - मैंने सच कहा महाराज, मुझे खेल का ज्ञान नहीं है।

राजा - (*क्रोधित*) तो क्या ये सब असत्य बोल रहे हैं?

सब दरबारी - हमने महाराज अपनी आँखों से इन्हें बाजी पर बाजी जीतते हुए देखा है।

राजा - सुना? यदि अब भी हारे तो अच्छा नहीं होगा।
(*तेनाली चाल चलता है।*)

राजा - (*गरजकर*) फिर अनाड़ी चाल! अपना सही रंग दिखाओ, खेल जमाओ!

तेनाली - जैसी आज्ञा! लीजिए, यह चलता हूँ।

राजा - उड़ गया न तुम्हारा प्यादा! (*क्रोधित*) फिर जानकर हारे तुम।

पहला दरबारी - महाराज अति चतुर हैं। उनका अपमान किया तो ठीक नहीं होगा तेनाली।

दूसरा दरबारी - (*भड़काते हुए*) महाराज का क्रोध भयंकर है तेनाली।

राजा - अबकी हारे तो भरी सभा में तुम्हारा सिर मुँडवा दूँगा। (*खेल आरंभ करते हुए*) यह रही मेरी चाल।

तेनाली - (*सिर खुजाते हुए*) मैंने इससे दिया उत्तर।

राजा - सँभल जाओ। यह हुई मेरी अगली चाल।

तेनाली - और यह है मेरा दाँव।

राजा - फँसाया न? मंत्री क्यों चले?

तेनाली - राजा के बचाव के लिए मंत्री बढ़ाया।

राजा - और यह गया तुम्हारा मंत्री।

तेनाली - अब आए स्वयं राजा।

राजा - गया तुम्हारा राजा। फिर पिट गए। इतनी मूर्खता? मुझे विश्वास नहीं रहा तुम पर तेनाली। (*उठ खड़े होते हैं, शतरंज उलट देते हैं, मोहरें उठाकर जोरों से फेंकते हैं।*) अच्छा खेल बनाया हमारा। (*दरबारियों से*) कल दरबार में नाई बुलाना। तेनाली के बाल उतरवाऊँगा। अपमान का बदला लूँगा। (*तमतमाया चेहरा लिए पाँव पटकते चल देते हैं।*)

पहला दरबारी - (*प्रसन्न होकर*) बन गई न बात!

तेनाली - (*मुँह छिपाए*) भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान?

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में ऊँचा मंच। राजा सिंहासन पर। तेनाली अपने आसन पर। एक सेवक नाई को खींचता हुआ लाता है।)

नाई - *(राजा के सामने गिरकर)* मैंने कुछ नहीं किया महाराज। मैं निर्दोष हूँ।

राजा - उठो, उठो! तुम्हें कोई दंड नहीं मिल रहा है।

नाई - *(प्रसन्न)* नहीं? फिर...?

राजा - अपना उस्तरा निकालो। मुंडन करना है।

नाई - मुंडन? तब तो इनाम भी अच्छा मिलेगा। फिर मुझे क्या? राज दरबार में केश उतारूँ या नदी किनारे, सब बराबर। *(पेटी खोल तैयारी करता है।)*

(तमाशा देखने के लिए उत्सुक दरबारी धीरे-धीरे मंच के निकट आते हैं।)

तेनाली - क्षमा करें महाराज।

राजा - क्षमा-वमा कुछ नहीं। वह तुम्हें पहले सोचना था जब मेरा अपमान किया। मंच पर चढ़ो।

(तेनाली मंच पर चढ़ता है।)

नाई - अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!

राजा - डरो मत, नाई। तुम आज्ञा का पालन करो।

नाई - जो आज्ञा, महाराज। *(उस्तरा लेकर तेनाली के पास जाता है।)*

तेनाली - महाराज, आज्ञा दें तो एक निवेदन करूँ।

दरबारीगण - *(आपस में)* अवश्य कोई नई चाल है।

राजा - कहो तेनाली।

तेनाली - महाराज, इन बालों पर मैंने पाँच हजार अशर्फियाँ उधार ली हैं। जब तक ऋण न चुका दूँ, केश कटवाने का कोई अधिकार नहीं मुझे।

सब दरबारी - देखा, की न धूर्तता!

राजा - शांत! दंड तो भुगतना पड़ेगा इनको। (*सोचकर, एक दरबारी से*) जाओ, अभी कोष से पाँच हजार अशर्फियाँ निकालकर इनके घर भिजवाओ। (*नाई से*) काम पूरा करो। देखना एक बाल भी न छूटे। (*दरबारी प्रसन्न। नाई फिर उस्तरा उठाता है।*)

तेनाली - (*रोककर*) क्षण भर भैया। (*आसन लगाकर मंच पर बैठ जाता है। आँखें मूँद, हाथ जोड़ मंत्रों का उच्चारण करता है।*) ओऽम् नमो शिवाय, ओऽम् नमो...

राजा - (*बीच में*) तेनाली, यह क्या?

दरबारी - (*आपस में*) एक नया ढोंग। हद है चतुराई की!

तेनाली - (*आँखें खोलकर शांति से समझाते हुए*) कृपया बीच में मत टोकें। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजा - पहेली मत बुझाओ। नाई, देरी क्यों? उस्तरा उठाओ।

तेनाली - मेरी बात सुनने का कष्ट करें, महाराज।

दरबारी - (*अधीर होकर*) महाराज, मत सुनिए। नाई, अपना काम करो। (*नाई फिर उस्तरा उठाता है। राजा रोकता है।*)

तेनाली - हमारे यहाँ माता-पिता के स्वर्ग सिधारने पर ही मुंडन होता है।

राजा - तुम्हारे माता-पिता स्वर्ग सिधार चुके हैं। फिर क्या आपत्ति?

तेनाली - महाराज अब आप ही मेरे माता-पिता हैं। आप सामने विराजमान हैं। फिर मुंडन कैसे कराऊँ? इधर मेरा मुंडन हो, उधर आप स्वर्ग सिधारें तो?

राजा - (*घबराकर*) अरे, यह कैसे हो सकता है!

तेनाली - आपके स्वर्ग सिधारने से पहले मैं मुंडन कराऊँ तो अवश्य आप पर विपत्ति आएगी। इसलिए प्रभु को याद कर रहा हूँ।

राजा - (*सोचते हुए*) मुंडन से पहले सच में मृत्यु आ गई तो? नहीं नहीं! रोक दो हाथ, नाई! तेनाली, दंड वापस लिया मैंने।

तेनाली – महाराज, आप दीर्घायु हों, आप महान हैं।

राजा – (*मुस्कराते हुए*) और तुम कुछ कम नहीं। तुमसे कौन जीत सकता है? अशर्फियाँ भी लीं और दंड-अपमान से भी बचे। पर मैं तुम्हारी चतुराई से एक बार फिर प्रसन्न हो गया। चलो, बाग में चलें।

(राजा सिंहासन से उतरकर तेनाली को साथ लिए बाहर निकल जाते हैं।)

पहला दरबारी – (*सिर ठोकते हुए*) फिर छूट गया तेनाली।

दूसरा दरबारी – (*ठप्प से गिरते हुए*) पाँच हजार अशर्फियाँ भी मार लीं।

तीसरा दरबारी – (*बाल नोचते हुए*) हम फिर हार गए।

सब दरबारी – हाय तेनाली! तुम्हारी बुद्धि ने हमें फिर मात दी।

(पर्दा गिरता है)

– रत्न सागर प्रकाशन से साभार

शिक्षण-संकेत – शिक्षक कक्षा में इस नाटक का मंचन कराएँ। यदि मंचन कराना संभव न हो तो विद्यार्थियों को अलग-अलग पात्र की भूमिका दें। विद्यार्थी अपने स्थान पर ही खड़े होकर उन पात्रों के संवाद बोल सकते हैं।

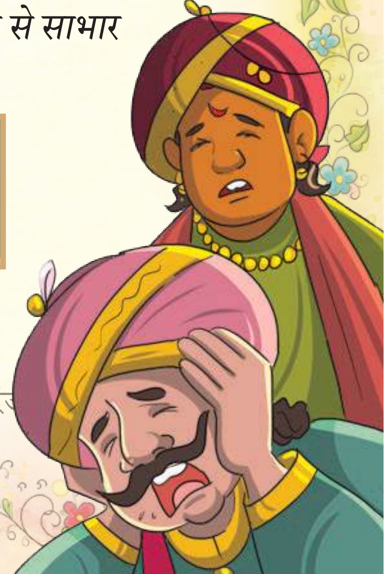

बातचीत के लिए

1. आपको यह नाटक कैसा लगा और क्यों?
2. आपने तेनालीरामन के किस्सों की तरह और किसके बुद्धिमानी के किस्से सुने हैं? उनमें से कोई एक सुनाइए।
3. तेनालीरामन की तरह क्या आपने भी कभी किसी कठिन परिस्थिति को संभाला है? यदि संभाला है तो कैसे?
4. यदि तेनालीरामन शतरंज का खेल जानते तो नाटक का अंत क्या होता?

सोचिए और लिखिए

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर दीजिए—

(क) सभी दरबारी तेनालीरामन से ईर्ष्या क्यों करते थे?

(ख) दरबारियों ने राजा से तेनालीरामन के बारे में क्या कहा?

(ग) शतरंज खेलते समय राजा को तेनालीरामन पर क्रोध क्यों आ रहा था?

(घ) तेनालीरामन ने मुंडन से बचने के लिए क्या चाल चली?

(ङ) घर में खेले जाने वाले खेलों में आपको सबसे अच्छा खेल कौन-सा लगता है? वह खेल कैसे खेला जाता है?

2. किसने, किससे कहा?

	किसने	किससे
(क) "शतरंज? क्या तेनालीरामन शतरंज के शौकीन हैं?"	....	....
(ख) "और यह है मेरा दाँव।"	....	....
(ग) "अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!"	....	....
(घ) "हाँ महाराज, बड़े-बड़ों को मात दी है तेनाली ने।"	....	....
(ङ) "उठो, उठो! तुम्हें कोई दंड नहीं मिल रहा है।"	....	....

भाषा की बात

1. दिए गए शब्दों का मिलान उनके समान अर्थ वाले शब्दों से कीजिए—

शब्द	अर्थ
प्रशंसा	हार
युक्ति	आमंत्रण
मात	कुशल
घाघ	बड़ाई
माहिर	चालाक
न्योता	उपाय

2. मटके में से उपयुक्त विशेषण चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

.... खिलाड़ी .... तेनाली

.... चाल .... आदमी

.... चाल .... अशर्फियाँ

3. हर संवाद किसी-न-किसी मनोभाव को अभिव्यक्त करता है। उदाहरण के लिए—

तेनाली – (*चकित*) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता, महाराज।

राजा – (*क्रोधित*) मुझे सब पता है तेनाली। बात अब छिप नहीं सकती।
(*दरबारियों से*) क्यों?

आप भी निम्नलिखित मनोभावों को संवाद के रूप में लिखिए—

प्रसन्न – मेरी खोई हुई पुस्तक मिल गई है!..

चकित – ....

शांत – ....

दुखी – ....

4. नीचे दी गई सूचना के आधार पर नए शब्दों का निर्माण कीजिए—

(क) आ

(ख) आ •• ______

(ग) आ •• ______ •• र

(घ) आ •• ______ •• म •• ______

(ङ) आ •• ______ •• श •• ______ •• क

(क) किसी को आने के लिए कहना
(ख) जाना का विपरीत अर्थ वाला शब्द
(ग) किसी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना
(घ) किसी व्यक्ति या वस्तु का आना या पहुँचना
(ङ) जो बहुत जरूरी हो

पाठ से आगे

1. शतरंज के प्रत्येक मोहरे की चाल अलग-अलग होती है। शतरंज के मोहरों की चाल पता कीजिए और लिखिए—

घोड़े की चाल ....

हाथी की चाल ....

मंत्री की चाल ....

राजा की चाल ....

ऊँट की चाल ....

प्यादे (सिपाही) की चाल ....

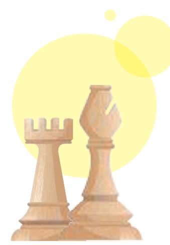

2. **चित्र के साथ खेल के नाम का मिलान कीजिए। साथ ही यह भी लिखिए कि आप की स्थानीय भाषा में इस खेल को क्या कहते हैं—**

खेल का नाम	खेल का चित्र	आपकी भाषा में नाम
लट्टू		....
साँप-सीढ़ी		....
राजा-मंत्री-चोर-सिपाही		....
गुट्टे	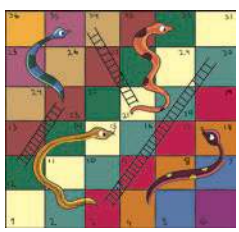	....
अष्टा-चक्कन	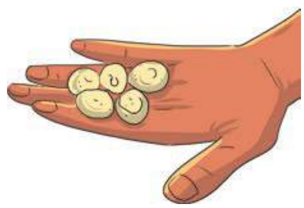	....

पुस्तकालय या अन्य स्रोत से

(क) तेनालीरामन के किस्सों की पुस्तक अपने पुस्तकालय या किसी अन्य स्रोत से लेकर पढ़िए।

(ख) 'तेनालीरामन के किस्से' नाम से मित्र-मंडली की एक बैठक आयोजित कर तेनालीरामन की बुद्धिमत्ता के किस्से सुनाइए।

शतरंज की भूल-भुलैया

केवल नाम वाले शब्दों (संज्ञा) को एक-दूसरे से मिलाते हुए मंत्री को राजा तक पहुँचाइए। ध्यान रहे कि आपको संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया को आपस में नहीं मिलाना है।

मंत्री	केरल	दस	वे	प्रभु	घोड़ा	उस
पहला	कृष्णदेव राय	मीठा	दूसरा	वीणा	शेर	हाथी
माता	तेनाली -रामन	हम	जहाज	महल	इस	बंदर
घर	पुस्तक	तुम	यमुना	मेरा	एक	सिपाही
मैं	आदमी	यह	नर्मदा	पीला	पढ़ना	पिता
आप	दरबार	पढ़ना	गंगा	नीला	लिखना	ऊँट
इस	अशर्फी	भवन	नदी	हमारा	मुझे	राजा

12 हमारा आदित्य

0431CH13

(कक्षा में अध्यापक का आगमन और सभी विद्यार्थियों द्वारा अभिवादन)

सभी विद्यार्थी – सुप्रभात अध्यापक जी!

अध्यापक – सुप्रभात बच्चो! पिछली कक्षा में हमने चाँद और चंद्रयान के बारे में जाना था। आज हम सूर्य के बारे में कुछ बातचीत करेंगे। क्या आप लोग जानते हैं कि सूर्य क्या है?

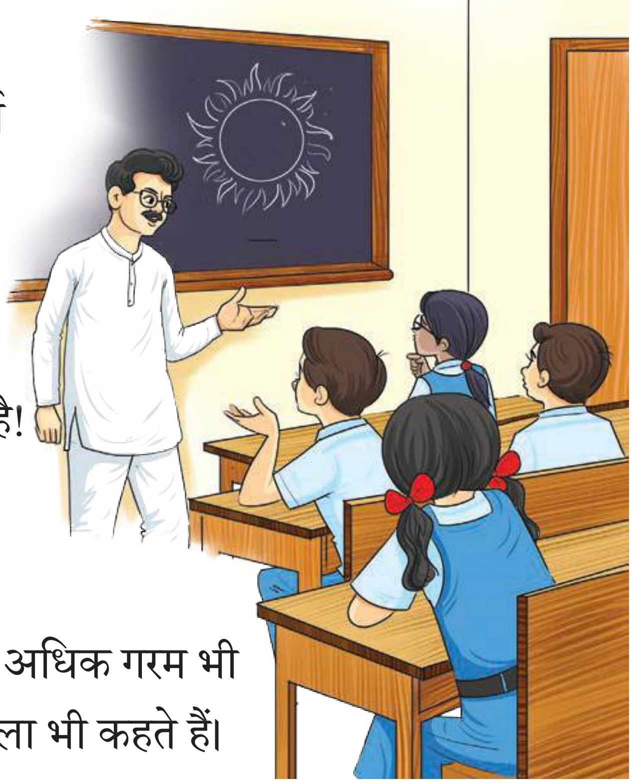

वाणी – अध्यापक जी! मैंने सुना है कि सूर्य सात घोड़ों के रथ पर आकाश में यात्रा करने वाला एक राजा है।

गौरव – हाँ, मैंने भी कुछ ऐसा ही सुना है।

राहुल – नहीं, सूर्य तो आग का एक गोला है!

सुमन – अध्यापक जी! सूरज एक ग्रह है।

रवि – नहीं, यह तो एक तारा है।

अध्यापक – उत्तम! सूर्य एक तारा है। यह बहुत अधिक गरम भी है, इसलिए इसे लोग आग का गोला भी कहते हैं।

सभी विद्यार्थी – (*आश्चर्य से*) जी अध्यापक जी, यह बहुत गरम होगा!

ज्योति – सूरज पृथ्वी से बहुत दूर है, फिर भी कितनी गरमी देता है!

भास्कर – मुझे गरमी के मौसम में सूर्य बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।

सुमन – मुझे भी। पर सर्दियों में तो धूप से उठने का मन ही नहीं करता। मेरी नानी तो पूरे दिन धूप में रहती हैं। उन्हें बहुत सर्दी लगती है न, इसलिए!

अध्यापक – सूर्य इतना गरम क्यों है? क्या आप सबने कभी यह सोचा है?

दिनेश – सूर्य पर हमेशा आग जलती रहती है, इसलिए।

रवि – अगर ऐसा है तो वहाँ आग किसने जलाई होगी?

धरा – आप दोनों ठीक नहीं सोच रहे हैं। सूर्य पर गरमी आग के जलने से नहीं होती बल्कि सूर्य ऐसी गैसों से बना है जो बहुत गरम होती हैं। मुझे मेरी मौसी ने एक बार बताया था।

अध्यापक – सही कहा! सूर्य मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम नाम की गैसों का एक विशाल गोला है।

साहिल – कितने बड़े नाम हैं! बोलने में भी कठिनाई हो रही है। हाई... ड्रजन... हेलम... (*कुछ विद्यार्थी हँसते हैं।*)

रवि – तो क्या हम चाँद की तरह सूर्य पर भी जा सकते हैं? (*अध्यापक की ओर अचरज से देखते हुए*)

सुमन – वहाँ कैसे जाएँगे? जो जाएगा, वह जल नहीं जाएगा!

दिनेश – सूर्य तो बहुत गरम होगा, बहुत अधिक! तभी तो वह चमकता रहता है। (*आँखें बड़ी करके कहते हुए*)

अध्यापक – हाँ, सूर्य तक पहुँचना आसान नहीं है। वह चंद्रमा की तरह हमारी पृथ्वी से पास नहीं है बल्कि बहुत दूर है। उसके भीतर हर समय आग जल रही है। वह कभी बुझती ही नहीं। जैसे चंद्रमा के रहस्य हैं, ठीक उसी प्रकार सूर्य के भी रहस्य हैं। इन्हीं रहस्यों का उद्घाटन करने के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य-एल 1 का निर्माण किया है।

कुछ विद्यार्थी – (*एक साथ कौतूहल से*) आदित्य-एल 1!

भास्कर – यह क्या है अध्यापक जी?

अध्यापक – आदित्य तुम ही तो हो। (*मुस्कुराते हुए*)

भास्कर – मैं कुछ समझा नहीं, अध्यापक जी।

अध्यापक – समझाता हूँ। आदित्य का अर्थ है — सूर्य। क्या आपको पता है, इसका एक अन्य नाम 'भास्कर' भी है। इसी तरह इस कक्षा में दो और आदित्य हैं। क्या आप लोग बता सकते हैं, मैं किनकी बात कर रहा हूँ?

राहुल – जी 'दिनेश' और 'रवि'।

अध्यापक – बहुत अच्छा! आइए, आज हम लोग आदित्य-एल 1 से मिलते हैं।

वाणी – अध्यापक जी! क्या यह चंद्रयान के प्रकार का ही तो नहीं है?

अध्यापक – हाँ, आदित्य-एल 1 चंद्रयान के प्रकार का ही एक यान है। इसका कार्य सूर्य के बारे में जानकारी जुटाना है, जैसे – यह किस समय कैसा होता है, इसके भीतर जलने वाली आग का ताप कितना है, इस ताप का प्रभाव आस-पास कैसा होता है या इसका प्रभाव हमारी पृथ्वी पर भी पड़ता है अथवा नहीं...।

पूर्वा – क्या यह सूर्य पर पहुँच गया है?

अध्यापक – सूर्य पर तो नहीं किंतु सूर्य से पर्याप्त दूरी पर रुककर इसने सूर्य के कुछ अद्भुत चित्र भेजे हैं जिन्हें यदि आप लोग देखेंगे तो देखते ही रह जाएँगे।

सुमन – अध्यापक जी, फिर भी यह सूर्य के पर्याप्त पास पहुँचकर चित्र कैसे भेज रहा है? उसकी इतनी गरमी से जल नहीं रहा?

अध्यापक – नहीं, सूर्य से आदित्य-एल 1 को कोई हानि नहीं पहुँच सकती क्योंकि यह एक सुरक्षित दूरी पर स्थित है और वह अपने स्थान से समय-समय पर उसके विभिन्न चित्र लेता रहता है।

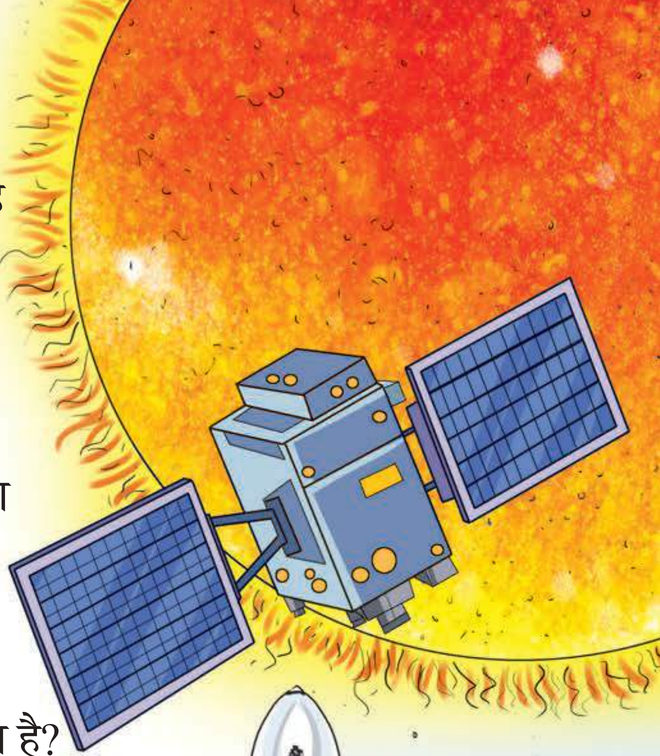

भास्कर – यह तो एक अनन्य प्रकार का यंत्र है जो अपने को जलने भी नहीं दे रहा और इतने गरम सूर्य के चित्र भी ले रहा है!

ज्योति – आदित्य-एल 1 में 'एल 1' का क्या अर्थ है?

अध्यापक – एल 1 का अर्थ है – लगरांज 1...।

रवि – अध्यापक जी! लगरांज 1 क्या होता है?

अध्यापक – एल 1 अर्थात् लगरांज 1 बिंदु अंतरिक्ष का एक विशिष्ट स्थान होता है जो सूर्य और पृथ्वी के केंद्रों को जोड़ने वाली रेखा पर होता है। इस बिंदु पर सूर्य और पृथ्वी की आकर्षण शक्तियाँ इस प्रकार संतुलित होती हैं कि इस स्थान पर प्रक्षिप्त कोई भी वस्तु पृथ्वी के साथ-साथ ही सूर्य की परिक्रमा करती जाती है। हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य अंतरिक्ष यान को इसी बिंदु पर प्रक्षिप्त कर दिया है जहाँ से वह सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ सूर्य के चित्र खींचता रहता है।

दीपक – अध्यापक जी, यह तो आपने बहुत ही रोचक बात बताई परंतु इस 'लगरांज' शब्द का क्या अर्थ है?

अध्यापक – वास्तव में 'लगरांज' 18वीं सदी में इटली का एक गणितज्ञ था जिसने इस विशिष्ट बिंदु के विषय में बताया था। इसीलिए इस बिंदु को उसके नाम से जाना जाता है। उसने इस प्रकार के चार और बिंदुओं का पता लगाया था, इसलिए इन पाँच बिंदुओं को एल 1, 2, 3, 4, 5 – इन पाँच नामों से जाना जाता है।

सुमन – अच्छा, अब मैं समझ गई कि क्यों 'आदित्य' के नाम के अंत में एल 1 लगाया गया है। पर यह अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में कब भेजा गया था?

अध्यापक – आदित्य-एल 1 का प्रक्षेपण 2 सितंबर 2023 को हमारे देश के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने किया था। लगरांज बिंदु पर स्थित यह अंतरिक्ष यान लगभग 5 वर्ष तक सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ उसके विभिन्न चित्र खींचता रहेगा जिनका अध्ययन करके हमारे वैज्ञानिक सूर्य के रहस्यों का पता लगाएँगे।

दीपक – बहुत अच्छा अध्यापक जी, इतनी मनोरंजक बातें सुनकर मुझे बहुत कौतूहल हो रहा है कि सूर्य कैसा दिखता होगा। आदित्य-एल 1 ने जो चित्र खींचे हैं, वे बहुत अच्छे होंगे। मैंने आज तक सूर्य का चित्र नहीं देखा।

अन्य विद्यार्थी – हमने भी नहीं देखा।

रफ़त – चाँद का देखा है... पृथ्वी का देखा है... चंद्रयान का देखा है... अपने बचपन का चित्र देखा है पर सूरज का तो मैंने कभी नहीं देखा।

दिनेश – मैंने तो अपने माता-पिता के बचपन के चित्र भी देखे हैं पर सूर्य का भी चित्र होता है, मुझे तो पता ही नहीं था। पिताजी ने सूर्य की ओर देखने के लिए मना किया है।

अध्यापक – सही कहा आपके पिताजी ने। सूर्य को कभी भी प्रत्यक्ष देखने का प्रयास मत करना बच्चो। यह आँखों के लिए ठीक भी नहीं है लेकिन आदित्य-एल 1 ने आप सभी की यह इच्छा सुन ली है। इसने सूर्य के ग्यारह रंगों के चित्र भेजे हैं जो देखने में बहुत सुंदर हैं। मैं उनका रंगीन चित्र भी आप सबके लिए लाया हूँ। (*अध्यापक कक्षा में टैब/मोबाइल पर भिन्न-भिन्न समय पर लिए गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र दिखाते हैं।*)

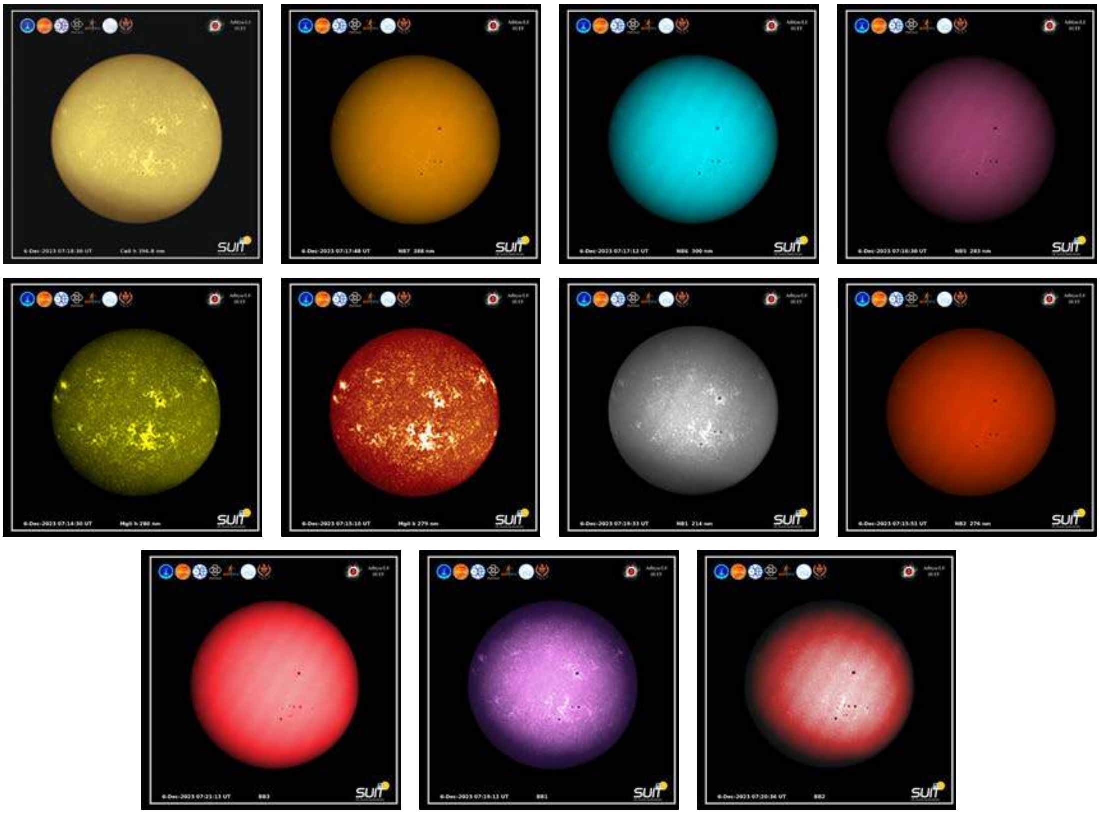

आदित्य-एल 1 द्वारा भेजे गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र (इसरो से साभार)

सिल्विया – ये तो सचमुच बहुत अद्भुत चित्र हैं। आदित्य यान इतने अच्छे चित्र लेता है, यह एक चमत्कार-सा लगता है। अध्यापक जी, चित्र लेने के अतिरिक्त आदित्य-एल 1 और क्या-क्या करेगा?

अध्यापक – बहुत अच्छा प्रश्न पूछा। सूर्य पर गैसों की टकराहट से बहुत विशाल विस्फोट होते हैं। इनसे बहुत सारी ऊर्जा निकलती है। जैसे धरती पर

आँधियाँ आती रहती हैं, वैसे ही सूर्य की ऊर्जा से भी आती रहती हैं। सूर्य पर आने वाली आँधियों और उससे पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों के विषय में आदित्य-एल 1 में लगे उपकरणों द्वारा हमें जानकारी मिलेगी।

कुछ विद्यार्थी – यह तो सचमुच बहुत अच्छा यंत्र है। (*कक्षा में बातचीत होने लगती है।*)

दीपक – अध्यापक जी, मुझे तो ये सब अद्भुत बातें जानकर बहुत आनंद आ रहा है। मैं तो बड़ा होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगा और दूर-दूर के तारों के विषय में पढ़ूँगा और वहाँ अंतरिक्ष यान भेजूँगा।

सुमन – अध्यापक जी, मैं भी बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनूँगी। मुझे आज के पाठ में बहुत आनंद आया। मैं तो ऐसा अंतरिक्ष यान बनाऊँगी जिसमें बैठकर मैं एल 1 बिंदु से सूर्य को स्वयं जाकर देख सकूँ।

अन्य विद्यार्थी – हम भी ऐसा ही अंतरिक्ष यान बनाएँगे!

अध्यापक – आप सब लोग बड़े मेधावी हैं। आप बहुत अच्छे वैज्ञानिक बनेंगे, मुझे पूरा विश्वास है। पर बच्चो, अपने अंतरिक्ष यान में मुझे ले जाना मत भूलना।

बातचीत के लिए

1. आपने आकाश में अनेक तारे देखे होंगे। ऐसा कौन-सा तारा है जो हमें सुबह-सुबह जगाने का काम करता है? हमें इस तारे से कौन-से लाभ होते हैं?
2. भारत में मनाए जाने वाले ऐसे त्योहारों या मेलों के बारे में अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए जिनका संबंध सूर्य अथवा चंद्रमा से है।
3. आपने कक्षा तीन की पाठ्यपुस्तक 'वीणा, भाग 1' में चंद्रयान पर पाठ पढ़ा है न! अपने सहपाठियों को चंद्रयान के बारे में कुछ याद करके बताइए।
4. चंद्रयान-3 की सफलता के बाद सूर्य का अध्ययन करने वाले यान आदित्य-एल 1 के विषय में आपने जो भी सुना, पढ़ा या देखा है, बताइए।

5. नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि—

(क) इसमें क्या दिखाया गया है?

(ख) क्या आपने इसे कभी देखा है? इसमें कितने रंग होते हैं? अपनी लेखन-पुस्तिका में उन रंगों के नाम क्रम से लिखिए।

(ग) आकाश में ऐसा कब और कैसे होता है?

पाठ के भीतर

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सूर्य का चित्र ( ) बनाइए। यहाँ एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं।

1. सूरज मुख्य रूप से किन गैसों का एक विशाल गोला है?

(क) हाइड्रोजन (ख) नाइट्रोजन

(ग) ऑक्सीजन (घ) हीलियम

2. राहुल के अनुसार सूर्य एक गोला है—

(क) रुई का (ख) ऊन का

(ग) आग का (घ) बर्फ का

3. आदित्य-एल 1 ने सूर्य के कितने रंगों के चित्र भेजे हैं?

(क) आठ (ख) सात

(ग) दस (घ) ग्यारह

4. आदित्य-एल 1 मिशन का कार्य कौन-सी जानकारी जुटाना है?

(क) सूर्य किस समय कैसा होता है

(ख) सूर्य के भीतर जलने वाली आग का ताप कैसा है

(ग) चाँद के रहस्य जुटाना

(घ) सूर्य के ताप का प्रभाव कैसा होता है

सोचिए और लिखिए

1. पाठ से बनी समझ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य-एल 1 का निर्माण क्यों किया?

(ख) "आदित्य-एल 1 चंद्रयान के प्रकार का ही एक यान है।" अध्यापक ने ऐसा अपने विद्यार्थियों से क्यों कहा?

(ग) आदित्य-एल 1 में 'एल 1' क्या है और उसका क्या कार्य है?

(घ) "अध्यापक जी! मैंने सुना है कि सूर्य सात घोड़ों के रथ पर आकाश में यात्रा करने वाला एक राजा है।" वाणी ने अध्यापक से ऐसा क्यों कहा होगा?

(ङ) निम्नलिखित वाक्यों में नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

ओर | भी | ही | और | बहुत

i. हम .... बड़े होकर वैज्ञानिक बनेंगे।

ii. रवि अध्यापक की .... अचरज से देखता है।

iii. आदित्य-एल 1 ने सूर्य के कुछ अद्‌भुत चित्र भेजे हैं, उन्हें यदि आप लोग देखेंगे तो देखते .... रह जाएँगे।

iv. भारत के ओडिशा के पुरी जिले में सूर्य देवता का एक .... सुंदर मंदिर बना हुआ है।

v. अध्यापक ने भास्कर से कहा कि इस कक्षा में दो .... आदित्य हैं।

2. 'आदित्य' का अर्थ सूर्य होता है। इसी प्रकार आदित्य के कुछ नाम आप भी खोजकर लिखिए। नीचे एक नाम दिया गया है, शेष नाम आप लिखिए—

....

........दिनेश........ ....

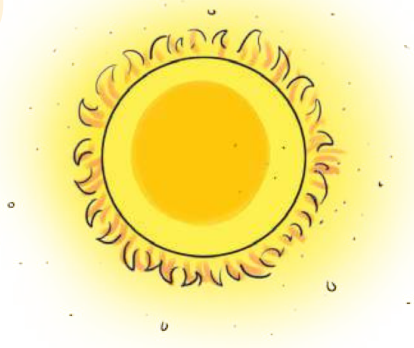

....

....

....

अनुमान और कल्पना

1. **कल्पना कीजिए कि आप वैज्ञानिक बन गए हैं और आपको सूर्य के रहस्य जानने के लिए भेजा जा रहा है, आप**

   (क) सूर्य की गरमी से बचने के लिए किस तरह की व्यवस्था करेंगे?

   (ख) सूर्य से जुड़े कौन-से रहस्यों को खोजने का प्रयास करेंगे?

2. **यदि आपको विद्यालय में आदित्य-एल 1 के वैज्ञानिकों से मिलने का एक अवसर मिलता है तो आप उनसे कौन-से प्रश्न पूछना चाहेंगे? कोई चार प्रश्न लिखिए—**

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

   (घ) ....

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए—**

   ,   !   ?   ।

   (क) यदि ऐसा है तो वहाँ आग किसने जलाई होगी ....

   (ख) अध्यापक जी .... लगरांज 1 क्या होता है ....

   (ग) अच्छा .... तभी इसका नाम आदित्य-एल 1 रखा गया है ....

   (घ) जी, अध्यापक जी .... यह बहुत गरम है ....

2. **शब्द-पिटारा में दिए गए शब्दों को नीचे दिए गए उनके संबंधित परिवार में लिखिए—**

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण
........आदित्य........	........मुझे........	........गरम........
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

3. पाठ में आए 'प्रभाव', 'अभियान', 'विशाल', 'सुप्रभात' शब्दों में 'प्र', 'अभि', 'वि' और 'सु' शब्दांश उपसर्ग का कार्य कर रहे हैं तथा 'भाव', 'यान', 'शाल' एवं 'प्रभात' मूल शब्द हैं।

स → सरस, सचित्र

उपर्युक्त उदाहरण में 'स' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए दो नवीन शब्द बनाए गए हैं। आप इसी प्रकार निम्नलिखित उपसर्गों की सहायता से दो-दो शब्द बनाइए—

प्र → ...., ...

अभि → ...., ...

वि → ...., ...

सु → ...., ...

4. पाठ में आया 'अध्यापक' शब्द पुल्लिंग है तथा 'नानी' शब्द स्त्रीलिंग है। इसके अतिरिक्त पाठ में आए अन्य कोई दो-दो पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द खोजकर नीचे लिखिए—

पुल्लिंग शब्द	स्त्रीलिंग शब्द
....	....
....	....

5. **नीचे दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द वर्ग पहेली में से ढूँढ़कर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए—**

अं	पा	स	
ध		क	म
का	न	या	
र		छो	टा

(क) बहुत – ....

वाक्य – ....

(ख) पुराना – ....

वाक्य – ....

(ग) प्रकाश – ....

वाक्य – ....

(घ) दूर – ....

वाक्य – ....

(ङ) बड़ा – ....

वाक्य – ....

6. **पाठ में 'सूर्य' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस शब्द के अनेक नाम आपने पढ़े और सुने होंगे। इस शब्द का प्रयोग अलग-अलग प्रकार से होता है, जैसे—**

- 'सूर्य' की किरणों से हमें विटामिन डी मिलता है।

  इस वाक्य में 'सूर्य' एक तारा है।

- 'सूर्य' हमारी कक्षा में पढ़ता है।

  इस वाक्य में 'सूर्य' एक विद्यार्थी है।

अब 'जल' तथा 'कर' शब्दों से जुड़े अलग-अलग अर्थों वाले वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

आदित्य-एल 1 और सूर्य की भेंट

यहाँ पर आदित्य-एल 1 और सूर्य के बीच बातचीत हो रही है। आप इस बातचीत को आगे बढ़ाइए—

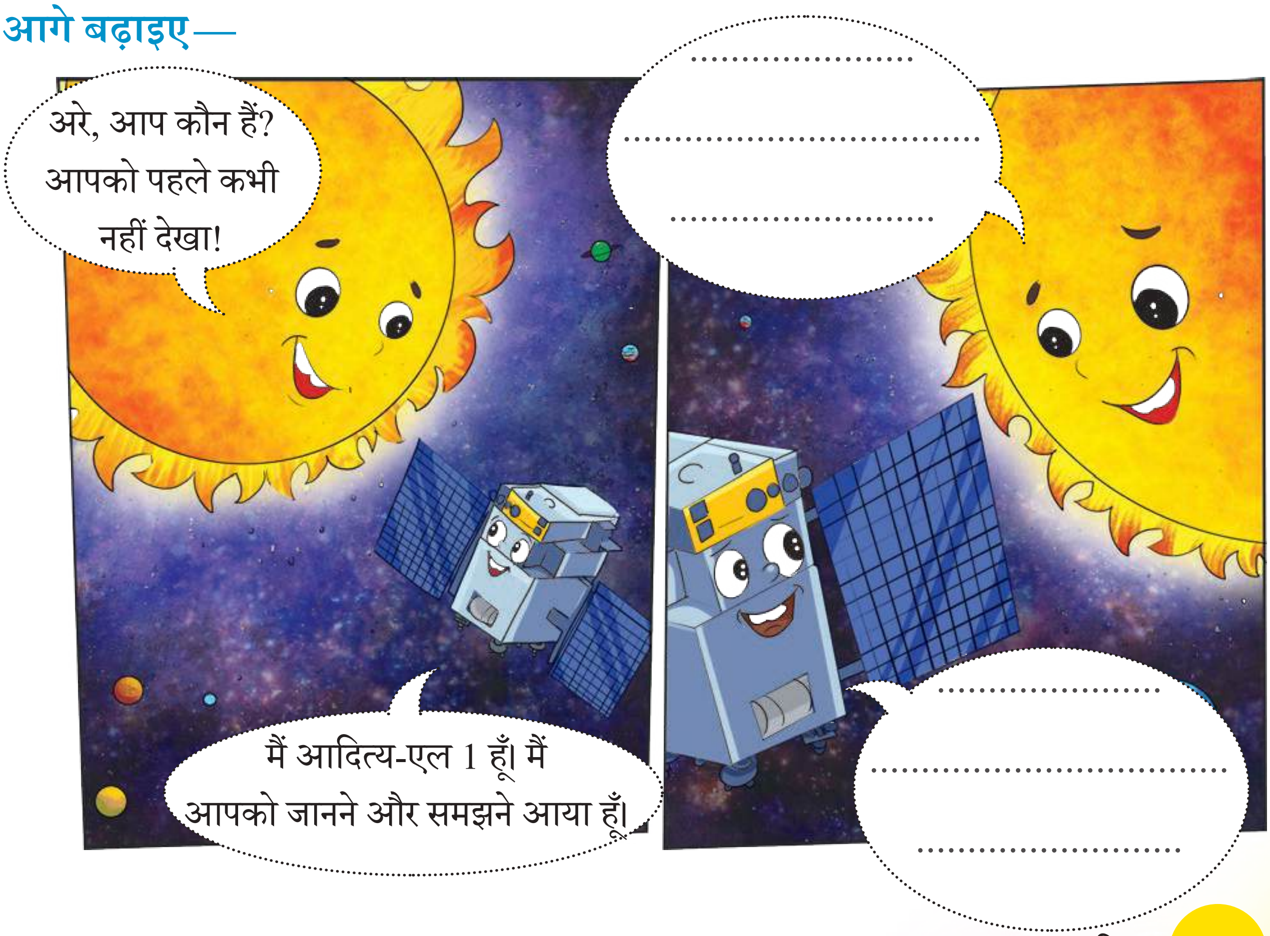

पाठ से आगे

1. इस चित्र में क्या दिखाया गया है? अपने घर या आस-पड़ोस में आपने कभी किसी को ऐसा करते देखा है? कक्षा में अपने-अपने अनुभव साझा कीजिए।
2. सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने से शरीर को कौन-से लाभ होते हैं? सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

3. दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए। यह चित्र सौर ऊर्जा का है। सौर ऊर्जा, सूर्य के प्रकाश से प्राप्त अक्षय (जो समाप्त नहीं होती) ऊर्जा है। शिक्षक के दिशा-निर्देश में कक्षा को चार समूहों में विभाजित कीजिए। सौर ऊर्जा के बारे में जानकारी प्राप्त कर कक्षा में चार्ट पेपर पर प्रस्तुत कीजिए।

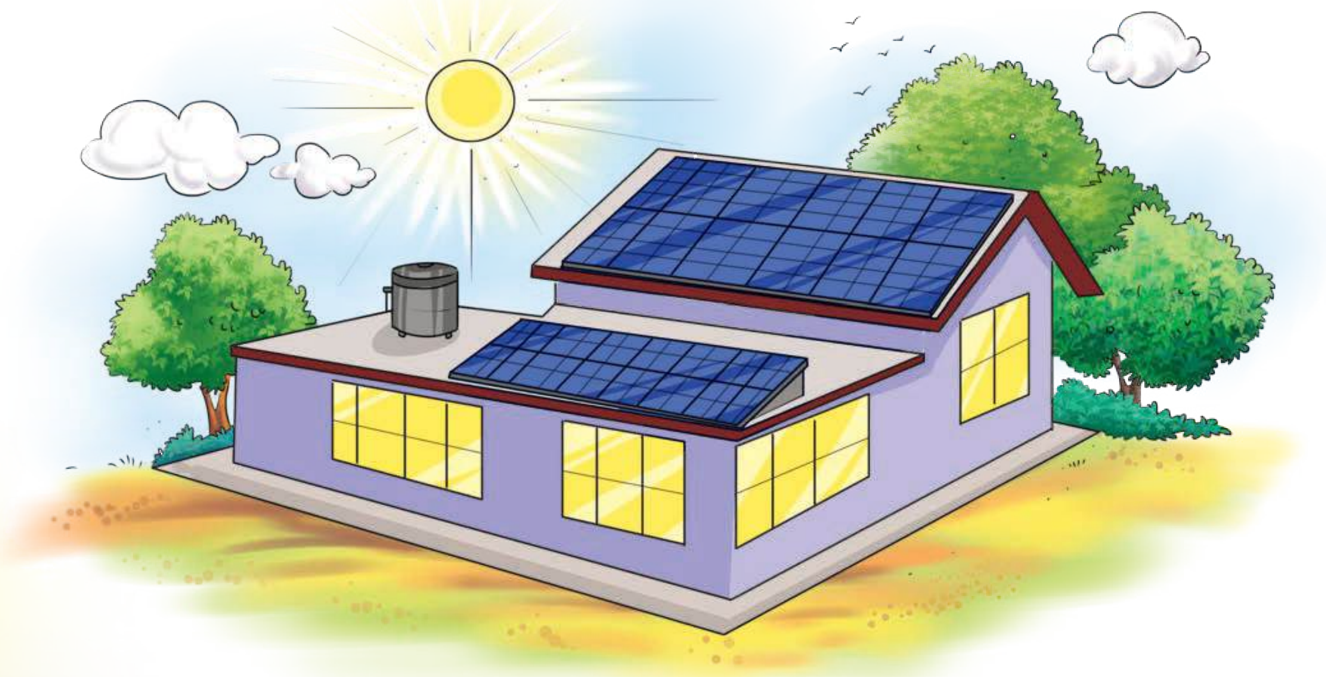

4. दिए गए चित्र को ध्यान से देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

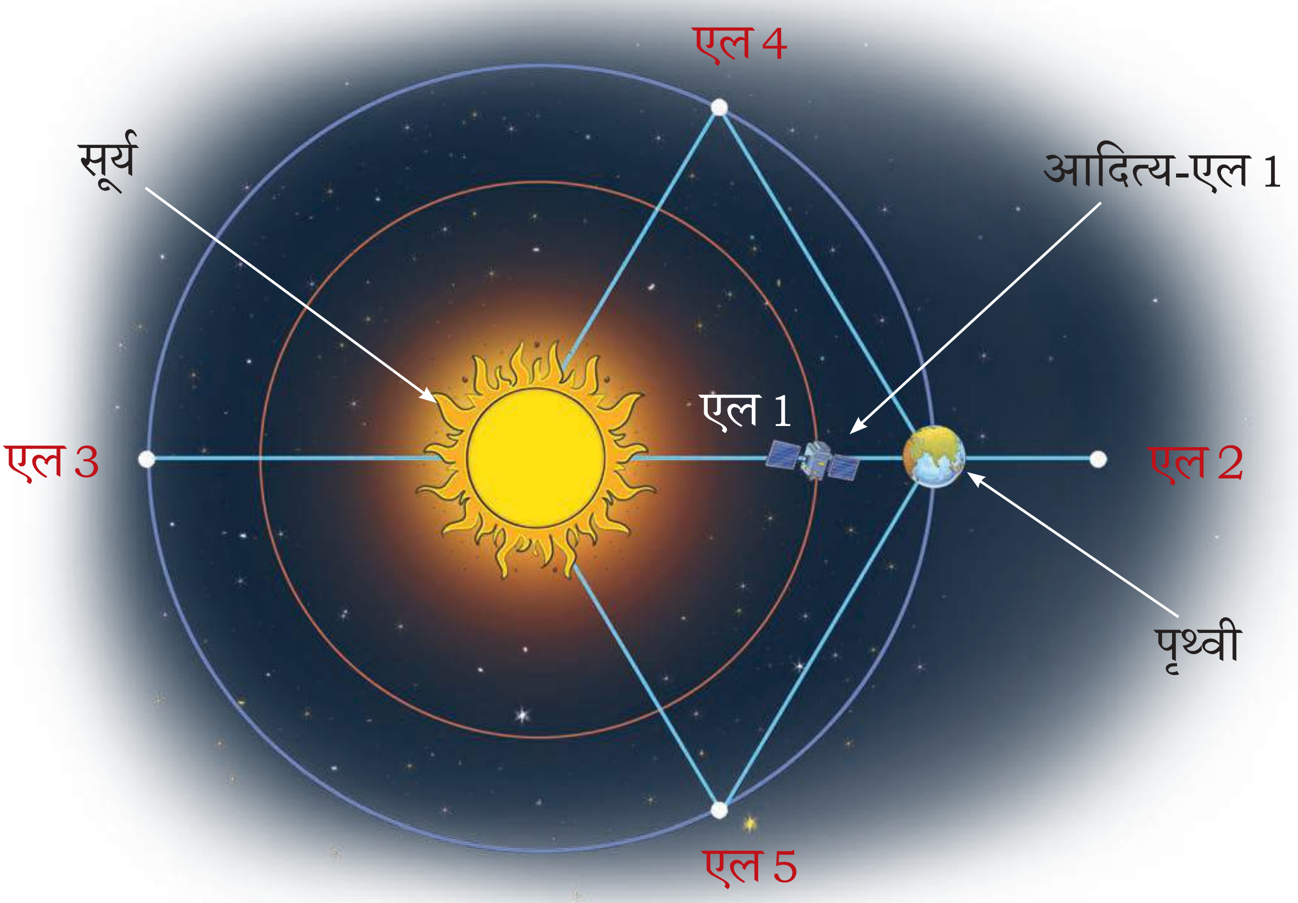

(क) इस चित्र में पाँच लगरांज बिंदु दिखाए गए हैं। आपके विचार से हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य यान के स्थापन के लिए एल 1 बिंदु को क्यों चुना होगा?

(ख) चित्र देखकर बताइए कि कौन-कौन से लगरांज बिंदु पृथ्वी की कक्षा (ऑर्बिट) पर हैं?

पुस्तकालय या अन्य स्रोत से

1. विद्यालय के पुस्तकालय से सूर्य के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. सूर्यग्रहण क्यों लगता है? इस अवसर पर कहाँ-कहाँ मेले लगते हैं? इस विषय में अपने विद्यालय के पुस्तकालय, अभिभावकों और अन्य स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सहपाठियों से साझा कीजिए।

मेरी चित्रकारी

भविष्य में जब आप वैज्ञानिक बनकर किसी ग्रह की यात्रा करेंगे तो आपका यान कैसा होगा? उसका एक चित्र अपनी कल्पना से तैयार कीजिए और उसमें रंग भरिए—

हम सब सुमन एक उपवन के

हम सब सुमन एक उपवन के।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्मे हम,
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।
पले हुए हैं झूल-झूलकर
पलनों में हम एक पवन के।

सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं,
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।
मिले एक-से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन के।

रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग है क्यारी-क्यारी,
लेकिन हम सबसे मिलकर ही
है उपवन की शोभा सारी।
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के।

काँटों में खिलकर हम सबने
हँस-हँसकर है जीना सीखा,
एक सूत्र में बँधकर हमने
हार गले का बनना सीखा।
सबके लिए सुगंध हमारी
हम शृंगार धनी-निर्धन के।

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

सड़क सुरक्षा

जेब्रा क्रासिंग सड़क पर पैदल चलने वाले यात्रियों के सुरक्षित तरीके से रोड पार करने हेतु होता है। हमेशा जेब्रा क्रासिंग पर चलकर रोड पार करना चाहिए। जेब्रा क्रासिंग काले एवं सफेद रंग की पट्टी होती है जो चौक के चारों तरफ पैदल यात्रियों के सुरक्षित रोड पार करने हेतु बनायी गयी होती है।

यदि सड़क पर जेब्रा क्रासिंग ना हो तो सड़क पार करते समय दाँये बाँये देखें और मोटर गाड़ी न आने पर ही रोड पार करें।

छोटे बच्चों को अकेले सड़क पार नहीं करना चाहिए। हमेशा अपने बड़ों का हाथ पकड़ कर ही रोड पार करना चाहिए।

लाल बत्ती जलने पर ही जेब्रा क्रासिंग से सड़क पार करें।

उत्तर दो

खाली स्थान भरो :

प्रश्न 01. जेब्रा क्रासिंग ....के सुरक्षित सड़क पार करने हेतु होता है।

प्रश्न 02. जेब्रा क्रासिंग ....रंग की पट्टी होती है।

प्रश्न 03. बच्चों को हमेशा ....रोड पार करना चाहिए।

प्रश्न 04. सड़क पार करते समय हमेशा .... देख कर पार करना चाहिए।

संस्कृत
वासराः

रविवासरः — रविवार

32UF75

सोमवासरः — सोमवार

मङ्गलवासरः (भौमवासरः) — मङ्गलवार

बुधवासरः — बुधवार

गुरुवासरः (बृहस्पतिवासरः) — गुरूवार

शुक्रवासरः (भार्गववारः) — शुक्रवार

शनिवासरः (शनैश्चरवारः) — शनिवार

शरीरस्य अङ्गानि

334B8S

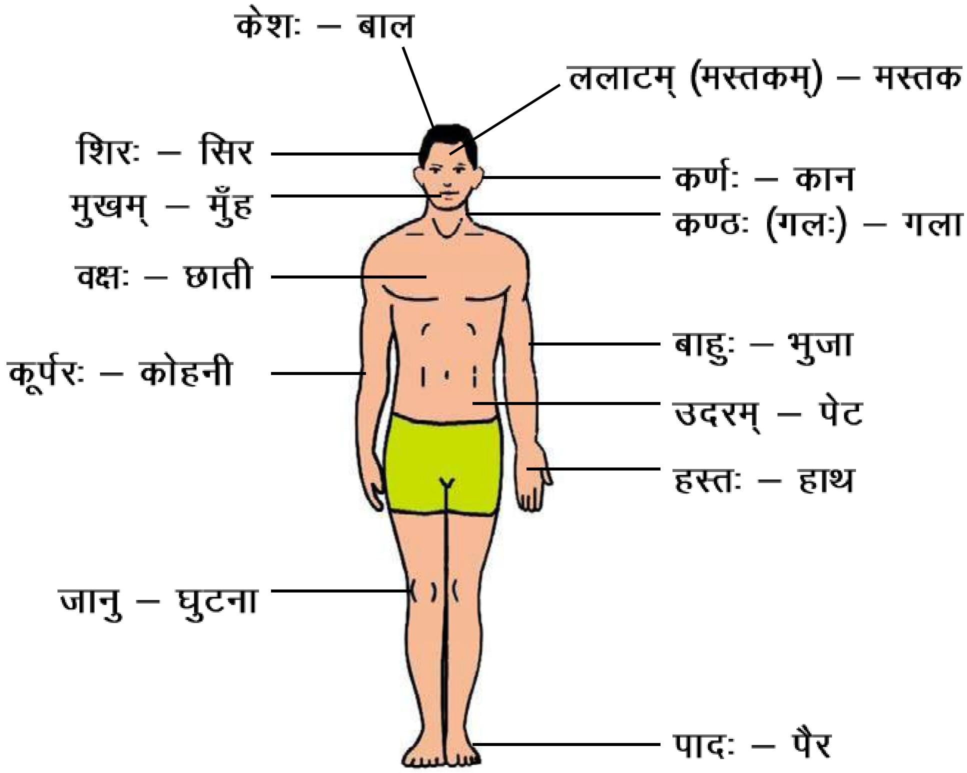

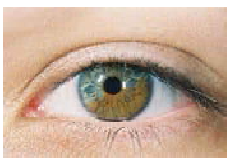

नेत्रम् –आँख

नासिका – नाक

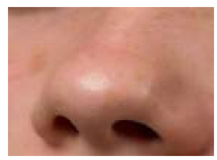

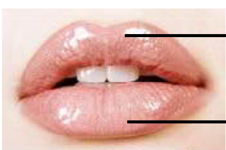

ओष्ठः–ऊपर का ओठ

अधरः–नीचे का ओठ

जिह्वा – जीभ

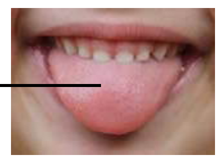

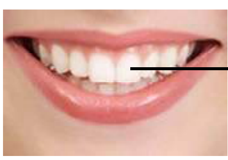

दन्तः – दाँत

मुष्टिः – मुट्ठी

मणिबन्धः–कलाई

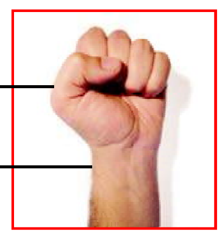

पशवः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
धेनुः (गौः) 33D7AF	–	गाय	
गजः (हस्ती)	–	हाथी	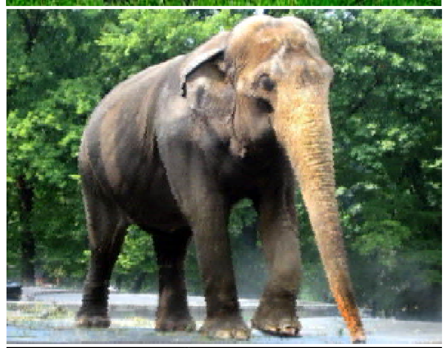
वानरः (कपिः)	–	बन्दर	
मार्जारः (बिडालः)	–	बिलाव	
शुनकः (कुक्कुरः)	–	कुत्ता	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
अश्वः (घोटकः)	–	घोड़ा	
अजा (बर्करी)	–	बकरी	
सिंहः	–	सिंह	
गर्दभः	–	गधा	
उष्ट्रः	–	ऊँट	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
व्याघ्रः	–	बाघ	
मूषकः	–	चूहा	
भल्लूकः	–	भालू	
महिषः	–	भैंसा	
शृगालः (क्रोष्ठा)	–	सियार	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
हरिणः	–	हिरण	
वृषभः	–	बैल	
शशः (शशकः)	–	खरगोश	
नकुलः	–	नेवला	
कूर्मः	–	कछुआ	

गृहवस्तूनां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
गृहम्	–	घर	
द्वारम्	–	द्वार	
वातायनम् (गवाक्ष:)	–	खिड़की	
व्यजनम्	–	पंखा	
आसन्द:	–	कुर्सी	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सुखासन्दः	–	सोफा	
कटः	–	चटाई	
उत्पीठिका	–	टेबल	
साटिका	–	साड़ी	
करवस्त्रम्	–	रूमाल	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
पादकोशः	–	मोजा	
पादत्राणम्	–	चप्पल	
धौतवस्त्रम्	–	धोती	
पर्यङ्कः	–	पलङ्ग	
कर्तरी	–	कैंची	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
विद्युद्दीपः	–	बिजली का बल्ब	
स्यूतः	–	थैला	
घटीयन्त्रम्	–	घड़ी	
पुस्तकम्	–	पुस्तक	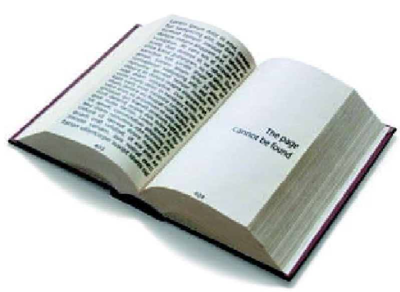
लेखनी (कलमः)	–	कलम	

समयाः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
एकवादनम्	–	एक बजे	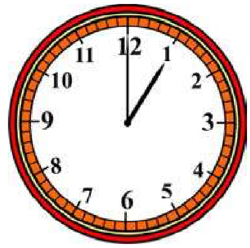
द्विवादनम्	–	दो बजे	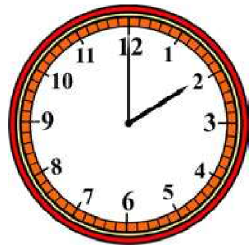
पञ्चवादनम्	–	पांच बजे	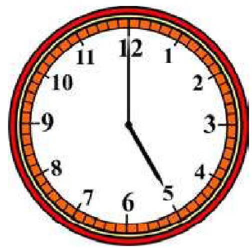
अष्टवादनम्	–	आठ बजे	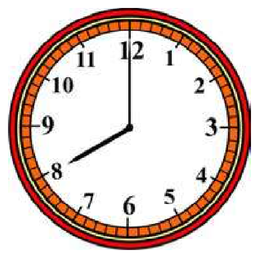
दशवादनम्	–	दस बजे	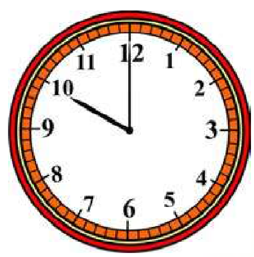

33VYDQ

संस्कृत		हिंदी	चित्र
द्वादशवादनम्	–	बारह बजे	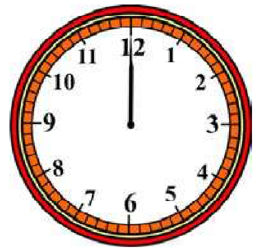
सार्धसप्तवादनम्	–	साढ़े सात बजे (7.30)	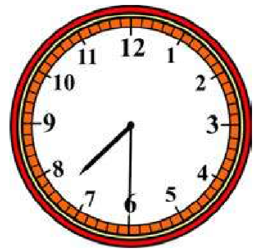
सपादपञ्चवादनम्	–	सवा पाँच बजे (5.15)	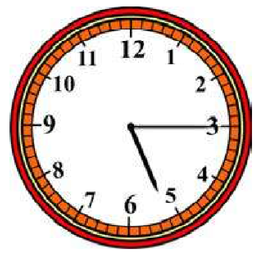
पादोननववादनम्	–	पौने नौ बजे (8.45)	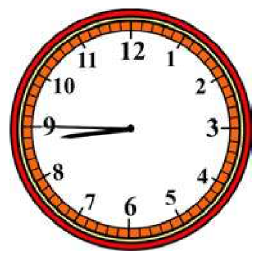

विशेषः–

1) पाद का अर्थ 1/4 भाग होता है
2) स = सहित और 'उन' का अर्थ होता है कम।
3) पांच बजे में सपाद अर्थात 1/4 भाग सहित/अधिक है।
4) नव बजे में उन अर्थात कम, पादोन में 1/4 भाग कम है।